ओ३म्

परोपकारिणी

पाक्षिक

परोपकारी

ऋग्वेद
यजुर्वेद
सामवेद
अथर्ववेद

वर्ष - ५७ अंक - १९ महर्षि दयानन्द की स्थानापन्न परोपकारिणी सभा का मुखपत्र अक्टूबर (प्रथम) २०१५

महर्षि दयानन्द सरस्वती

स्वतन्त्रता के लिए संघर्ष करता हुआ देश

महर्षि दयानन्द सरस्वती की
उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा
का मुख पत्र

वर्ष : ५७ **अंक** : १९
दयानन्दाब्द: १९१
विक्रम संवत्: आश्विन कृष्ण, २०७२
कलि संवत्: ५११६
सृष्टि संवत्: १,९६,०८,५३,११६

सम्पादक
प्रो. धर्मवीर

प्रकाशक-परोपकारिणी सभा,
केसरगंज, अजमेर- ३०५००१
दूरभाष: ०१४५-२४६०१६४

मुद्रक-श्री मोहनलाल तँवर
वैदिक यन्त्रालय, अजमेर।
दूरभाष : ०१४५-२४६०८३१

-परोपकारी का शुल्क-

भारत में

वार्षिक-२०० रु., **द्विवार्षिक**-३९० रु., **त्रिवार्षिक**-५८० रु., **आजीवन**-(=१५ वर्ष)-२००० रु.।

विदेश में

वार्षिक-५० यू.के. पाउण्ड/८० यू.एस. डालर, **द्विवार्षिक**-९५ पा./१५२ डा., **त्रिवार्षिक**-१४० पा./२२५ डा., **आजीवन**-(=१५ वर्ष)-५०० पा./८०० डा.।

वैदिक पुस्तकालय : ०१४५-२४६०१२०
ऋषि उद्यान : ०१४५-२६२१२७०

लेख में प्रकट किए विचारों के लिए सम्पादक उत्तरदायी नहीं है। किसी भी विवाद की परिस्थिति में न्यायक्षेत्र अजमेर ही होगा।

ओ३म्

विद्याविलासमनसो धृतशीलशिक्षा:,
सत्यव्रता रहितमानमलापहारा:।
संसारदु:खदलनेन सुभूषिता ये,
धन्या नरा विहितकर्म परोपकारा:।।

RNI. No. ३९५९ / ५९

परोपकारी

अक्टूबर प्रथम २०१५

अनुक्रम

१. तिब्बत की दासता अहिंसक होने का..	सम्पादकीय	०४
२. कुछ तड़प-कुछ झड़प	राजेन्द्र जिज्ञासु	१५
३. अमर हुतात्मा श्रद्धेय भक्त फूल सिंह	चन्दराम आर्य	२२
४. वैदिक पुस्तकालय के प्रकाशन		२६
५. पुस्तक-समीक्षा		२८
६. पाठकों की प्रतिक्रिया		२९
७. वैदिक देवता पृथ्वी : मूर्तिपूजा की...	देवर्षि कलानाथ	३२
८. जिज्ञासा समाधान-९६	आचार्य सोमदेव	३६
९. संस्था-समाचार		३८
१०. स्तुता मया वरदा वेदमाता-१९		४१
११. आर्यजगत् के समाचार		४२

www.paropkarinisabha.com
email : psabhaa@gmail.com

- उपनिषद्, दर्शन, प्रवचन आदि सुनने हेतु बटन दबाएं -
www.paropkarinisabha.com → Daily Pravachan

तिब्बत की दासता
अहिंसक होने का दण्ड

एक दिन चीनी गणराज्य ने अपने आपको राजशाही से मुक्त कर साम्यवादी शासन घोषित कर दिया। साम्यवाद की विचारधारा ने भले ही इंग्लैण्ड में जन्म लिया हो परन्तु विचारधरा फलित हुई चीन और रूस में। चीन ने १९४९ में साम्यवादी शासन का प्रारम्भ किया। पूंजीवाद के विरोध में संसार का सबसे मुखर स्वर बन कर उभरा। साम्यवादी आक्रमकता ने सभी देशों में पुरानी परम्परा और संस्कृति को नष्ट कर साम्यवाद के झण्डे के नीचे लाना अपना कर्त्तव्य माना। चीन ने अपनी विस्तारवादी नीति के माध्यम से पड़ोसी देशों पर बलपूर्वक अधिकार करना प्रारम्भ किया।

चीन ने १९४७ के बाद अपना विस्तार करते हुए ७ अक्टूबर १९५० में ४० हजार चीनी सैनिकों के साथ तिब्बत पर आक्रमण कर दिया। यह आक्रमण तीन ओर से किया गया। तिब्बत एक शान्तिपूर्ण देश था। जहाँ दलाई लामा सन्त का शासन था। छ: हजार सैनिकों की छोटी-सी सेना थी, जो की विशाल चीनी से परास्त हो गई और उसने चीनी सेना के सामने आत्म समर्पण कर दिया। २३ मई १९५१ को तिब्बती सरकार ने बीजिंग में चीनी सरकार से शान्तिवार्ता की और १७ सूत्री अनुबन्ध पर हस्ताक्षर कर दिये और तिब्बत ने अपनी दासता का पट्टा लिख दिया। चीन ने इस को तिब्बत की शान्तिपूर्ण मुक्ति बताते हुए तिब्बत के चीन में विलय की घोषणा कर दी। इस प्रकार चीनी आक्रमणकारी तिब्बत के मार्ग से भारत की सीमा पर पहुँच गये।

यह समय भारत की स्वतन्त्रता का समय था। भारत की सरकार एक ऐसे व्यक्ति के नेतृत्व में थी, जिसमें एक साहित्यकार की योग्यता तो थी परन्तु राष्ट्रवादी राजनीतिज्ञ की दृष्टि का अभाव था। जो समझता था भारत ने अहिंसा के मार्ग से स्वतन्त्रता प्राप्त की है। जो सेना को व्यर्थ मानता था। संसार में शान्ति और सह अस्तित्व की बात करता था और चीन को अपना मानकर पंचशील के सिद्धान्त का पालन करने के लिये तत्पर था और हिन्दी-चीनी भाई-भाई के नारों से देश गुंजा रहा था। तिब्बत में दमन हो रहा था, भारत में चाऊ एन लाई जिन्दाबाद का घोष गूंज रहा था। हमारी सरकार और प्रधानमन्त्री ने अपने पैरों पर स्वयं कुठाराघात करते हुए चीन के इस कदम को उचित बताया और तिब्बत को चीन का भाग स्वीकार किया। पं. नेहरू के इस कदम का गृहमन्त्री सरदार पटेल ने विरोध किया था। पटेल ने कहा था- यह चीन का कार्य अनुचित और एक देश की स्वतन्त्रता का अपहरण है परन्तु पं. नेहरू ने अपने को अन्तर्राष्ट्रीय व्यक्तित्व बनाने की धुन में पटेल की बात को अनसुना कर दिया। पटेल ने अपने जीवन के अन्तिम भाषण में भी इस भय की चर्चा की थी। तिब्बत पर चीन का समर्थन करना एक आत्मघाती कदम था। ऐसा करना न केवल तिब्बत के लिये हानिकर था अपितु एक शक्तिशाली शत्रु को अपने घर पर निमन्त्रण देने जैसा था, पटेल की भविष्यवाणी सच हुई। परिणामस्वरूप भारत को १९६२ के युद्ध में पराजय का मुख देखना पड़ा और हजारों वर्गमील भूमि भी गंवानी पड़ी।

इस युद्ध से पूर्व में अनेक राजनीतिक समझ रखने वाले नेताओं ने पं. नेहरू को समझाने का यत्न किया कि चीन की कुदृष्टि तिब्बत के बाद भारत पर है परन्तु पं. नेहरू ने इन बातों की उपेक्षा की समाजवादी नेता और प्रखर राजनीतिज्ञ राम मनोहर लोहिया ने अपने लेखों अपने और व्यक्तव्यों द्वारा भारत सरकार को चेताया था- चीन तिब्बत में जो कुछ कर रहा है, उससे तिब्बत की तो हानि है ही परन्तु भारत का भविष्य संकटमय हो रहा है। लोहिया ने तिब्बत में बनाई जा रही सड़कों, नदियों पर बन रहे, बांधों की चर्चा की थी परन्तु पं. नेहरू ने किसी की न सुनी और न मानी।

जब चीन ने भारत पर आक्रमण करके विशाल भारतीय भूमि पर आक्रमण कर दिया तब भारत की संसद में प्रश्न उठाया गया कि चीन ने भारत की सीमा में घुसकर भारत के विशाल भूभाग पर अधिकार कर लिया है तब प्रधानमन्त्री ने संसद में कहा था- वह भूमि तो बंजर है। वहाँ तिनका भी नहीं उगता, उस समय संसद सदस्य महावीर त्यागी ने पं. नेहरू को उत्तर देते हुए अपनी टोपी सिर से उतार कर कहा था- क्या मेरे सिर पर बाल नहीं उगते तो क्या इसे दूसरे को दे दूँ।

चीनी आक्रमण से पहले तिब्बत भारत के लिये घर

आंगन जैसा था। लोहिया ने लिखा था- तिब्बत की डाक व्यवस्था भारत के पास थी। चीनी आक्रमण के बाद हमने अपने कर्मचारियों को वहाँ से बुला लिया। तिब्बत का भारतीय सम्बन्ध सृष्टि के आदिकाल से रहा है। ब्राह्मण ग्रन्थों के अनुसार सृष्टि के प्रारम्भ में जल से जो भू भाग ऊपर आया वह तिब्बत ही था। प्राणी जगत् और मानव की सृष्टि का आदि स्थान तिब्बत ही है। तिब्बत को भारतीय ग्रन्थों में त्रिविष्टप् नाम से जाना जाता है। ऋषि दयानन्द ने अपने ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश में लिखा है, आर्य बाहर से नहीं आये हैं। सर्वप्रथम तिब्बत में सृष्टि का प्रारम्भ हुआ। वहाँ से प्रथम भारत में आकर बसने वाले आर्य मूल भारतीय हैं, विदेशी नहीं। तिब्बत संसार का सबसे ऊँचा पठार है, इसी कारण इसे संसार की छत कहा जाता है। तिब्बत में जहाँ हिमाच्छादित बड़े शिखर हैं, वहाँ पत्थरों के पहाड़ के साथ घने जंगल हैं। एशिया खण्ड की चार बड़ी नदियों का तिब्बत उद्‌गम स्थान है। इन चार प्रमुख नदियों के नाम हैं- ब्रह्मपुत्र, सिन्धु, मीकांग और मछु। प्रथम दो नदियाँ भारत के पूर्व-पश्चिम में प्रवाहित होती हैं, जो भारत के जल संसाधन का बड़ा स्रोत हैं। इसके अतिरिक्त सैंकड़ों छोटी-बड़ी नदियाँ तिब्बत से होकर भारत की ओर आती हैं। तिब्बत का विशाल मानसरोवर भारतीय संस्कृति की आस्था का केन्द्र है। हिमालय से निकलने वाली सभी नदियों का यह उद्‌गम स्थल है। भारत का प्राण कहे जाने वाले ये स्रोत तिब्बत की दासता के कारण भारत के शत्रु के हाथ में चल गये हैं। आज मोदी सरकार को मानसरोवर जाने के लिए चीन की सरकार से मार्ग की याचना करनी पड़ रही है। सारे तिब्बत के संसाधनों के साथ जल स्रोतों का दोहन चीन अपने पक्ष में कर रहा है। वर्षों से समाचार आ रहे हैं, ब्रह्मपुत्र नदी पर बड़े बांध बनाकर चीन ने नदी का स्रोत चीन की ओर कर लियाा है।

तिब्बत की दासता का परिणाम है-चीन और पाकिस्तान की मैत्री। इसी आक्रमण के कारण पाकिस्तान ने कश्मीर का भूभाग चीन को दे दिया और चीन ने बड़ी सड़कों का निर्माण करके पाकिस्तानी बन्दरगाह तक अपनी पहुँच बना ली। सीमा पर हमारी सेना का बड़ा भाग पाकिस्तान और चीन के आक्रमण को रोकने में लगता है, यह हमारी अदूरदर्शिता पूर्ण तिब्बत नीति का परिणाम है। रक्षामन्त्री जार्ज फर्नान्डीज ने भारतीय संसद में कहा था- पाकिस्तान से भी अधिक खतरा भारत को चीन से है। हम ने तिब्बत पर चीन आक्रमण का समर्थन न किया होता तो न चीन हमारे दरवाजे पर होता न चीन को पाकिस्तान की निकटता का ऐसा अवसर मिलता।

चीन तिब्बत को लेकर ही सन्तुष्ट नहीं है वह पूरे हिमालय क्षेत्र पर अपना अधिकार जताता है। चीन का कहना है- तिब्बत उसकी हथेली है, उससे लगे भारतीय भू-भाग हाथ की अंगुलियाँ हैं, हाथ मेरा है तो अंगुलिया भी मेरी ही हैं। वह भारत के सिक्किम को अपना भाग मानता है, वहाँ के लोगों को चीन में जाने के लिए वीजा की आवश्यकता नहीं मानता। भारत सरकार के मन्त्री प्रधानमन्त्री की सिक्कम यात्रा पर वह आपत्ति करता है। सिक्किम में भारत सरकार द्वारा किये जाने वाले कार्यों को अवैध और चीनी अधिकार क्षेत्र में हस्तक्षेप बताता है। वर्तमान प्रधानमन्त्री नरेन्द्र मोदी ने चीन को लेकर सीमा पर कठोर दृष्टिकोण अपनाया है जिससे कुछ सुधार की सम्भावना बनी है परन्तु हानि तो बहुत हो चुकी है।

तिब्बत पर चीनी आक्रमण और अधिकार वह भारत के लिये घातक है, वहीं मानवता के लिये तिब्बत की जनता के साथ घोर अन्याय है। दासता का भारत ने सैंकड़ों वर्षों तक अनुभव किया है। विगत साठ वर्षों से चीन तिब्बत में वे सब अत्याचार कर रहा है, जो एक क्रूर शासक अपने आधीन के साथ कर सकता है। चीन तिब्बत में विकास के नाम पर तिब्बत में सड़कों का जाल बिछा रहा है, दुर्गम पहाड़ियों पर रेल पहुँचाने का काम चल रहा है। यह कार्य कोई तिब्बती जनता के लिये नहीं किये जा रहे हैं अपितु भारत की सीमा पर सेना की पहुँच के लिये तथा विदेशों से व्यापार की सुविधा के लिये आवागमन को सरल बनाया जा रहा है। जैसे हमारे देश में अंग्रेज सरकार ने रेल व सड़क का निर्माण भारतीय जनता की सुविधा के लिए नहीं किया था, उसने भी सेना को युद्ध क्षेत्र तक पहुँचाने और सामान को बन्दरगाहों तक भेजने के लिए सड़क और रेल का जाल बिछाया था, भोली-भाली जनता समझती है, अंग्रेज सरकार ने भारत का बड़ा विकास किया है और भारतीयों का कितना उपकार किया है। जब कोई देश दूसरे देश पर अधिकार करता है तो वह वहाँ के चिह्न मिटाने का प्रयास करता है। उस देश के अस्तित्व को मिटाता है। इसमें वहाँ की भाषा, शिक्षा, वेशभूषा, भोजन, संस्कृति, परम्परा इन सबको नष्ट करने का काम प्रत्येक शासक अपने आधीन देश के साथ करता है। जो तिब्बत

तीन भागों में विभक्त था, उसे चीन ने प्रशासनिक सुविधा के लिये छ: भागों में बाँट दिया और तिब्बत में वहाँ के धर्म को समाप्त किया, वहाँ चीनी भाषा को शिक्षा का माध्यम बनाया। तिब्बत की प्राचीन भाषा, लिपि, शिक्षा, शिक्षण सबको प्रतिबन्धित कर दिया। अलगाववाद क्षेत्रवाद के संघर्ष का बीजारोपण किया। तिब्बतियों को तिब्बत में द्वितीय श्रेणी का नागरिक बना दिया। वहाँ के छ: हजार से अधिक मठ-मन्दिरों का विनाश कर दिया, सम्पत्ति लूट ली गई। मठ जला दिये गये। भिक्षु, भिक्षुणियों को मार दिया गया या बन्दी बना लिया गया। तिब्बत के भाग को परमाणु परीक्षण का स्थल बनाकर परमाणु कचरे का ढेर बना दिया। किसी भी देश को कितना भी पद दलित किया जाये परन्तु वहाँ की आत्मा प्रतिक्रिया करती है। तिब्बती जनता ने भी चीनी अत्याचारों के विरोध में आन्दोलन किये हैं। सामूहिक रूप से विरोध प्रदर्शन किया है। एक सौ के लगभग तिब्बतियों ने चीनी अत्याचारों के विरोध में आत्मदाह किया है, बलिदान हुए हैं। चीनी सरकार का विरोध तिब्बती जनता में निरन्तर चल रहा है। अभी तक साड़े बारह लाख तिब्बती चीनी अत्याचारों के कारण मृत्यु के ग्रास बन चुके हैं। आज तिब्बतियों से अधिक संख्या तिब्बत में चीनियों की है, जहाँ तिब्बत में साठ लाख तिब्बती हैं, वहाँ पिचहत्तर लाख चीनियों को चीन सरकार ने लाकर बसा दिया है और तिब्बती नागरिक अपने देश में अल्पसंख्यक होने के लिये विवश हैं।

यह एक दुर्योग है जब हम स्वतन्त्रता की वर्षगाँठ मनाते हैं तभी तिब्बत अपनी दासता की अवधि पर आँसू बहाता है।

आज इस तिब्बत के स्वतन्त्रता संग्राम में भारतीयों द्वारा समर्थन किया जाना चाहिए। यह एक राष्ट्रहित के साथ अन्तर्राष्ट्रीय और मानवीय कर्त्तव्य है।

जैसी स्वतन्त्रता की बात का समर्थन फिलीस्तीन आदि के लिए करते हैं, उसी प्रकार भारत सरकार को तिब्बत की स्वतन्त्रता का समर्थन करना चाहिए।

तिब्बत की निर्वासित सरकार का केन्द्र भारत में है। तिब्बत की सरकार और उसकी संसद के अधिवेशन हिमाचल प्रदेश के मेक्डोलगंज में होते हैं। यहाँ तिब्बत के वैध शासक दलाई लामा का स्थान है। जहाँ से वे निर्वासित सरकार का संचालन करते हैं। उनका स्वराज्य के लिये मन्त्र है- **यते महि स्वाराज्ये।**

दासता के ६६ वर्ष
तिब्बत की दासता की व्यथा कथा
निर्वासित सरकार के शब्दों में

तिब्बत परिचय:- तिब्बत सामान्यत: 'विश्व की छत' के रूप में जाना जाता है। भारत के दो तिहाई आकार से अधिक यह पश्चिम से पूर्व तक २,५०० किलोमीटर तक फैला हुआ है। इस समय विश्व भर में लगभग ६० लाख तिब्बती हैं।

यह ऊँची बर्फ से ढ़की चोटियों से शुरु होकर पथरीली पहाड़ियों और जंगलों से घिरा है। एशिया की चार महानतम नदियाँ- ब्रह्मपुत्र, सिन्धु, मीकांग और मछु- तिब्बत से निकलती हैं। भारी मात्रा में खनिज और अद्वितीय प्रकार के पौधे और जंगली जानवर यहाँ पाए जाते हैं।

सातवीं शताब्दी में यहाँ इसके पुरातन धर्म बौन के स्थान पर बौद्ध धर्म का प्रचलन आरम्भ हुआ। अब यह हमारी पहचान का अविभाज्य अंग बन चुका है। लगभग प्रत्येक परिवार के घर में बौद्ध देवताओं की प्रतिमाएँ हैं। कुछ तिब्बती अभी भी बौन धर्म को मानते हैं और कुछ मुस्लिम और ईसाई भी हैं।

अधिकतर तिब्बती लोग अपना जीवन-निर्वाह पशु-पालन और कृषि से करते थे। कुछ अन्य व्यापारी और कारीगर भी थे। सरकार, मठों धनाढ्यजनों के पास जो धरती थी, उन पर कृषक किराए पर खेती करते थे। कई तिब्बती लोगों के पास अपनी निजी कृषि योग्य भूमि भी थी।

सामाजिक जीवन के अनेक पहलुओं में नारी भी पुरुष के समान उत्तरदायित्वों का निर्वहन करती थी और कुछ महिलाएँ राजनीति में भी अपना प्रभाव रखती थीं। तिब्बतियों में एक प्राचीन कहावत है- 'यदि वह देश में खुशहाली लाती है तो एक भिक्षुणी भी तिब्बत की शासक हो सकती है।' यह कहावत हमारे पुरातन तिब्बत की धार्मिक, सामाजिक और राजनीतिक स्वतन्त्रता की सामान्य भावना को चिह्नित करती है।

प्रबन्धकर्ता- शेवो लोब्संग थारगे, तिब्बत में तिब्बती प्रशासन के पूर्वाधिकारी।

चीनी अधिकार से पहले तिब्बत:- तिब्बत २००० वर्षों से अधिक समय तक एक स्वतन्त्र देश रहा है। इसकी अपनी सरकार, नागरिक सेवाएँ, न्यायिक पद्धति, मुद्रा, सेना और पुलिस बल थे।

चीन के साथ हमारे सम्बन्धों को देखने के लिए बहुत पीछे जाना पड़ेगा। आठवीं शताब्दी में चीन की प्राचीन राजधानी ज़ियान पर तिब्बतियों का अधिकार था। कभी-कभी चीन का तिब्बत पर प्रभाव था और कभी-कभार दोनों ही विदेशी शासन के अधीन रहे। किसी भी प्रकार से कभी भी तिब्बत चीन का हिस्सा नहीं था।

उन्नीसवीं शताब्दी के अन्त से अंग्रेजों और रूसी साम्राज्यों ने तिब्बत पर अपना प्रभाव जमाना चाहा। १९०४ में अंग्रेजों ने तिब्बत पर आक्रमण किया। परिणाम-स्वरूप एक शान्ति समझौते पर हस्ताक्षर किए गए जिसने वास्तव में तिब्बत को एक पूर्ण स्वतन्त्र देश के रूप में स्वीकृत किया।

हमारी सरकार, गंदेन फोड़ं, सर्वप्रथम १६४२ में स्थापित हुई। राजा सोंगत्सेन गाम्पों द्वारा स्थापित व्यवस्था के अनुकूल हमारी सरकार की कार्य-पद्धति थी। इसके पास लौकिक और धार्मिक- दोनों अधिकार थे, जिनके मुखिया तिब्बत के आध्यात्मिक और लौकिक नेता दलाई लामा थे। शिष्टजन और भिक्षु- दोनों ही शासन प्रबन्ध में अधिकारी थे।

१३वें दलाई लामा ने हमारे देश और सरकार में सुधार लाने का प्रयत्न किया। उन्होंने एक तार सेवा और आधुनिक सो की स्थापना की तथा तिब्बत की प्रथम अंग्रेजी पाठशाला की स्थापना का समर्थन किया।

अपने जीवन काल में १३वें दलाई लामा ने साम्यवाद के प्रसार से हमारे देश को होने वाले खतरे से सावधन करने के लिए घोषणा पत्र जारी किया। १९५० में १४वें दलाई लामा मात्र १५ वर्ष के थे जब उनके पूर्ववर्ती दलाई लामा की चोवनी सत्य सिद्ध हो गयी।

प्रबन्धकर्ता- रिचेन डोल्मा ठरिंग, तिब्बती होम्स फाउंडेशन मसूरी के संस्थापक।

एक पैनी दृष्टि घर की ओरः- १९४९ में चीन ने तिब्बत पर आक्रमण किया। आक्रमण के साथ-साथ ही ऐसी नीतियाँ और कार्य आरम्भ हो गए जिनका लक्ष्य था तिब्बत की पहचान तथा उसकी पारम्परिक जीवन पद्धति को मिटा देना। इसी कब्जे के परिणामस्वरूप युद्ध, भुखमरी, फाँसी तथा श्रम शिविरों का शिकार हो कर १० लाख से ऊपर तिब्बती मृत्यु का ग्रास बन गए। बहुमूल्य आध्यात्मिक तथा भौतिक वस्तुऐं लूट ली गई, जला दी गई, ध्वस्त कर दी गई और वे सदा-सदा के लिये लुप्त हो गईं। तिब्बत के वन काट दिये गए और उनकी पवित्र झीलें दूषित की गई। तिब्बत एक विशाल सैनिक आधार- शिविर तथा आणविक कचरे का ढेर बन गया।

चीनी प्रवासियों को तिब्बत में बसाने की नीति ने तिब्बतियों को अपने ही देश में अल्पसंख्यक बना दिया है। अब तो तिब्बती संस्कृति तथा उसकी पहचान को बचाए रखना भी खतरे में है।

जबर्दस्ती कब्जे के भय ने अनेकों तिब्बतियों को अपनी जन्मभूमि छोड़ कर पलायन करने पर बाध्य किया। अधिकांश शरणार्थियों को इस भयावह पलायन में पैदल हिमालय की पर्वत शृंखलाओं से जाना पड़ा और कटु स्मृतियों के सिवाय वे कुछ भी साथ न ले जा पाए।

इन्हीं स्मृतियों पर आधारित है 'एक पैनी दृष्टि घर की ओर'। निष्कासन में रह रहे तिब्बती समाज के प्रतिनिध इसके ११ संग्रहाध्यक्ष हैं। राष्ट्र गाथा से गुथीं उन्होंने अपनी व्यक्तिगत कथाओं का वर्णन किया है तथा अपनी स्मृतियों को दृश्य रूप दिया है।

यह प्रदर्शनी बिम्बों तथा गाथाओं का एक ताना-बाना है, जिसमें एक साथ समष्टि की स्मृति- चेतना, स्मरण तथा आशाएँ बुनी गई हैं। ये गाथाऐं आपको, हर आगन्तुक को ले जाती है एक यात्रा पर, जिसमें चित्रित हैं आक्रमण की क्रूर कालिमा, विध्वंस और दमन, यह तिब्बत के गौरवमय भूत पर रोशनी डालती है तथा भविष्य की आशाओं की अभिव्यक्ति करती है।

विश्व-व्यापी तिब्बती संस्थाओं तथा समाज और तिब्बत के मित्रों के सहयोग से केन्द्रीय तिब्बती, प्रशासन द्वारा इस संग्रहालय एवं प्रदर्शनी को मूर्तरूप देना सम्भव हुआ।

आक्रमणः- १९४९ में नवस्थापित चीनी लोक गणराज्य का प्रथम कार्य तिब्बत की मुक्ति था। कुछ महिनों के बाद उन्होंने आक्रमण कर दिया।

७ अक्टूबर १९५० में ४०,०००के लगभग चीनी सैनिकों ने देरगे, रिवोछे और सिम्दा की ओरस से त्रिकोणीय आक्रमण किया। ६,००० से भी कम सैनिकों की हमारी सेना पराजित हो गयी और आक्रमणकारी छाम्दो की ओर बढ़ गए।

छम्दो में तत्काल बैठक बुलाई गयी और निर्णय लिया गया कि राज्यपाल न्गाबो को छाम्दो से भाग जाना चाहिए। हमारी सेना के पास आत्मसमर्पण के अतिरिक्त कोई चारा नहीं था। नगर में अफरा-तफरी मच गई और दो दिन तक शस्त्र और बारुद की आतिशबाजी चलती रही।

उधर ल्हासा में छाम्दो का पतन एक दु:स्वप्न की भांति था। भिक्षु सैनिकों और सेना अधिकारियों द्वारा चीनी

आक्रमणकारियों को रोकना असफल होगया और तिब्बती सरकार आक्रमण को रोकने केलिए राजनैतिक वार्तालाप का रास्ता ढूंढती रही।

२३ मई १९५१ को बीजिंग में चीनी सरकार के साथ बातचीत के लिए गए हुए दल को १७ सूत्री अनुबंध पर हस्ताक्षर करने पड़े जिसमें तिब्बत की 'शांतिपूर्ण मुक्ति' तथा चीन में विलय की घोषणा की गई।

समस्त खम चीनी आक्रमणकारियों के लिए कूच का मैदान हो गया, वे जल्दी ही ल्हासा पहुँच गए।

प्रबन्धकर्ता- स्वर्गीय सोनम टाशी, तिब्बती सेना के अंग-रक्षक तथा सैन्य बल के पूर्व अधिकारी।

प्रतिरोध:- चीन आधिपत्य के विरोध में आक्रमण के समय से खम और आम्दो में आरंभ हुआ विद्रोह १९५६ तक पूर्वी तिब्बत में बड़े पैमाने के छापामार (गोरीला) युद्ध के रूप में विकसित हो गया। १९५८ के प्रारम्भ में खम के प्रतिरोधी नेताओं ने ल्हासा में छु-शी-गंगड्रुक (चार नदी छह पहाड़) के नाम से गोरीला आन्दोलन का गठन किया।

१६ जून १९५८ को सर्वप्रथम द्रिगुथांग ल्होखा में संगठित तिब्बती विरोधी आन्दोलन तेन्सुंग दंगलंग मग्गर (तिब्बत के स्वयंसेवी स्वतन्त्रता सेनानी) का ध्वजारोहण हुआ। अंड्रुग गोम्पो टाशी इसके मुख्य सेनापति मनोनीत हुए। तिब्बत के सभी भागों से अनेक रंगरूट हमारे साथ सम्मिलित हुए और शीघ्र ही हमारे ५,००० से अधिक सदस्य हो गए।

इसके बाद शीघ्र ही लड़ाई शुरु हो गयी। जेमो में हमने सबसे बड़ी लड़ाई का सामना किया। हमारे एक हजार से कम सिपाहियों ने हमसे कहीं बड़ी चीनी सेना का सफलतापूर्वक सामना किया।

१० मार्च १९५९ को ल्हासा में एक जनविद्रोह हुआ। जिसके फल-स्वरूप हजारों तिब्बती मारे गए। अब परम पावन दलाई लामा तिब्बत में बिल्कुल सुरक्षित नहीं थे और उन्होंने अपना देश छोड़ कर भाग जाने का निश्चय किया। हमने भारतीय सीमा तक सारे रास्ते उनके सुरक्षित निकलने के लिए पहरा दिया। यह मेरे लिए सबसे बड़ी उपलब्धि थी।

हमने चीनियों के साथ लगभग १०३ लड़ाईयाँ लड़ीं। कुछ समय तक दक्षिणी और पूर्वी तिब्बती भागों पर नियंत्रण रखा पर साधनों और प्रशिक्षण के अभाव में अन्तत: हमें अपने से कहीं अधिक बड़ी चीनी फौज से परास्त होकर भागना पड़ा।

शीघ्र ही प्रतिरोधी गतिविधियाँ नेपाल में मुस्तांग से पुन: प्रारम्भ हुई और ये १९७० के दशक तक जारी रहीं।

प्रबन्धकर्ता- नटू नवांग- छु-शी-गंगड्रुक के पूर्व सदस्य और तेन्सुंग दंगलंग मग्गर के उप-सेनापति।

विनाश:- चीन के तिब्बत पर नियन्त्रण की कार्यवाही जो तिब्बती संस्कृति, धर्म और अन्तत: इसकी पहचान को मिटा देने वाली नीतियों को लक्ष्य करके की जा रही थी, ने बड़े पैमाने पर इसका भौतिक विनाश किया है।

तिब्बत संस्कृति और धर्म के योजना-बद्ध ध्वंस ने ६,००० से अधिक मठों और मन्दिरों का विनाश देखा। जो थोड़े बहुत आज बचे भी हैं, वे धार्मिक शिक्षा ग्रहण के बजाय उनका उपयोग मात्र पर्यटकों को आकर्षित करने का केन्द्र बना है। मूल्यवान धर्मपुस्तकों और प्रतिमाओं को नष्ट किया गया है। सोना, चाँदी आदि से निर्मित प्रतिमाओं को पिघलाकर उपयोग में लाया गया है अथवा अन्तर्राष्ट्रीय बाजार में बेच दिया गया है। चीनियों ने धर्मपुस्तकों का जूते के तलें के रूप में प्रयोग किया है।

कारावास तथा पूछताछ के दौरान जो तकलीफ और शारीरिक यंत्रणा तिब्बतियों ने भोगी, उसकी कल्पना भी मानव की बुद्धि से परे है। लगभग १.२ लाख तिब्बती श्रम शिविरों में यंत्रणा और भूख के कारण चीनी निर्दयता के क्रूर उत्पीड़न के परिणाम-स्वरूप मृत्यु को प्राप्त हुए।

अब भी तिब्बतियों की आत्मा का क्रूरता से विनाश किया जा रहा है। हमारे घरों पर अनाधिकृत कब्जा, हमारे धर्म को मिटा देने की कोशिशें तथा तिब्बतियों के मध्य अविश्वास और परस्पर विरोध पैदा करने के प्रयत्न तिब्बतियों की सोच और जीवन के प्रति दृष्टिकोण को दीर्घ-कालीन नुकसान पहुँचाने का कारण बनी हैं।

चीनी सरकार द्वारा तिब्बती प्राकृतिक स्रोतों का दोहन, अत्यधिक वन-विनाश और अनियंत्रित शिकार ने तिब्बत के कोमल पर्यावरण को भारी नुकसान पहुँचाया। तिब्बत के कुछ भू-भाग को परमाणु परीक्षण और परमाणु कचरा दबाने के लिए इस्तेमाल किया जा रहा है। तिब्बत के पर्यावरण विनाश के प्रभाव मात्र तिब्बत के पठार पर ही नहीं अपितु चीन के साथ अन्य एशिया देशों में भी इसका प्रभाव पड़ रहा है।

होरछड़ जिम्मे पूर्व-निदेशक, सांस्कृतिक और साहित्यिक शोधकेन्द्र नोरबूलिंका संस्थान।

पलायन:- १९५९ से लगभग एक लाख तिब्बती

पड़ोसी देशों में भाग गए। चीनी आक्रमण और कठिन परिस्थितियों के कारण अनेक रास्ते में ही काल के ग्रास बन गए। प्रतिवर्ष तिब्बत में उत्पीड़न और उपद्रव के कारण हजारों तिब्बती पलायन करते हैं।

१९९३ की शरद ऋतु में चीन का 'पुनर्शिक्षण' दल हमारे मठ में आया। मैंने उनके दलाई लामा को दोषी करार देने की आज्ञा को मानने से इन्कार किया और मुझे लगा कि मेरे पास यह स्थान छोड़ने के सिवा कोई रास्ता नहीं, मैंने भारत में आने का निश्चय किया।

कुछ सप्ताह बाद मैंने तीन अन्य तिब्बतियों के साथ अपनी यात्रा आरम्भ की। हम चीनी सैनिक बलों के मुठभेड़ से बचने के लिए ऊंचाई पर जा रहे थे। हमें भारी बर्फानी तूफान का सामना करना पड़ा, हम रास्ता भूल गए। हमारे कम्बल आन्धी ले गई और हिम-दंश से पीड़ित थे पर हमारे पास चलते रहने के अतिरिक्त कोई चारा नहीं था।

तीन दिनों के पश्चात् हम सिक्किम में तिब्बती बंजारों के शिविर तक पहुँचे। हम बुरी तरह से थक चुके थे और हमारे शरीर में तुषार के दिए घावों में भयंकर पीड़ा हो रही थी। बंजारे हमें भारतीय सेना चौकी में उपचार के लिए ले गए। मुझे अपने स्वास्थ्य से अधिक इस बात की चिन्ता थी कि कहीं चीनियों को मेरी सूचना न मिल जाए।

हमें गंगटोक अस्पताल में भरती किया गया पर मेरी हालत में कोई सुधार नहीं आया। छ: महीनों के बाद मेरी टांगों और मेरी कुछ अंगलियों को मेरी शरीर से अलग कर दिया गया।

अन्तत: हममें से दो को धर्मशाला जाने की अनुमति दे दी गयी पर अन्य दो, जिनकी शारीरिक हालत कुछ अच्छी थी, उनको वापिस तिब्बत भेज दिया गया।

जब हम धर्मशाला पहुँचे तो हमें दलाई लामा के पास साक्षात्कार के लिए ले जाया गया। वहाँ क्या हुआ, मैं कुछ याद नहीं कर सकता। मैं मात्र रो पड़ा।

प्रबन्धकर्ता- मिम्मार छिरिंग, तिब्बत के धारगेलींग मठ के पूर्व भिक्षु।

चीनीकरण:- जबसे तिब्बत पर चीन ने अधिकार किया उनके मुख्य उद्देश्यों में सर्वप्रथम तिब्बती राष्ट्रीय पहचान, संस्कृति तथा धार्मिक विश्वासों का क्रमिक ह्रास करके तिब्बत को चीनी राष्ट्रीय राज्यों में एक-जातीय मज्जित करना है।

सर्वप्रथम चीनी नेताओं द्वारा बड़े पैमाने पर लोकतान्त्रिक सुधारों की घोषणा तिब्बत के सांस्कृतिक और राष्ट्रीय प्रभुत्व को समाप्त करने का लक्ष्य करके की गयी। सितम्बर १९६५ में तथाकथित तिब्बत स्वायत्त क्षेत्र के निर्माण के साथ यह प्रक्रिया अपनी चरम पर पहुँच गयी।

१९६६ में 'सांस्कृतिक क्रान्ति' की ध्वजा तले 'लाल पहरेदारों' ने तिब्बती सभ्यता के विशिष्ट चिह्नों को निर्मूल कर दिया, जैसे मठ और पवित्र ग्रन्थ। अपेक्षाकृत थोड़े से समय में हमारी पुरातन सभ्यता का तीन चौथाई हिस्सा विनष्ट हो गया।

८० के दशक में जो सुधार नीतियाँ घोषित की गयीं, उन्होंने कुछ आर्थिक परिवर्तन किए परन्तु अतिसूक्ष्म धूर्त सांस्कृतिक चीनीकरण की नीति जारी रही। आज हमारा धर्म और हमारे संस्थान समाजवादीकरण की प्रवृत्ति के लिए बाध्य हैं। शिक्षा और प्रबन्धन में चीनी भाषा को प्रधानता दिया जाना जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में तिब्बतियों को हाशिए पर रख देता है। सर्वाधिक चिन्ता का विषय यह भी है कि हमारे अपने ही देश में जनसंख्या का स्थानान्तरण करके तिब्बतियों को अल्पसंख्यक रूप में परिवर्तित करना हैं।

नि:सन्देह हमारी सभ्यता के लिए समय हाथ से निकलता जा रहा है। तिब्बत का प्रश्न इसके सांस्कृतिक और राजनैतिक अस्तित्व का प्रश्न है। इससे पहले कि देर हो जाए, एक सांस्कृतिक नव जागरण ही तिब्बत में और निर्वासन में इसकी गति को बरकरार रख सकता है।

प्रबन्धकर्ता : कुन्छोग चुन्डू, प्रोजेक्ट अधिकारी, योजना परिषद, केन्द्रीय तिब्बती प्रशासन।

मानवाधिकार हनन:- चीन के द्वारा तिब्बत में मानवाधिकार हनन उसके अवैध कब्जे के साथ शुरू होने के पश्चात् आज तक जारी है। यह वैयक्तिक मानवाधिकार के हनन के साथ-साथ तिब्बती लोगों के सामूहिक अधिकारों पर भी संस्थागत एवं योजना-बद्ध आक्रमण है।

२२ नवम्बर १९८९ को मैंने अपने मठ की पाँच अन्य भिक्षुणियों के साथ ल्हासा में शान्तिपूर्ण प्रदर्शन में भाग लिया। हमें उसी समय गिरफ्तार करके कारागार में भेज दिया गया।

दो महीने तक मुझसे पूछताछ जारी रही। मुझे छत से टांग दिया गया और मेरे शरीर पर सिगरेट दागे गए। मुझे धातु की तारों से बुरी तरह पीटा गया और मेरे अन्य साथियों को बिजली के छड़ी उनके आन्तरिक अंगों में ठूंसे गए थे।

तत्पश्चात् मुझे सात वर्ष की कैद का दण्ड दिया गया

और द्राप्ची जेल में भेज दिया गया। वहाँ परिस्थितियाँ बहुत कठोर थीं। वहाँ कभी भी पर्याप्त खाना और मूल-भूत आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं थी तथा सभी कैदियों से काम करवाया जाता। अपने हिस्से के कार्य को समाप्त न करने की स्थिति में कारावास की अवधि बढ़ा दी जाती।

हमें अपने धार्मिक कर्त्तव्यों का पालन नहीं करने दिया जाता। फिर भी हमने छिप-छिप कर रोटी से जप-मालाएँ बनायीं, मिलकर प्रार्थना की और हम में से कुछ ने स्वतन्त्रता के गीतों की कैसेट भी रिकॉर्ड करवाई। उनके पकड़े जाने पर हमें सख्त दण्ड भी दिया गया।

जब मुझे जेल से रिहा कर दिया गया तो मुझे अपने मठ में नहीं जाने दिया गया और मेरी गतिविधियों पर रोक लगा दी गयी। मेरे अधिकतर रिश्तेदार और मित्र डरके मारे मेरे साथ सम्बन्ध रखने से कतराने लगे, तभी मैंने भागकर भारत जाने का निश्चय कर लिया।

- भिक्षुणी रिजिंन छुत्री, तिब्बत की पूर्व-शुग्सेव भिक्षुणी-मठ से।

एक ज्वलन्त प्रश्न-तिब्बती आत्मदाह की ओर रुख क्यों कर रहे हैं?:- चीनी दमन के अधीन सम्पूर्ण तिब्बत में सन २००८ के शान्तिपूर्ण जनविरोध के बाद लगभग सैन्य शासन लागू हो गया है। गत ६० वर्ष के चीनी दमन और सतत कठोर नीतियों के कारण तिब्बत में तिब्बतियों ने आत्मदाह के द्वारा विरोध शुरू किया है।

फरवरी २००९ से अप्रैल २०१५ तक कुल १३८ तिब्बतियों द्वारा आत्मदाह किया जा चुका है। जिसमें ११९ लोगों का देहान्त हो चुका है और बाकी बचे लोगों के हालत का कुछ पता नहीं चल पाया है। आत्मदाह करने वाले जिनमें अधिकतम युवा या पूर्ण स्वस्थ लोग हैं। वे तिब्बतियों की आजादी और दलाई लामा जी की तिब्बत वापसी की माँगों की नारे लगाते हुए अपने आप को अग्नि के हवाले कर रहे हैं।

अन्तर्राष्ट्रीय मीडिया वा पर्यटकों से कट जाने के कारण बहुत कम लोग ही तिब्बत में हो रहे इन घटनाओं को जान पा रहे हैं।

साठ साल के चीनी अधिपत्य और शासन तिब्बतियों की पीड़ा को सम्बोधित करने में असफल रहा है। तिब्बतियों की मूल आजादी और संस्कृति वा पहचान का संरक्षण के जायज चाह को दमनकारी तारीकों से चुनौती दी जिनसे तिब्बत में राजनैतिक दमन, आर्थिक हशियापन, सांस्कृतिक विलयन और पर्यावरण का विनाश हुआ। अत: पारंपरिक विरोध प्रदर्शन के लिए कोई जगह ना पाने के कारण तिब्बतियों की पीड़ा की ओर दुनिया का ध्यान आकर्षित करने के लिए तिब्बतियों ने आत्मदाह को एकमात्र तरीके के रूप में देखा।

राजनैतिक दमन:- तिब्बत में राजनैतिक दमन का सबसे दृष्टिगत रूप धार्मिक आस्था के स्वतन्त्रता पर कड़ा अंकुश और राष्ट्रभक्ति शिक्षा की तीव्रता है, जिसके तहत भिक्षु और भिक्षुणियों से बलपूर्वक दलाई लामा की निन्दा करवाना और चीनी साम्यवादी दल के प्रति निष्ठा दिलाना है।

लोकतान्त्रिक प्रबन्धक समिति जो साम्यवादी पार्टी के कार्यकर्ताओं से बना है वह तिब्बत की धार्मिक प्रतिष्ठानों की दैनिक गतिविधियों का संचालन करता है। राज्य नियन्त्रित मठ व्यवस्था बौद्ध धर्म की शिक्षा की अपेक्षा मातृभूमि चीन की प्रति वफादारी वा प्रेम को दोहराता है क्योंकि भिक्षुगण को आधा दिन पार्टी के प्रचार को याद करना पड़ता है। नवम्बर २०११ के बाद सभी मठों में चीनी साम्यवादी नेतृत्व के चित्र रखना और चीनी राष्ट्र ध्वज को लहराना अनिवार्य हो गया है तथा मठ और भिक्षुओं के कमरों पर निरन्तर रात्रि छापे पड़ते हैं।

पर्यावरण का विनाश:- गत ६० वर्षों में चीनी सरकार ने तिब्बत की नाजुक पर्यावरण को नजरअंदाज कर तिब्बत में कई परियोजना और नीतियों को लागू किया है। तिब्बत में अनियन्त्रित खनन हो रहा है।

सन् २००९ से तिब्बत में खनन से सम्बन्धित जन विरोध की २० घटनाएँ दर्ज हुए हैं। खनन और पर्यावरण प्रदूषण के मुद्दे आत्मदाह के मुख्य कारणों में रहे हैं। नवम्बर २०१२ में छेरिङ दोनडुब और कोनछोग छेरिङ ने तिब्बत में म्यागर-थड़ में सोने की खदान के द्वार पर आत्मदाह किया। उसी तरह दो बच्चों की माँ चकमो क्योद भी रेवगोङ में आत्मदाह से पूर्व जातीय समानता और पर्यावरण संरक्षण की आजादी के नारे लगाये। पुश्तैनी जमीन हथियाना, पवित्र स्थलों का विनाश, रोजगार अवसरों की कमी और पर्यावरण प्रदूषण के कारण तिब्बत में बहुत आक्रोश है।

आज चीनी सरकार पर्यावरण सुरक्षा और पारिस्थितिक प्रवासन के नाम पर पशुपालकों को बलपूर्वक उनकी पुश्तैनी जीवनशैली से बेदखल कर रहे हैं। उनकी सदियों पुरानी जीवन शैली से उन्हें हटा कर कंक्रीट के बने कैम्पों में रहने के लिए मजबूर किया जा रहा है, जिसके कारण गरीबी, पर्यावरण घटान और सामाजिक विघटन हो रहे हैं। आत्मदाह करने वालों में बीस से अधिक लोग पशुपालक

परिवार से थे।

आर्थिक हाशियोपरः- – तिब्बत की राजधानी ल्हासा के ७० फीसदी व्यवसाय चीनियों के हाथ में है।

– उच्च विद्यालय से शिक्षा प्राप्त ४० फीसदी तिब्बती बेरोजगार हैं।

चीनी सरकार ने विकास की नई रणनीति अपनाई जो कि आँकड़ों में बढ़त हासिल करने पर केन्द्रित है ना कि अल्पसंख्यकों के सशक्तिकरण और गुणवत्ता को प्राप्त करने पर। किसी विशेष अभिरुचि को लेकर केन्द्रीय सरकार की सारा निवेश शहरी उद्योग क्षेत्र को जाता है जब कि ज्यादातर तिब्बतियों की आजीविका ग्रामीण क्षेत्र में है।

ज्यादातर व्यापार पर चीनियों का कब्जा है। वे रोजगार देने में प्रवासी चीनियों को ही प्राथमिकता देते हैं जो चीनी कार्य शैली से वाकिफ है और बेशक चीनी भाषा से भी। तिब्बत में आर्थिक गतिविधि के लगभग सभी पहलुओं पर भेदभाव पाया जाता है। यहाँ तक कि तिब्बती और गैर तिब्बती कामगारों के वेतन में भी फर्क है। तिब्बती का क्षेत्र चीनी गणतन्त्र के सबसे गरीब क्षेत्रों में एक और तिब्बत के गरीबी का स्तर चीन के सबसे गरीब क्षेत्र से भी बदतर है।

सांस्कृतिक विलयनः- तिब्बती संस्कृति और पृथक् तिब्बती पहचान को बचाए रखने में तिब्बती भाषा एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। तिब्बतियों द्वारा चलाए जा रहे स्कूल जिसका उद्देश्य तिब्बती युवाओं में तिब्बती संस्कृति और भाषा को सिखाना और बढ़ावा देना है, उन पर कठोर अंकुश है। तिब्बती छात्रों द्वारा आधुनिक विषय की पढ़ाई अपनी मातृभाषा में बेहतर रूप से कर पाने के बावजूद चीनी सरकार द्वारा पाठ्यपुस्तकों को तिब्बती भाषा के बजाए चीनी भाषा में पढ़ाया जा रहा है। परिणामस्वरूप तथाकथित तिब्बत स्वायत्त क्षेत्र में छात्रों को अपनी भाषा और सभ्यता का केवल सतही ज्ञान ही उपलब्ध हो रहा है।

बहुतायत प्रवासी चीनियों के तिब्बत में बस जाने से तिब्बत में ही तिब्बतियों की पहचान की संकट और बढ़ गया है।

निर्वासन में तिब्बती समुदायः- सन् १९५९, ल्हासा में तिब्बती राष्ट्रीय विद्रोह हुआ था और परम पावन दलाई लामा जी के निर्वासन में आते समय उनके साथ हजारों तिब्बती पड़ौस के देशों में पलायन कर पहुँचे। आरम्भ में तिब्बतियों को शरणार्थी शिविरों में टेंट के अन्दर रखा गया। इस प्रकार उत्तरी भारत म सड़क बनाने का कार्य दिया गया। इसके बाद भारत में रह रहे तिब्बती समुदाय को भारत, नेपाल तथा भूटान आदि में धीरे-धीरे लगभग ५० बस्तियों में बसाने का कार्य हुआ। परम पावन जी ने निर्वासन में आने के बाद जल्द ही तिब्बत तथा तिब्बत से बाहर रहने वालों की पहचान बनाये रखने के लिये तिब्बती प्रशासन तथा संसद स्थापित की।

निर्वासन में तिब्बती समुदाय के प्रशासन के कार्यालयों तथा संस्थानों के माध्यम से अपनी विरासत को जीवित रखने हेतु संरक्षण व संवर्द्धन में संघर्षरत है। निर्वासन में ८० से अधिक विद्यालय, साथ ही भिक्षु-भिक्षुणियों के लिये लगभग १९० मठ व विहारों का निर्माण किया गया है। केन्द्रीय तिब्बती प्रशासन ने अपनी अलग-अलग विभागों के माध्यम से तिब्बतियों के कल्याण में लगे और विश्वभर के १२ देशों के अन्दर प्रतिनिधित्व के रूप में ब्यूरो ऑफिस स्थापित किया गया है। तिब्बती शरणार्थियों के वर्तमान संख्या मात्र १३०,००० है। इनसे अधिकतर भारत, नेपाल और भूटान में हैं। इसके अतिरिक्त अमेरिका, सुईजरलैण्ड, केनाडा, ऑस्ट्रेलिया, बेल्जियम, फ्रांस इत्यादि अन्य देशों में भी काफी संख्या में तिब्बती रहते हैं।

६० के दशक के प्रारम्भ में, मैं एक शरणार्थी के रूप में भारत पहुँचा था। उस समय वास्तव में एक शिशु के रूप में अपने दादी के पीठ पर नेपाल के रास्ते से भारत में शरण लीया और मैं अपने बड़ों के उस समय की परेशानी व निराशा की अवस्था को नहीं जान सकता था। हालांकि परम पावन दलाई लामा जी के दर्शन और अपने बच्चे को उनके चरणों में अर्पित कर देने मात्र से ही अपने आगे की कठिनाइयों का सामना करने का उत्साह दिखाते हुये, वह अपने सड़क बनाने की कार्य के लिये गाना गाते हुये निकल जाते थे।

इसके पश्चात् धीरे-धीरे तिब्बती प्रशासन के कार्यालयों एवं तिब्बती संसद का गठन करते हुए, इतिहास में पहली बार पहला तिब्बती लोकतान्त्रिक संविधान का मसौदा तैयार किया गया। उसी समय पहला तिब्बती स्कूल भी खोला गया था। मेरे स्कूली जीवन के भी प्रारम्भ ऊपर धर्मशाला के तिब्बती नर्सरी में हुआ था।

हमारे कठिन परिस्थितियों में भारत सरकार ने अपनी कठिनाइयों के बावजूद हम तिब्बती शरणार्थियों को बहुत मदद की है। प्रारम्भ में अधिकतर तिब्बती उत्तरी भारत में सड़क श्रमिकों के रूप में कार्यरत थे। परन्तु जब हमें जल्द ही अहसास हुआ कि निर्वासन में हमें धर्म तथा संस्कृति के संरक्षण एवं संवर्द्धन के लिये संघर्ष के क्रम में अधिक

ठोस संरचना की जरूरत है। तब हमने भारत सरकार से अपनी समुदाय के लिये बस्तियों के निर्माण हेतु अनुमति के लिये अनुरोध किया था और सरकार ने भी सहयोग व स्वीकृति प्रदान की थी।

सन् १९६० में तिब्बती बस्तियों में पहला माइलाकुप्पे, कर्नाटक में स्थापित किया गया था। उसी क्रम में भारत, नेपाल तथा भूटान आदि में कई बस्तियों को स्थापित किया गया। शुरूआत में अधिकतर बस्तियों की स्थिति बहुत दयनीय थी, फिर भी हम धीरे-धीरे कृषि कार्य एवं अन्य आय के स्रोतों को विकसित करते गये। इसी के साथ एक के बाद एक अधिकतर बस्तियों में स्कूल और मठों को बनाया जा सका।

निर्वासन में हमें बहुत कठिन परिस्थितियों में भी अच्छी सफलता मिली है। आज यह बात यकीन के साथ कह सकते हैं कि शरणार्थी तिब्बती समुदाय एक प्रगतिशील समुदाय बना है। परम पावन दलाई लामा जी ने राजनीतिक सत्ता को जनता द्वारा निर्वाचित सिक्योड को पूर्णरूपेन हस्तांतरण कर, मात्र तिब्बत के आदर्श लोकतान्त्रिक प्रणाली को ही नहीं बल्कि तिब्बत के स्वशासन (स्वायत्त क्षेत्र) के बहाली के लिये मध्यम मार्ग के रास्ते पर प्रतिबद्धता ही हमारे लिये सबसे बड़ी उपलब्धि है।

प्रबन्धकर्ता- श्री टाशी फुन्छोग, सचिव, सूचना एवं अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध विभाग, केन्द्रीय तिब्बती प्रशासन, धर्मशाला।

वर्तमान तिब्बतः- तिब्बत आज भी निरन्तर डराने, धमकाने तथा यातनाओं का सामना कर रहा है। जो अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर मान्य अपने मानवाधिकारों का प्रयोगकरते हुए राजनीतिक विचारों की अभिव्यक्ति करते हैं, उन्हें राष्ट्र को अस्थिर करने के लिये कठोर दण्ड मिलता है, जैसे कि गिरिफ्तारियाँ, यातनाएँ और कारावास।

तिब्बत के भिक्षु तथा भिक्षुणी मठों में बड़े पैमाने पर चीनी सरकार देशभक्ति पुनर्शिक्षण नामक कार्यक्रम चलाती है। इसका विरोध करने वालों को गिरफ्तार कर लिया जाता है, कारावासों में ठोंस दिया जाता है, यातनाएँ दी जाती हैं, तथा उनके मठों से निष्कासित कर दिया जाता है।

अधिकतर तिब्बती बच्चों को अनुकूल शिक्षा उपलब्ध नहीं है। सर्वोत्तम विद्यालय चीनी विद्यार्थियों के लिये आरक्षित है तथा ग्रामीण क्षेत्रों में स्थित अनेक विद्यालयों में प्रायः सुविधाएँ विशेषकर नगण्य हैं। अधिकांश विद्यालयों में शिक्षा का माध्यम चीनी भाषा है और तिब्बतियों का उनमें प्रवेश अत्यन्त कठिन है। चीनी प्रवासियों को तिब्बत में बसने के लिये प्रोत्साहित किया जाता है और अपने ही देश में हम लोग अल्पसंख्यक हो गए हैं। ६० लाख तिब्बतियों की तुलना में अब वहाँ ७५ लाख चीनी हैं।

तिब्बत के विशिष्ट धर्म तथा उसकी संस्कृति को नष्ट करने के अतिरिक्त चीनी प्रवासियों की बाढ़ के कारण तिब्बतियों के पारम्परिक रोजी-रोटी के साधनों पर बड़ा कुप्रभाव पड़ रहा है। कृषि उत्पादनों तथा तिब्बतियों द्वारा बनाई जाने वाली कलात्मक चीजों के मूल्य घटा दिये गए हैं तथा किसानों और व्यापारियों पर बोझिल कर थोपे गऐ हैं। अधिकांश तिब्बती नौकरी से वंचित रहने पर बिल्कुल असहाय और बेसहारा बन कर रह जाते हैं।

आर्थिक उदारी-करण तथा खुले बाजार की नीति से तिब्बत के प्राकृतिक साधनों पर बड़ा दबाव पड़ रहा है। चीन के हित में तिब्बत के वनों, खजिनों तथा जल-ऊर्जा संसाधनों का दोहन हो रहा है जिसके परिणाम-स्वरूप तिब्बत के कोमल पर्यावरण को खतरा पैदा हो गया है।

प्रबन्धकर्ता- जेम्द गोदम पूर्व राजनीतिक बन्दी, मिम्यार प्रेरिंग .... हस्पताल के चिकित्सक

तिब्बत का भविष्य- एक परिचय, परम पावन १४वें दलाई लामाः- यदि आध्यात्मिक दृष्टि से उल्लेख करें तो हमारे हिम देश तिब्बत के बारे में भगवान बुद्ध ने भविष्यवाणी की थी। यह एक आशीर्वादित पुण्य भूमि है। स्वभावतः यहाँ के लोग करुणाशील तथा धार्मिक प्रवृत्ति के हैं। हमारी अपने प्रति यही धारणा है और दुनिया का हमारे प्रति दृष्टिकोण भी ऐसा ही है।

सांसारिक दृष्टि से हमारे देश का बड़ा लम्बा इतिहास है। पुरातात्विक खोजों से पता चला है कि हमारा इतिहास छः से आठ हजार वर्ष पुराना है। तिब्बती लोग विश्व के सब से ऊँचे पठार के निवासी हैं।

भूत में हमारे लोग बड़ी कठिनाइयों से गुजरे परन्तु एक कौम के तौर पर जीवित रहने में हम सफल रहे हैं। न केवल तिब्बत के प्रति बल्कि किसी भी उद्देश्य के प्रति यदि तिब्बती लोगों को अपनी प्रतिबद्धता दर्शाने का अवसर दिया जाए तो भी वे उस पर खरे उतरेंगे। हम ने अपनी संस्कृति का संरक्षण किया है। विशेषतः बौद्ध संस्कृति का जो कि तिब्बत तथा विश्व दोनों के लिए लाभदायक है। मंगोलिया तथा हिमालयी क्षेत्रों में हमारी बौद्ध संस्कृति फैली है। तिब्बती बौद्ध संस्कृति मंगोलिया तथा हिमालयी

क्षेत्रों में प्रसारित हुई है। तिब्बत के बौद्ध धर्म को एक विश्वसनीय एवं सफल परम्परा के रूप में मान्यता प्राप्त हुई है।

बौद्ध शिक्षाओं ने तिब्बती लोगों के स्वभाव को प्रभावित किया है। करुणा हमारी संस्कृति का सार है। हमारे लोग दयालु तथा सरल हैं। आज के संसार में ये महत्वपूर्ण एवं अमूल्य गुण हैं। करुणा तथा दया के सार से युक्त तथा सरलता एवं नैतिकता से सम्बद्ध हमारी संस्कृति न केवल तिब्बतियों बल्कि समस्त विश्व के हित में लाभकारी होने की क्षमता रखती हैं। न केवल मानवों अपितु पशुओं के लिए भी सहृदयता हमारी संस्कृति (का अंग) है। हम अकारण ही जीवों का उपयोग, हनन तथा उनकी हानि नहीं करते। ये गुण समस्त विश्व के लिए हितकर है।

हमारी संस्कृति सन्तोष की (संस्कृति) भी है और हम प्रकृति का अत्याधिक दोहन नहीं करते। आज हम देख रहे हैं कि मनुष्य के लालच और असीम आकांक्षाओं के कारण विश्व में अत्यधिक समस्याएँ पैदा हुई हैं तथा पशु जगत् की अथाह क्षति हुई है। अत: भविष्य में तिब्बत में आर्थिक विकास का आधार होना चाहिए अहिंसा और शान्ति। जैसे कि हमारे पहाड़ों का पर्यावरण सुन्दर एवं शीतल है, वैसे ही हमें बौद्ध धर्म की करुणाचर्य्या द्वारा अपने मन को नियन्त्रित तथा शान्त बनाना चाहिए। इस प्रकार हम तिब्बत में शान्ति का वातावरण तैयार कर सकते हैं। तिब्बत के लिए अपनी पाँच-सूत्री योजना में मैंने प्रस्तावित किया था कि तिब्बत एक विसैन्यीकृत, शान्त अभयारण्य बने।

भविष्य में तिब्बत का राजनीतिक ढाँचा लोकतान्त्रिक होना चाहिए। राजनीतिक प्रणलियाँ अनेक हैं परन्तु सब से व्यावहारिक प्रणाली वह है जो लोगों को सामूहिक उत्तरदायित्व प्रदान करती है और उन्हें अपने नेताओं को चुनने का अधिकार देती है। यही सर्वोत्तम एवं स्थायी राजनीतिक प्रणाली है। अत: हमें भावी तिब्बत को एक स्वतन्त्र लोकतन्त्र बनाने का प्रयास करना चाहिए। यदि हम ऐसा कर पांऐ तो हमारा देश एक ऐसा देश बन जाएगा कि जहाँ मनुष्य तथा अन्य प्राणी अपने सुन्दर पर्वतीय वातावरण में शान्तिपूर्वक रह सकेंगे। इस प्रकार हम सारी दुनिया के लिए एक उदाहरण बन सकते हैं। यह सम्भव भी है और प्राप्य भी। मैं सदैव इस की कामना करता हूँ तथा एतदर्थ प्रार्थना करता हूँ।

तिब्बत के प्रश्न पर चीनी समर्थकों की संख्या बढ़ रही है। चीन तथा आर्य देश भारत हमारे सब से महत्वपूर्ण पड़ौसी हैं। इन दोनों देशों तथा तिब्बती सीमा स्थित हिमालयी राज्यों में तिब्बत के समर्थक विद्यमान हैं। विश्वभर में तिब्बत के समर्थकों की बड़ी संख्या है। यदि वे सब हमारे लक्ष्य की प्रगति में हमारी सहायता करें तो मुझे बहुत प्रसन्नता होगी।

परम पावन के तीन प्रमुख प्रतिबद्धताएँ:- परम पावन चौदहवें दलाई लामा जी के जीवन की तीन अपरिहार्य प्रतिबद्धताएँ इस प्रकार हैं-

१. उन्होंने एक मानव जीवन के स्तर पर, उन मानवीय मूल्यों जैसे करुणा, क्षमा, संतोष, शील आदि आत्म-अनुशासन का विकास करना है। सभी मानव जीव समान हैं। हम सभी सुख चाहते हैं और दु:ख नहीं चाहते। ऐसे व्यक्ति जो धर्म पर विश्वास नहीं करते, वे भी अपने जीवन को और सुखी बनाने में इन मानवीय मूल्यों के महत्त्व को पहचानते हैं। इस प्रकार के मानवीय मूल्यों को परम पावन धर्म निरपेक्ष नैतिकता के नाम से सम्बोधित करते हैं।

२. धार्मिक अभ्यासी के स्तर पर, धार्मिक सौहार्द की भावना और विश्व के प्रमुख धार्मिक परम्परा की आपसी समझ को बढ़ावा देना है। दार्शनिक स्तर पर अन्तर होने के बावजूद सभी प्रमुख धर्मों में अच्छे मानव बनाने की एक समान क्षमता है। अत: सभी धार्मिक परम्पराओं के लिये यह महत्त्वपूर्ण है कि वे एक दूसरे का सम्मान करें तथा एक दूसरे की परम्पराओं के मूल्य को पहचानें। जहाँ तक एक सत्य, एक धर्म का सम्बन्ध है, इसका एक वैयक्तिक स्तर पर महत्त्व है। परन्तु एक विशाल समुदाय के लिये कई सत्यों, कई धर्मों की आवश्यकता है।

३. परम पावन एक तिब्बती हैं तथा दलाई लामा का नाम धारण किये हैं। विशेषकर तिब्बत में तथा तिब्बत से बाहर रहने वाले तिब्बती लोगों द्वारा उन पर अत्यधिक विश्वास है। इसलिये उनकी प्रतिबद्धता तिब्बत की प्रश्न को लेकर है। उन पर न्यायिक संघर्ष के प्रवक्ता का उत्तरदायित्व है। बौद्ध संस्कृति, शान्ति एवं अहिंसा शिक्षा की रक्षा के लिये प्रयास करना, दमन के नीचे जीवन व्यतीत करने वो उन तिब्बतियों की एक स्वतन्त्र रूप में प्रतिनिधित्व करना है।

- धर्मवीर

परोपकारिणी सभा, अजमेर के तत्त्वावधान में
१३२ वाँ ऋषि बलिदान समारोह
दिनांक २०, २१, २२ नवम्बर २०१५, शुक्र, शनि, रविवार

महापुरुषों का यज्ञमय जीवन हमको प्रत्येक कदम पर प्रेरणा व मार्ग दर्शन देता रहता है, जिसके कारण हम उनके ऋणी हो जाते हैं। इस ऋण से मुक्त होने का एक ही उपाय है- महापुरुषों की विचारधारा का यथासामर्थ्य प्रचार-प्रसार। विराट व्यक्तित्व महर्षि दयानन्द की समग्र मानव जाति ऋणी है। इस ऋण को चुकाने का स्वर्ण-अवसर ऋषि के १३२ वें बलिदान वर्ष के उपलक्ष्य में हमको प्राप्त हुआ है। इस अवसर पर परोपकारिणी सभा भव्य समारोह का आयोजन करने जा रही है।

ऋग्वेद पारायण यज्ञ- १६ नवम्बर से 'ऋग्वेद पारायण यज्ञ' का आरम्भ किया जायेगा, इस यज्ञ की पूर्णाहूति बलिदान समारोह के अन्तिम दिन २२ नवम्बर को प्रात: १० बजे होगी। यज्ञ के ब्रह्मा श्री सत्यानन्द वेदवागीश होंगे। यह यज्ञ ऋषि-उद्यान, अजमेर की यज्ञशाला में होगा।

वेदगोष्ठी - प्रतिवर्ष की परम्परा के अनुसार इस वर्ष भी अन्तर्राष्ट्रीय दयानन्द वेदपीठ दिल्ली एवं अनुसन्धान केन्द्र परोपकारिणी सभा के संयुक्त प्रयास से वेदगोष्ठी का आयोजन किया जायेगा। इस गोष्ठी में देश के विविध विद्वान् अपने शोधपूर्ण मौलिक विचार प्रस्तुत करेंगे। इस वर्ष वेदगोष्ठी का विचारणीय बिन्दु है- **भारतीय मत सम्प्रदाय और वेद।** जो विद्वान् गोष्ठी में शोधपत्र प्रस्तुत करना चाहते हैं, वे ३० अक्टूबर तक सभा के पते पर प्रेषित करवा देवें। २०, २१, २२ नवम्बर को ऋषि बलिदान समारोह के कार्यक्रमों के साथ-साथ वेदगोष्ठी भी चलती रहेगी। ऋषि-भक्त इसे सुनने का लाभ उठा सकते हैं।

चतुर्वेद कण्ठस्थीकरण वेद प्रतियोगिता- प्रतिवर्ष आयोजित की जाने वाली इस प्रतियोगिता में २१ वर्ष तक के छात्र भाग ले सकते हैं। किसी भी वेद को आद्योपान्त स्मरण करके इस प्रतियोगिता में भाग लिया जा सकता है। जो छात्र जिस वेद पर गत वर्षों में पारितोषिक ग्रहण कर चुके हैं, वे उस वेद से अतिरिक्त वेद स्मरण करके भाग ले सकते हैं। २० नवम्बर को परीक्षा एवं २१ नवम्बर को पुरस्कार-वितरण का कार्यक्रम होगा। जो छात्र इस प्रतियोगिता में भाग लेना चाहते हैं, वे अपने-अपने गुरुकुलों, आश्रमों, संस्थानों से आचार्य द्वारा अधिकृत पत्रक पर २-छायाचित्र सहित अपना परिचय ३० अक्टूबर, २०१५ तक आचार्य महर्षि दयानन्द आर्ष गुरुकुल, ऋषि उद्यान, अजमेर के पते पर भेज दें।

सम्मान - प्रतिवर्ष विशिष्ट वैदिक विद्वान्, विदुषियों एवं कार्यकर्त्ताओं को इस समारोह में सम्मानित किया जाता है। इस वर्ष भी सम्मान -समारोह होगा। जिसमें अनेक विद्वान्-विदुषियों एवं कार्यकर्त्ताओं को सम्मानित किया जायेगा।

अक्टूबर के आरम्भ में अजमेर में हलकी ठंड होने लगती हैं, ऋषि उद्यान खुले में होने से सर्दी का प्रभाव कुछ अधिक रहेगा। रात्रि में कम्बल ओढ़ने जैसी ठण्ड रहेगी। जो समूह में रहना चाहते हैं, उनकी निवास व्यवस्था ऋषि उद्यान में होगी और जो अपने निवास की व्यवस्था होटल-धर्मशाला में करवाना चाहते हैं, कृपया वे सभा कार्यालय से पूर्व सम्पर्क कर अग्रिम राशि जमा करवा कर कमरा आरक्षित करवा लें।

सभी से विशेष निवेदन है कि अपने आने की सूचना कम से कम एक सप्ताह पूर्व दे देवें, जिससे संख्या का अनुमान होकर तदनुसार व्यवस्था की जा सके।

सभी से निवेदन है कि १३२ वें बलिदान समारोह में अपने परिवार व समाज के सभी कार्यकत्ताओं सहित पधार कर महर्षि को हार्दिक श्रद्धांजलि प्रदान करें, महर्षि दयानन्द के स्वप्न को साकार करने हेतु प्रेरणा उत्साह प्राप्त कर प्रचार-प्रसार को एक नई चेतना प्रदान करें।

ऋषि मेले में आमन्त्रित विद्वान्- प्रो. राजेन्द्र जिज्ञासु जी-अबोहर,आचार्य विजयपालजी-झज्जर, डॉ. ब्रह्ममुनि जी-महाराष्ट्र, डॉ. सुरेन्द्र कुमारजी, कुलपति गुरुकुल कांगड़ी विश्विद्यालय हरिद्वार, डॉ. वेदपाल जी-बडौत, आचार्या सूर्या देवी जी - शिवगंज, डॉ. राजेन्द्रजी विद्यालंकार, सत्येन्द्रसिंह जी- मेरठ, डॉ. कृष्णपाल सिंह जी- जयपुर, श्री सत्यानन्द आर्य- दिल्ली, श्री राजवीर जी-मुरादाबाद, श्री जगदीश जी शर्मा- जयपुर, श्री शिवकुमार जी चौधरी -इन्दौर, श्री जयदेव जी आर्य-राजकोट, श्री सत्यपाल जी पथिक, प. भूपेन्द्र सिंह जी, पं. कलानाथ शास्त्री -जयपुर, डॉ. जगदेव विद्यालंकार, पं. देवनारायण तिवाड़ी- कोलकाता, श्रीमती अमृत बहन- दिल्ली, श्री राकेश- अमृतसर, श्रीमती इन्दुपुरी-मोगा, आचार्य ओम्प्रकाश-आबूपर्वत, डॉ. रामनारायण शास्त्री- जोधपुर, डॉ. मुमुक्षु आर्य- दिल्ली, डॉ. नयन कुमार-परली महा., श्री माधव देशपाण्डे- मन्त्री महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा, पं. पूनमचन्द नागर- अहमदाबाद, डॉ. सच्चिदानन्द महापात्र- पुरी ओडिशा, डॉ. नरदेव गुड़े- लातूर, श्री विद्यामित्र ठकुराल- दिल्ली, श्री सुरेश अग्रवाल- प्रधान गुजरात आर्य प्रतिनिधि सभा, पं. रामचन्द्र- सोनीपत, डॉ. ओम्प्रकाश होलीकर- लातूर, स्वामी सुधानन्द- ओड़िशा, श्री सत्यवीर शास्त्री- रोहतक, डॉ. शिवदत्त पाण्डे- सुल्तानपुर, पं. धीरेन्द्र पाण्डे- जबलपुर, डॉ. सुकुमार आर्य- मैंगलूर कर्नाटक, डॉ. सुरेन्द्र- रोहतक, डॉ. धर्मवीर कुण्डू- हरियाणा, ब्र. नन्दकिशोर, डॉ. विरेन्द्र अलंकार-चण्डीगढ़, डॉ. सुरेन्द्र- चण्डीगढ़ आदि।

इस समारोह हेतु आपका आर्थिक सहयोग आयकर की धारा '८०-जी' के अन्तर्गत दिए गये प्रावधान के अनुरूप कर मुक्त होगा। विदेश में निवास कर रहे धर्मप्रेमी सज्जन स्वदेश में होने वाले इस समारोह हेतु मुक्त हस्त से दान देकर देश का गौरव बढ़ाएँ। सभा को भारतीय शासन द्वारा विदेशों से दानस्वरूप दी गई राशि को प्राप्त करने की छूट प्राप्त है। आपका सहयोग ही हमारा सम्बल है। शुभकामनाओं सहित।

गजानन्द आर्य प्रधान	धर्मवीर कार्यकारी प्रधान	ओम मुनि मन्त्री

कुछ तड़प-कुछ झड़प

- राजेन्द्र जिज्ञासु

अंधविश्वास और महाविनाश:- अभी-अभी आंध्र प्रदेश में गोदावरी नदी के तट पर अंधविश्वास की विनाश लीला का दुखद समाचार सुनकर कलेजा फटे जा रहा है । ऐसा कौनसा धर्म प्रेमी, जाति सेवक सहृदय व्यक्ति होगा जो प्रतिवर्ष अंधविश्वास की विनाश लीला से थोक के भाव हिन्दुओं की मौत पर रक्तरोदन न करता होगा? मीडिया इन मौतों के लिए उत्तरदायी कौन? इस प्रश्न का उत्तर पाने का कर्मकाण्ड करने में जुट जाता है। परोपकारी प्रत्येक ऐसी दुर्घटना पर अश्रुपात करते हुए हिन्दू जाति को अधंविश्वासों व भेड़चाल से सावधान करता चला आ रहा है। सस्ती मुक्ति पाने की होड़ में ये दुर्घटनायें होती हैं। अष्टांग योग का, श्रेष्ठाचरण का, स्वाध्याय, सत्संग, सत्कर्म, मन की शुद्धता का मार्ग अति कठिन है। नदी, पेड, जड़, स्थल व मुर्दों की पूजा यह पगडण्डी बड़ी सरल है। आर्य समाज की न सुनने से सस्ती मुक्ति तो मिलने से रही परन्तु, क्या हिन्दू जाति के शुभ चिन्तक सोचेंगे कि इससे हिन्दुओं के लिए मौत तो बहुत सस्ती हो गई।

जाति के लिए रो-रो कर हमारे नयनों में तो अब नीर भी नहीं रहे। अदूरदर्शी हिन्दू संस्थायें ऐसी सब यात्राओं के लिये लंगर लगवा कर इन्हें प्रोत्साहन देती हैं। कॉवड़िये दुर्घटना ग्रस्त होते हैं। अमरनाथ यात्री मरते हैं, कृपालु महाराज के भक्त मौत का ग्रास बने। हिन्दू नेताओं ने इन दुर्घटनाओं को रोकने के लिए कभी कुछ सोचा? योग का शोर मचाने वालों ने कभी सोचा कि नदियों में डुबकी लगाने व पर्वत यात्रा का योग विद्या से दूर-दूर का भी सम्बन्ध नहीं। वेद, उपनिषद्, दर्शन साहित्य तथा गायत्री मन्त्र, प्रणव जप का इन यात्रियों को सन्देश, उपदेश तो कभी दिया नहीं जाता। बस भीड़ देखकर सब हिन्दू संस्थायें गद्गद् हो जाती है। आर्य समाज की तो सुनने से पूर्वाग्रह ग्रस्त तथा कथित नेता व गुरु कतराते हैं। ये लोग श्री कबीरजी, सन्त तुकाराम व गुरु गोविन्दसिंह की ही सुन लें तो बार-बार रोना न पड़े।

आत्मा का स्वाभाविक गुण-एक नई खोज:- गुजरात यात्रा से लौटते ही फरीदाबाद के एक सज्जन ने प्रश्न पूछ लिया कि क्या धर्म आत्मा का स्वाभाविक गुण है? इस प्रश्न को सुनकर मैं चौंक पड़ा। अपने को आर्य बताने वाला व्यक्ति यह क्या कह रहा है। प्रश्न क्या मेरे लिए तो यह बिजली का झटका सा था। उसी ने बताया कि यह कथन मेरा नहीं। किसी और ने ऐसा लिखा है। मैं तो इस पर आपका विचार जानना चाहता हूँ।

मैंने निवेदन किया कि मेरा विचार तो वही है जो वेद मन्त्रों में मिलता है। जो ऋषि मुनि कहते हैं, मैं वही मानता हूँ। उक्त कथन तो वैसा ही लगता है जैसे तूफान में आई नदी किनारे तोड़कर बाढ का दृश्य उपस्थित कर दे। उसे कहा, अरे भाई यदि धर्म आत्मा का स्वाभाविक गुण होता तो परमात्मा को वेद ज्ञान देने की क्या आवश्यकता थी? फिर गायत्री मन्त्र तथा शिव सङ्कल्प मन्त्रों, प्रार्थना मन्त्रों का प्रयोजन व महत्व ही समाप्त हो जाता है।

सत्यार्थ प्रकाश की भूमिका तो पढ़िये। ऋषि एक सूक्ष्म सत्य का प्रकाश करते हैं, "मनुष्य का आत्मा सत्यासत्य का जानने वाला है, तथापि अपने प्रयोजन की सिद्धि हठ दुराग्रह और अविद्या दोषों से सत्य को छोड़ असत्य में झुक जाता है।"

ऋषि के इन मार्मिक शब्दों को सुनकर प्रश्नकर्त्ता भाई तृप्त हो गया। इस विषय में और कुछ लिखने की आवश्यकता ही नहीं।

परोपकारिणी सभा का शोध काय:- डॉ. वेदपाल जी सरीखे वेदज्ञ तथा कई अन्य विद्वान् हाथ पर हाथ धरे तो बैठे नहीं रहते। पूरा वर्ष शोध व धर्म प्रचार करते रहते हैं। सभा के इस सेवक की दिनचर्या ढाई तीन बजे प्रातः आरम्भ हो जाती है। शोध व लेखन कार्य छह और सात बजे के बीच आरम्भ हो जाता है। सागर पार के देशों से महर्षि के जीवन सम्बन्धी पर्याप्त नई सामग्री पर परोपकारिणी सभा के लिए अपना नयी अनूठी परियोजना से कुछ लिखने की तैयारी करके बैठा ही था कि परमात्मा की कृपा वृष्टि से और नये-नये दस्तावेज पहुँच गये हैं। आर्य जगत् को क्या-क्या बातऊँ? क्या-क्या मिला है? यह तो आर्य जन नये ग्रन्थ में ही पढ़ेंगे।

अभी तो इतना ही बता सकता हूँ कि विदेशियों व विधर्मियों द्वारा महर्षि के व्यक्तित्व व उपलब्धियों पर प्राण

वीर पं. लेखराम के पश्चात् प्रचुर सामग्री फिर हमारे हाथ ही लगी है। आर्य समाज की स्थापना से भी पूर्व सन् १८७० में इंगलैण्ड के एक पत्र में यह छपा मिला है कि यह वेदज्ञ काशी में डंका बजा रहा है। इसका सामना करने का किसी को साहस नहीं है। इसका सामना करने का किसी को साहस नहीं है। भारत में एक विदेशी बिशप के पत्र से पता चलता है कि स्वामी दयानन्द के प्रादुर्भाव से उसकी सभाओं में भीड़ घट गई है। स्वामी दयानन्द सबके लिए आकर्षण का केन्द्र है।

जब सक्रिय समाजों की संख्या मात्र २२-२४ थी तब महर्षि रेवाड़ी पधारे। न जाने रेवाड़ी क्षेत्र यादवों में क्या चेतना का संचार हुआ कि सागर पार के देशों में ऋषि के मिशन व वैचारिक क्रान्ति पर लम्बे-लम्बे लेख छपने लगे। अदूरदर्शी हिन्दू समाज तो ऋषि मूल्यांकन न कर पाया। गोरी जातियों ने ताड़ लिया कि पाषाण पूजा के इस सबसे बड़े शत्रु, एकेश्वरवाद के महान् सन्देशवाहक स्वामी दयानन्द का यह मिशन सरकार के संरक्षण व सहयोग के बिना ही फूलेगा फलेगा। बंगाल, मद्रास के पश्चात् चर्च की, साम्राज्यवादियों की गिद्ध की दृष्टि छत्रपति शिवाजी के प्रदेश पर केन्द्रित थी। दस्तावेज जो अभी-अभी हाथ लगे हैं, उनसे पता चलता है कि श्री महाराज के मुम्बई पहुँचते ही गोरों को प्रार्थना समाज व ब्राह्म समाज की चिन्ता सताने लगी। कारण? वे खुलकर यह स्वीकर करते थे कि ऋषि से पहले की ये संस्थायें व संगठन ईसाइयत की और पश्चिम की पैदावार (देन) हैं परन्तु, स्वामी दयानन्द न तो अंग्रेजी जाने और न कभी अमरीका और लंदन की यात्रा की। कोई विदेशी भाषा वह न जाने।

यह सुधारक विचारक तो वेदज्ञ है। वेद को ही स्वत: प्रमाण मानता है। यह विशुद्ध भारतीय हिन्दू आन्दोलन है। यह सार्वभौमिक धर्म को मानने वाला प्रखर राष्ट्रवादी निर्भीक, निर्भीड़ सत्यवक्ता है। अमरीका के ....में सन् १८६८ में मेरे ऋषि का भव्य फोटो छपा। यह आर्य समाज का शैशव काल था। तब तक किसी भारतीय सुधारक, विचारक का अमरीका में फोटो नहीं छपा था। ऋषि न तो शिकागो गया और न न्यूयार्क ही गया। अंगेजी वह जानता नहीं था।

जिस सामग्री (मत पंथों के बारे) में अस्सी वर्ष से हमारे पूर्वज खोज कर रहे थे, वह भी मेरे पास पहुँच गई है। इसमें हमारी क्या बड़ाई है यह तो पं. लेखराम, पं. गणपति शर्मा, स्वामी दर्शनानन्द, पं. रामचन्द्र देहलवी से लेकर पं. शान्तिप्रकाश तक की सतत साधना का प्रसाद है जो परोपकारिणी सभा आर्य जाति को परोसने वाली है।

गुजरात यात्रा में कई एक ने बड़ी श्रद्धा से मुझ पर दबाव बनाया कि ऋषि मेला तक इस ग्रन्थ का विमोचन हो जाना चाहिये। मैंने उत्तर में कहा कि मैं श्रद्धा से भरपूर हृदय से सोच विचार कर इस ग्रन्थ का सृजन करुँगा। दिन रात मेरे मस्तिष्क में यही ग्रन्थ अब घूमता है। हडबड़ी में, शीघ्रता से कुछ नहीं करुँगा। परोपकारिणी सभा इसके महत्त्व को समझती है। यदि ऋषि मेला तक इसका विमोचन न हो सका तो एक विशेष महोत्सव करके पं. लेखराम जी के ११९ वें बलिदान पर्व पर इसका विमोचन करवाने की मैं आर्य जगत् से भिक्षा मागूँगा । लौकैषणा और वित्तैषणा से बहुत ऊपर उठकर जिस आर्यवीर ने अपने साथियों से मिलकेर इस सामग्री की खोज का ऐतिहासिक कार्य किया है उसका परिचय किसी अगले अंक में दिया जायेगा।

एक शंका का उत्तर:- परोपकारी के एक अंक में भुज कच्छ (गुजरात) के राजा के निधन पर महर्षि का एक पत्र सम्पादकीय टिप्पणी सहित छपा है। इसके सम्बन्ध में श्री युत् भावेश जी मेरजा ने शंका की कि सम्पादकीय टिप्पणी में जो निष्कर्ष निकाला गया है, पत्र से तो वह प्रमाणित नहीं होता। मैंने उनको यह प्रश्न उठाने के लिए धन्यवाद दिया। वह सूझबूझ वाले युवक हैं। मैंने कहा कि इस पत्र के ऐतिहासिक महत्त्व की साक्षी की आवश्यकता ही नहीं। पत्र डाक से नहीं भेजा गया। क्या वह इसकी गोपनीयता व महत्त्व का कोई छोटा प्रमाण है?

दो व्यक्तियों के नाम संयुक्त पत्र इसकी महत्ता का दूसरा प्रमाण है।

पत्रवाहक दोनों महानुभावों को पत्र पढ़वाने जाता है। यह इसकी महत्ता का तीसरा प्रमाण है।

ऋषि बड़ौदा की घटना से परिचित थे। उस पर उनका पत्र पढ़िये। फिर सम्पादकीय टिप्पणी पर विचारिये।

सनातन धर्मी नेता श्री पं. गंगाप्रसाद शास्त्री की पुस्तक के उद्धरण मेरे ग्रन्थ में पढ़िये। महाराजा रणजीतसिंह के अवयस्क पुत्र दिलीप सिंह को पादरी नीलकण्ठ ने ईसाई बनाया। दिलीप सिंह को गोरे इंग्लैण्ड ले गये। पं. गंगाप्रसाद ने लिखा है कि इस ब्राह्मण पादरी को काशी, प्रयाग, मथुरा

के ब्राह्मण तीर्थों पर न रोक सके। स्वामी दयानन्द के शिष्यों का भी सामना न कर सका। महाराष्ट्र से गुजरात का भुज कच्छ दूर नहीं। यह वहाँ के राजा को ईसाई बना देता। जालंधर में गोरा शाही की न्यायपालिका की धाँधली पर महर्षि का व्याख्यान पढ़कर उसके प्रकाश में इस पत्र की ऐतिहासिक महत्ता को समझें। परोपकारी की टिप्पणी में ये सब बातें नहीं दी जा सकती थीं। जालंधर का ऋषि का भाषण केवल पं. लेंखराम जी तथा लक्ष्मण जी के ग्रन्थ में ही मिलेगा। निडर प्रखर राष्ट्रवादी दयानन्द का यह निराला रूप कोई इतिहासकार ही समझ सकता है। यह व्याख्यान क्रान्ति का बिगुल था। तनिक पढ़िये तो।

हर्ष का विषय है कि श्री भावेश जी को यह प्रसंग समझ में आ गया। आर्य जन इस पत्र का विशेष प्रचार करें। यह स्वराज्य आन्दोलन का एक नींव पत्थर है।

श्री दयालमुनि जी से चर्चा:- श्री धर्मवीर जी के साथ सभा के सब विद्वान् मान्य दयालमुनि जी के निवास पर टंकारा गये। उनसे हमने विचार विमर्श किया। एक प्रश्न पूछा, क्या आपकी जानकारी में ऋषि ने कभी किसी राजा, महाराजा से मिलने, बातचीत करने के लिये समय मांगा? क्या बिना बुलाये ऋषि किसी राजा महाराजा से मिलने गये? आपने कहा, ''इस विषय में मुझे कोई जानकारी नहीं है।''

तब मैंने उन्हें बताया कि मुम्बई में मोरबी के राजा वाघजी ने उनकी सभा की अध्यक्षता की। व्याख्यान समाप्त होते ही महाराजा चलने लगे तो महर्षि ने उन्हें रोक कर कहा, ''यह जो कुछ आपने सुना है यह आप ही का है। मैं आपकी प्रजा हूँ।''यह घटना सर्वविदित है। इस पर मैं अपनी टिप्पणी फिर दूँगा। बस किसी महाराजा से बातचीत की इच्छा अपवाद रूप में यही है।

दयालमुनि जी की हिन्दी पुस्तक:- दयालमुनि जी ने महर्षि के आरम्भिक जीवन पर पठनीय खोज करके कई गुत्थियाँ सुलझाई हैं। मैं उनके पीछे लगा रहा कि इसे हिन्दी में छपवा दो। भावेशजी से भी इसे हिन्दी में करने का अनुरोध किया। श्री डॉ. रामप्रकाश जी ने इसे छपवाकर एक करणीय कार्य कर दिया है। मेरे द्वारा अनूदित ग्रन्थ में राजा लखबीर सिंह और श्री वाघजी विषयक जो गड़बड़ हो गई मैं पहले ही उसका सुधार कर चुका था । दयालमुनि जी तथा भावेश जी इस शुभ कार्य के लिये बधाई के पात्र हैं। डॉ. रामप्रकाश जी भी टंकारा दयालमुनि जी से मिलने गये। श्रीमती जिज्ञासु जब टंकारा गई तो मैंने उन्हें दो बातें कही थीं। टंकारा ट्रस्ट जब जायें तो कुछ दान वहाँ अवश्य देते आना। मान्य दयालमुनि जी के घर पर जाकर उनके दर्शन करके आना। उन्हें वहाँ जाकर बहुत प्रसन्नता हुई।

गुजरात यात्रा में टंकारा उपदेशक विद्यालय की सभा में परोपकारिणी सभा ने श्रीमान् डॉ. राजेश जी कालीकट द्वारा महर्षि की एक पुस्तक के मलयालम अनुवाद का दयालमुनि जी से ही विमोचन करवाया। केरल से श्री अरुण प्रभाकरजी इस यात्रा में केरल का प्रतिनिधित्व करने पहुँचे थे। यह बहुत आनन्ददायक बात रही।

कुछ तड़प कुछ झड़प ग्रन्थमाला:- परोपकारी के अनेक पाठकों ने समय-समय पर इस लेखक को '**कुछ तड़प कुछ झड़प** ' स्तम्भ की प्रकाशित मणियों को ग्रन्थ माला के रूप में नये सिरे से सम्पादित करके प्रकाशित करने का अनुरोध किया। मैं अपनी व्यस्तताओं के कारण ऐसा न कर सका। गुजरात की यात्रा में भी कई एक ने यह माँग की। अबोहर लौटने पर १४ जुलाई को साहित्य अनुरागी मान्य सत्यपाल सिंह जी आर्य मुरादनगर ने फिर यही माँग दुहराई। बांरा राजस्थान के आर्य भाई नारायण ने गत कई वर्षों के अंक इस हेतु सम्भाल रखे हैं। इस वर्ष मैं यह कार्य आरम्भ कर दूँगा। जो काँट-छाँट, घटा बढी करनी होगी वह सब कर दूँगा । मुद्रण दोष भी जो हो गये सब दूर कर दिये जायेंगे। विस्तृत विषय सूची व निर्देशिका के साथ इसे जन-जन के लिए उपयोगी बना दिया जावेगा। उद्धृत तर्कों व प्रमाणों के सब अते पते दे दिये जायेंगे। आर्यसमाज के साहित्य में यह ग्रन्थमाला अपनी शैली की स्थायी महत्त्व की वृद्धि होगी। भले ही कुछ एक पंथाई लोगों तथा.........के लिये यह स्तम्भ बड़ा गर्म सा है परन्तु, इसे पढ़ते सभी हैं। गुजरात यात्रा में सर्वत्र परोपकारी के पाठक यही कहते। यह मेरा सौभाग्य! मैं पन्द्रह दिन तक पाठकों की, प्रेमियों की मांगें नोट करके कुछ एक को चुनकर चिन्तन मनन करके सप्रमाण सब कुछ लिखता हूँ। मेरे विरोधी भी (विधर्मी भी) मेरी लेखन शैली व प्रामाणिक लेखन का लोहा मानते हैं। मेरा लेखन कच्चा होता तो अब तक मुझ पर कई अभियोग चले होते। मैं जेल में होता। आर्य समाजेतर जाति प्रेमी, राष्ट्रवादी तथा विधर्मी भी मेरे नियमित पाठक हैं। परोपकारी की लोकप्रियता का एक

मुख्य कारण इसका सम्पादकीय होता है। धर्म प्रेमी जाति सेवक मेरे स्तम्भ में वर्णित पुस्तकों के अते-पते सदा पूछते रहते हैं। मैं हर दृष्टि से इस ग्रन्थ माला को उपयोगी व पठनीय बनाऊँगा। धर्म रक्षा, जाति रक्षा व राष्ट्र रक्षा के लिए यह ग्रन्थमाला कुल्लियाते आर्य मुसाफिर, दर्शनानन्द ग्रन्थ संग्रह तथा उपाध्याय जी की ट्रैक्टमाला सदृश आर्यों का शास्त्रागार सिद्ध होगी।

हास्यास्पद कुतर्क:- जोधपुर के कर्नल प्रताप सिंह को महिमा मण्डित करते हुए यह लिखा गया है कि देखो। ऋषि जी ने अपने पत्र में उसकी प्रशंसा की है। मनुष्यों के पारखी महात्मा हंसराज उसका सन्मान करते थे। इस विषय में कई एक ने मुझसे चर्चा करते हुए प्रश्न पूछे। मेरा निवेदन है कि अन्त भला सो भला जानिये। ऐसा पूज्य स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी की सीख थी। साधु सरलता से प्रत्येक को भला व सज्जन मान बैठते हैं। समय आने पर अनेक ऐसे व्यक्ति खोटे व छलिये निकलते हैं। ऋषि जी ने मूलराज, कर्नल ऑलकाट, ब्लवट्स्की, मोहनलाल, विष्णुलाल पण्डिया को भी भला सज्जन, धर्मात्मा समझा था। मुंशी इन्द्रमणि को ऋषि ने सज्जन ही जाना। महात्मा हंसराज ने विश्वबंधु शास्त्री पर पं. भगवद्दत्त से नररत्न को वार दिया। ला. लाजपतराय जी को विपत्ति के समय ईंटों पर (कॉलेज) वारा या नहीं? सो ये सब कुछ कुतर्क है।

यह क्या छिपाया जा रहा है कि ऋषि जी को मृत्यु शय्या पर छोड़कर प्रताप सिंह जूआ खेलने पूना चाल गया। ऋषि को विष दिये जाने पर वह पता करने कब कितने दिन बाद पहुँचा? यह प्रश्न उसके प्रशंसक ला. दीवानचन्दजी ने उठाया है। कोई आगे आकर उत्तर तो दे। अवध रीव्यू में छपवाई गई उसकी जीवनी में ऋषि का नाम तक कोई दिखावे। श्री राधाकिशन के पोथे में (प्रतापसिंह की आत्मकथा) ऋषि के जोधपुर आगमन पर कुछ लिख दिखावे।कर्नल की भक्ति की मस्ती में आर्यसमाज की हुँकार को विसार कर कर्नल प्रताप सिंह के तुल्य गोराशाही का चापलूस बताना अनर्थकारी है। इस पर कभी फिर लिख जावेगा।

- वेद सदन, अबोहर-१५२११६

यज्ञ आदि व्यवहारों के बिना गृहाश्रम में सुख नहीं होता।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.५९

ऋषि मेला २०१५ हेतु स्टॉल आवंटन

प्रति वर्ष की भांति इस वर्ष ऋषि मेला २०,२१,२२ नवम्बर शुक्र, शनि, रविवार २०१५ को ऋषि उद्यान में आयोजित होगा। उसमें आर्य जगत् का साहित्य, हवन सामग्री, अन्यान्य सामग्री की स्टॉलें लगती हैं। प्रति स्टॉल किराया १००० रु. निर्धारित है। जिसकी राशि पहले जमा होगी उस क्रम से स्टॉलों का आवंटन होगा। जिन महानुभावों को जितनी स्टॉलों की आवश्यकता है, उसी अनुरूप राशि बैंक ड्राफ्ट द्वारा या नकद जमा करावें।

स्टॉल सुविधा:- कारपेट, दो टेबल, दो कुर्सी, २ ट्यूब लाईट प्रति स्टॉल। **स्टॉल साइज**- ७.५×१५ फीट।

ध्यातव्य: - १. स्टॉल में रखी टेबल, कुर्सी आदि पूर्व निर्धारित सामग्री को इधर-उधर या अन्य स्टॉल में न बदलें। २. अतिरिक्त सामग्री की आवश्यकता हो तो टेन्ट हाउस के कर्मचारी से सम्पर्क कर प्राप्त करें तथा निर्धारित राशि तुरन्त भुगतान करें। ३. बिस्तर रजाई, चादर, तकिया को टेन्ट हाउस कर्मचारी से प्राप्त कर निर्धारित राशि जमा करा दें। ४. स्टॉल व्यवस्थापक से स्टॉल संख्या, राशि की रसीद दिखाकर प्राप्त करें। बिना पूर्व अनुमति के स्टॉलों में सामान न रखें, न अधिकृत करें। ५. आपके सक्रिय सहयोग व अनुशासन की अपेक्षा है। अनियमितता को स्थान न देवें।

ईश्वर का आश्रय न करके कोई भी मनुष्य प्रजा की रक्षा नहीं कर सकता। जैसे ईश्वर सनातन न्याय का आश्रय करके सब जीवों को सुख देता है वैसे ही राजा को भी चाहिये कि प्रजा को अपनी न्याय व्यवस्था से सुख देवे।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ७.३९

जब तक सब की रक्षा करने वाला धार्मिक राजा वा आप्त विद्वान् न हो तब तक विद्या और मोक्ष के साधनों को निर्विघ्नता से पाने के योग्य कोई भी मनुष्य नहीं होता है और न मोक्षसुख से अधिक कोई सुख है।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.५२

(परोपकारिणी सभा द्वारा संचालित)

योग–साधना शिविर

दिनांक : २५ अक्टूबर से ०१ नवम्बर, २०१५

आज समाज के अनेक क्षेत्रों में अनेक प्रकार से लोग साधना के लिए प्रयासरत हो रहे हैं। अनेक प्रशिक्षकों द्वारा इस विषयक ज्ञान-विज्ञान भी प्रदान किया जा रहा है। फिर भी साधकों को साधना की सन्तुष्टिदायक स्थिति प्राप्त नहीं हो पा रही है। इसका कारण है कि साधना के विषय **साध्य, साधन, साधक व अन्य साधकों-बाधकों** के ज्ञान का वैदिक परम्परा से दूर होना। इस योग-साधना शिविर में इन्हीं विषयों का वैदिक-दर्शनों के द्वारा ज्ञान करवाया जायेगा, उससे सम्बन्धित जिज्ञासाओं का समाधान व आत्मनिरीक्षण के द्वारा अपनी उन्नति का मापदण्ड बताया जायेगा। यह शिविर अवश्य ही आपकी साधना की उन्नति में विशेष साधन बनेगा, जिससे कि मानव जीवन के मुख्य व चरम लक्ष्य की प्राप्ति उत्तरोत्तर काल में आप अपने निकट अनुभव करने लगेंगे।

प्रार्थियों हेतु नियम व अनुशासन

१. प्रत्येक प्रार्थी के लिए पूर्ण मौन अनिवार्य होगा।
२. शिविर के काल में किसी साधक के द्वारा नियम व अनुशासन भंग करने पर उसे शिविर के मध्य में ही शिविर छोड़ने के लिए बाध्य किया जा सकता है।
३. पूरे शिविर में साधक के द्वारा किसी भी माध्यम से बाह्य-सम्पर्क करना निषिद्ध रहेगा।
४. शिविर काल में किसी भी साधक को ऋषि उद्यान परिसर से बाहर जाने की अनुमति नहीं होगी।
५. साधकों की मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति ऋषि-उद्यान परिसर में ही की जायेगी।
६. बाह्य-वृत्ति उत्पादक साधनों जैसे समाचार-पत्र पढ़ना, आकाशवाणी श्रवण व दूरदर्शन देखना, पर पूर्ण प्रतिबन्ध रहेगा।
७. किसी प्रकार का शारीरिक रोग यथा सर्दी, खाँसी, जुकाम अथवा अन्य कोई ध्वनि उत्पादक रोग वाले को प्रवेश नहीं दिया जायेगा।
८. बच्चों को साथ लाये जाने पर प्रार्थी को शिविर में प्रवेश नहीं दिया जाएगा।
९. किसी भी मादक द्रव्य, चाय-कॉफी आदि का सेवन निषिद्ध होगा।
१०. शिविर के प्रारम्भ दिन से लेकर समापन-सत्र पर्यन्त पूर्ण रूप से शिविर में भाग लेना अनिवार्य होगा।
११. नियम व अनुशासन के पालन को आवेदन में ही लिखित स्वीकार करना होगा।

उपरिलिखित किसी भी नियम व अनुशासन का पालन करने में असमर्थ व अयोग्य प्रार्थी को शिविर में प्रवेश नहीं दिया जायेगा।

प्रार्थियों के लिए सूचनाएँ-मन्त्री परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर (राज.) से संपर्क कर शिविर से पूर्व शुल्क जमा करवा कर अपने नाम का पंजीयन करा लें। शिविर में माता-बहिनें भी भाग ले सकती हैं। पुरुषों एवं महिलाओं के आवास की सामूहिक व्यवस्था पृथक्-पृथक् की जाती है। पृथक् कक्ष चाहने वालों को अतिरिक्त शुल्क १००० से २००० रु. देय होता है। पृथक् कक्ष की व्यवस्था पूर्व सूचना व उपलब्धता के अनुसार की जाती है। ऋषि उद्यान में दरी, गद्दे, तकिए एवं बर्तन उपलब्ध हैं शेष दैनिक उपयोग की वस्तुएँ यथा मंजन, ब्रश, साबुन, तेल, दवाएँ, बिछाने-ओढ़ने की चादरें, लिखने के लिए संचिका (नोटबुक), लेखनी, करदीप (टार्च) आदि को साधक अपने साथ लाएँ। वस्त्र सादगी एवं शिष्टाचार के अनुकूल हों, आभूषणों एवं सुगन्धित द्रव्यों का उपयोग न हो। आपके पास योगदर्शन हो तो साथ लाएँ अन्यथा यहाँ भी क्रय किया जा सकता है। सतर्कता की दृष्टि से कीमती वस्तुएँ साथ न लायें। यदि आपको कोई संक्रामक रोग, तेज खांसी, दमा, मिर्गी आदि मानसिक रोग, वायु विकार या अन्य गंभीर रोग हो, तो कृपया शिविर में आना स्थगित रखें। यदि अपने कार्य स्वयं न कर सकते हों तो सहायक साथ

में लायें। अजमेर या निकटवर्ती स्थल (पुष्कर) देखना चाहें, तो शिविर से पूर्व या पश्चात् अतिरिक्त समय निकाल कर आयें। लौटने का रेल-आरक्षण शिविर में आने से पूर्व करवा लें। अजमेर पहुँचने की सूचना घर पर देनी हो तो शिविर स्थल में प्रवेश से पहले दे देवें। खाने पीने की वस्तुएँ साथ न लावें।

यह शिविर परोपकारिणी सभा, अजमेर के सौजन्य से आयोजित किया जा रहा है। शिविर शुल्क १००० रु. मात्र जमा करना होगा। शिविर में भाग लेने वालों को शिविर के प्रारंभ दिनांक को सायं चार बजे तक शिविर स्थल ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर में पहुँच जाना आवश्यक है क्योंकि इसी दिन शाम को शिविर के अनुशासन एवं विभिन्न व्यवस्थाओं संबन्धी महत्त्वपूर्ण सूचनाएँ दी जाएँगी। शिविर का समापन अन्तिम दिन दोपहर एक बजे तक होगा। शिविर समाप्ति से पूर्व जाने की अनुमति नहीं दी जायेगी।

शिविर से आपका जीवन श्रेष्ठतर व पवित्रतर बने, इन्हीं शुभकामनाओं के साथ।

मन्त्री, परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर दूरभाष : ०१४५-२४६०१६४
email:psabhaa@gmail.com

(: मार्ग :)

ऋषि उद्यान शिविर स्थल पर पहुंचने के लिए फॉयसागर की ओर जाने वाली सिटी बस या ऑटो-रिक्शा, रेल्वे स्टेशन व बस स्टेण्ड से (वाया-आगरा गेट/फव्वारा चौराहा) सर्वदा सुलभ रहते हैं।

-संयोजक

धनराशि भेजने हेतु सूचना

चैक, ड्राफ्ट, धनादेश (मनीआर्डर) द्वारा राशि भेजने वाले उस पर '**मन्त्री परोपकारिणी सभा**' अवश्य लिख दें। दानी महानुभाव ऑनलाइन भी राशि जमा करवा सकते हैं। भारतीय स्टेट बैंक में एक सहस्त्र तक की राशि जमा कराने वाले **२५ रु. बैंक सेवा शुल्क के रूप में अतिरिक्त** जमा करवाने की कृपा करें। कृपया राशि निम्नांकित बैंकों में ऑनलाइन भिजवाकर, जमा कराई गई स्लिप के साथ उद्देश्य लिखकर सभा कार्यालय को सूचित करवाने का कष्ट करें।

खाताधारक का नाम - परोपकारिणी सभा, अजमेर

१. बैंक बचत खाता (Savings) संख्या-091104000057530 बैंक का नाम-आई.डी.बी.आई. बैंक, पावरहाउस के सामने, जयपुर रोड, अजमेर।
IFSC - IBKL0000091

२. बैंक बचत खाता (Savings) संख्या - 10158172715 बैंक का नाम - भारतीय स्टेट बैंक, डिग्गी बाजार, अजमेर।
IFSC - SBIN0007959

मनुष्यों को उचित है कि परमेश्वर में ही मन बुद्धि को युक्त कर विद्वानों के सङ्ग से विद्या को पा सुखी हो अन्य मनुष्यों को भी इसी प्रकार आनन्दित करें।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ५.१४

जैसे विद्वान् लोग ईश्वर की सृष्टि में विद्या से पदार्थों की परीक्षा करके कार्य्यों में उपयोग कर सुखों को प्राप्त करते हैं वैसे ही सब मनुष्यों को इस यज्ञ का अनुष्ठान कर सब सुखों को पहुँचाना चाहिये।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ५.२२

परोपकारी के सुधी पाठकों के लिए आवश्यक सूचना

परोपकारी शुल्क भेजते समय नये या पुराने ग्राहक के उल्लेख के साथ-साथ ग्राहक संख्या अवश्य लिखें अन्यथा व्यक्ति के नाम से शुल्क जमा करने में कठिनाई आती है। फलस्वरूप पाठकों के पास पत्रिका नहीं पहुँच पाती है। ऐसे ही अपना नाम हटवाते व जुड़वाते समय दूरभाष संख्या सहित अपना पूरा विवरण लिखकर भेजें। ई.एम.ओ. के द्वारा शुल्क भेजने वाले ग्राहक भी सन्देश के साथ अपनी ग्राहक संख्या सहित पूरा विवरण भेजें। परोपकारिणी सभा आप सभी का सहयोग चाहती है।

यू-ट्यूब पर वीडियो प्रवचन उपलब्ध

वेद एवं आर्ष साहित्य में रुचि रखने वाले आर्यजगत् एवं धार्मिक जनों को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि अब यू-ट्यूब पर अनेक वैदिक आर्य विद्वानों के सैंकड़ों नये-नये प्रवचन उपलब्ध हैं। विश्व में कहीं पर भी इन्टरनेट से जुड़ कर ये प्रवचन निःशुल्क सुने-देखे तथा डाउनलोड किये जा सकते हैं। आप जहाँ भी हैं, यदि आपको वैदिक आर्ष ज्ञान की पिपासा है, वेद एवं आर्ष ग्रन्थों के स्वाध्याय के साथ आप इन पर विद्वानों के प्रवचन भी सुनना चाहते हैं, तो इन्टरनेट से जुड़ कर सरलता से सुन सकते हैं।

इसके लिए you tube पर जाकर playlist of paropkarini sabha लिख कर सर्च करें, तो आपको अनेक प्लेलिस्ट मिलेंगी, यथा- वेद प्रवचन, योग दर्शन, ईशोपनिषद् आदि। इनमें इच्छानुसार जाकर लाभ उठाया जा सकता है। आप अपने परिचितों को यह सूचना देकर उन्हें भी लाभ उठाने को प्रेरित कर सकते हैं। भविष्य में अन्य भी नये-नये प्रवचन इस सूची में उपलब्ध कराये जाते रहेंगे।

अतिथि यज्ञ के होताओं से अनुरोध

अतिथि यज्ञ के होताओं से उनकी वैवाहिक वर्षगांठ अथवा जन्मदिन व विभिन्न अवसरों पर ५१०० रु. प्रतिवर्ष सभा को प्राप्त होते रहते हैं। जो महानुभाव संकल्प के साथ इस पुनीत कार्य से जुड़े हुए हैं, उनसे हमारा अनुरोध है कि वे अपनी राशि भेजते समय जन्म तिथि/वैवाहिक वर्षगांठ आदि व दूरभाष संख्या स ूचित करना न भूलें। साथ ही यह भी अवश्य सूचित करा देवें कि पहले से भिजवा रहे हैं अथवा नया शुरू किया है। आप अपनी राशि सभा के बैंक खाते में नगद अथवा चैक द्वारा जमा करा सकते हैं।

जैसे मेघ वर्षा समय में अपने जल के समूह से सब पदार्थों को तृप्त करता हुआ उन्नति देता है वैसे ईश्वर भी योगाभ्यास करने वाले योगी पुरुष के योग को अत्यन्त बढ़ाता है।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ७.४०

वैचारिक क्रान्ति के लिए सत्यार्थ प्रकाश पढ़ें।

अमर हुतात्मा श्रद्धेय भक्त फूल सिंह के ७४ वें बलिदान दिवस पर

- चन्दराम आर्य

पिछले अंक का शेष भाग......

बरकत अली को उसकी नीचता का उचित दण्ड:- बुवाना लाखू के पटवारी बरकत अली और गिरदावर को उनकी इस नीचता का दण्ड देने के लिए आपने अपने छोटे भाई चौधरी रिछुराम को अपने पास बुलाया और अपना सारा हिसाब किताब उनको समझा दिया। आप उन दोनों नराधमों को संसार से मिटाने के लिए उद्यत हो गये। उसी समय एक पत्रवाहक एक पत्र लेकर आपके सामने उपस्थित हुआ वह पत्र उसने आपको दिया। आपने उसे पढ़ा। वह एक आर्य समाजी जिलेदार का था, जिसमें उसने लिखा था आप अत्यावश्यक कार्य छोड़ कर मुझ से मिलें। वे तुरन्त उनसे मिलने चले गये। दोनों की परस्पर आवश्यक बातें हुई। बातों-बातों में आपने दोनों यवनों को मारने का अपना निश्चय भी बतलाया। जिलेदार ने पटवारी फूल सिंह को समझाते हुए कहा- पटवारी जी, शत्रु से प्रतिकार लेने का यह उत्तम उपाय नहीं है। आप एकदम पटवार का अवकाश स्थगित करा लीजिए। कागजात सम्भाल कर बरकत अली से ले लीजिए वह कहीं न कहीं गलती में अवश्य फंसा मिलेगा उस चोट से उस पर प्रहार कीजिये जिस चोट को वह जीवन भर स्मरण रखे। ऐसा करने पर आपको एक पत्र मिल गया जिसमें अब्दुल हक गिरदावर ने लिखा था कि पटवारी जी मुझे गाँव वालों से गाय दिलाओ, रूपये दिलाओ इत्यादि। उचित समय पाकर आपने उन पर मुकदमा दायर कर दिया और अपने पक्ष के सही कागजात अदालत में उपस्थित कर दिये। इसका परिणाम वही हुआ जो आप चाहते थे। अपराधी सिद्ध होने पर दोनों ही अपने-अपने पदों से नीचे गिरा दिये गये। अपने किये का फल पाकर वे दोनो बड़े लज्जित हुए।

महर्षि दयानन्द की विचारधारा को आगे बढ़ाने के लिए पटवार से त्याग पत्र:- समाज सेवा व दु:खियों के दु:ख दूर करना आपके जीवन का लक्ष्य हो गया था। सेवा करने में अब आपको पटवार की नौकरी भी रुकावट दिखाई देने लगी आपने अपने परिजनों से सर्विस छोड़ने का विचार बताया। सभी ने आपको समझाया की नौकरी बड़ी मुश्किल से मिलती है। आय का अन्य स्रोत भी नहीं है। परन्तु धुन के धनी ने किसी की बात न मानते हुए पटवार से त्याग पत्र दे ही दिया। आपके द्वारा १९१८ में प्रेषित त्याग पत्र जब आपके महकमे के उच्च अधिकारियों के पास पहुँचा तो इस त्याग-पत्र से बहुत दु:खी हुए। उन्होंने आपका त्यागपत्र आपको वापिस भेज दिया। आपने पुन: उनके प्रेम के लिए धन्यवाद करते हुए अपने जीवन के लौकिक सुख के मार्ग को छोड़कर पारलौकिक मार्ग को अपनाने की इच्छा व्यक्त की। आध्यात्मिक जगत में ही मेरी प्रीति हो चली है। अत: आप मेरे त्यागपत्र को स्वीकार कर मुझे पटवार की सेवा से मुक्त करने का कष्ट करें। मुख्याधिकारियों ने अनिच्छा होते हुए भी आपकी महान कार्य करनेकी अभिलाषा जानकर आपका त्याग-पत्र स्वीकार किया।

स्नेही भाई कूड़े राम का महाप्रयाण:- इन्हीं दिनों आपके बड़े भाई कूड़ेराम जी अस्वस्थ चल रहे थे। आप त्यागपत्र देकर अपने पैतृक गांव माहरा आ गये। बड़े भाई को रुग्न देखकर आप बहुत चिन्तित हुए आपने उनकी चिकित्सा कराने का पूरा प्रयत्न किया। अपना अन्तिम समय आया जानकर आपको अपने पास बुलाकर ये शब्द कहे- ''भाई मेरा तो अब अन्तिम समय आ गया है। आप जैसे भाई के साथ अब मैं रह न सकूंगा। यदि मुझसे कोई भूल हो गई हो तो मुझे आप क्षमा कर देना। आपके जीवन का उद्देश्य महान है। मेरी प्रभु से बार-बार यही प्रार्थना है कि वह तुम्हारे जीवन के लक्ष्य को पूर्ण करे।'' ये शब्द कहकर उन्होंने सदा के लिए आँख बन्दकर ली। आप भाई के असह्य वियोग को सहकर धैर्य धारण करके जीवन-मरण की गति को निश्चित मानकर सेवा के लिए उद्यत होकर आगे बढ़े।

गुरुकुल की स्थापना:- पटवार के कार्य से मुक्त होकर सेवाव्रती बनकर विचारने लगे कि बालकों को युवाओं को धार्मिक ग्रन्थ पढ़ाये जायें जिससे उनको अपने कर्त्तव्याकर्त्तव्य का बोध हो। इस सारे कार्य को पूर्ण कने के लिए **''आर्य युवक विद्यालय''** खोला जावे। इस महान उद्देश्य को पूर्ण करने केलिए अपने गुरु स्वामी ब्रह्मानन्द जी के सामने अपने विचार रखे। स्वामी जी ने उनको

समझाते हुए कहा, "कि आप गुरुकुल खोलिये और उसमें छोटे छोटे बालकों को प्रवेश दीजिए। छोटे बालक जब उत्तम शिक्षा से शिक्षित होकर संसार में काम करेंगे, वे अधिक सफल हो सकेंगे। छोटे बच्चों में ही उत्तम संस्कार डाले जा सकते हैं। उन्हें आप जैसा बनाना चाहेंगे वैसा बना भी सकेंगे। आप भी गुरुकुल कांगड़ी की तरह हरियाणा में आदर्श गुरुकुल खोलिये। इसी से आर्य जाति का कल्याण होगा। स्वामी जी के विचारों का भक्त जी पर बड़ा प्रभाव पड़ा। अब गुरुकुल खोलने के लिए उचित स्थान ढूढ़ने लगे। इस तरह घूमते-घूमते तीन वर्ष व्यतीत हो गये। इसी प्रकार घूमते हुए वे जिला रोहतक के ग्राम आवंली पहुँचे। आँवली ग्राम के प्रसिद्ध पंचायती आर्य पुरुष श्री गणेशी राम जी अपने भतीजे बलदेव का दसूटन धूम-धाम से कर रहे थे आप भी उस स्थान पर अन्य प्रतिष्ठित पुरुषों के साथ पहुँचे। आपने देखा जिस स्थान पर लोग बैठे हैं वह स्थान बहुत मैला (गन्दा) है। आपने पास पड़ी झाड़ू उठाई और सफाई करने लगे। उसी समय श्री गणेशी राम की दृष्टि लम्बी काली दाढ़ी वाले उस तेजस्वी व्यक्ति पर पड़ी जो झाड़ू से सफाई कर रहा था। उन्होंने आप से झाड़ू लेकर स्वयं स्थान को साफ किया। तदन्तर उस तेजस्वी व्यक्ति से सभी ने पूछा आप कहाँ से आये हो? आपके आने का उद्देश्य क्या है? उन सबकी बातों को सुनकर आपने कहा- "भाइयों मैं हरियाणा की सेवा के लिये तथा बालकों को आर्य बनाने के लिए सकंल्प करके घर से निकला हूँ। मैं तीन वर्ष से गुरुकुल खोलने के लिए उत्तम स्थान प्राप्त करने की इच्छा से सर्वत्र घूम रहा हूँ।"

दसूटन की समाप्ति पर उपस्थित आर्यजन भैंसवाल ग्राम में आये। सब ग्राम वासियों को इकट्ठा कर आपने बड़े मार्मिक शब्दों में अपनी भावना प्रकट की। आपने कहा कि मैंने आपके गांव का जंगल देखा है, वह गाँव से दूर है, रमणीक है, उस स्थान पर यदि गुरुकुल खुल जाये तो बड़ा भारी कल्याण हो सकता है। इस काम के लिए सब भाई मिलकर गुरुकुल केलिए भूमि दान करें। ग्राम के प्राय: सभी लोगों ने आपकी प्रार्थना स्वीकार की। परन्तु जो जन उस जंगल की भूमि का उपयोग कर रहे थे, वे उस भूमि को देने में आना-कानी करने लगे। उन विरोधियों को सहमत करने के लिए आप जेठ मास की कठोर गर्मी की धूप में अनशन पर बैठ गये। धूप तथा भूख से आप मरणासन्न हो गये।

जब ग्राम वासियों ने देखा कि यह साधु प्राण त्याग देगा पर कठोर साधना नहीं छोड़ेगा। तब वे विरोध करने वाले भाई हाथ जोड़कर आपके सामने उपस्थित हुए और बोले - "भक्त जी छाया में बैठो, भोजन करो। अब हम भूमि के साथ आपको गुरुकुल के लिए रूपये भी देगें।" भक्त जी ने प्रेम भरे शब्द सुने। अपना कठोर अनशन व्रत तोड़ा। सर्वत्र प्रसन्नता की लहर दौड़ गई। गांव वालों ने १५० बीघा भूमि गुरुकुल खोलने को दी। सन् १९१९ को गुरुकुल की आधार - शिला अमर बलिदानी स्वामी श्रद्धानन्द जी से रखवाने का निश्चय किया। निश्चित तिथि को स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज देहली से सोनीपत के रेलवे स्टेशन पहुँच गये। जब स्वामी जी रेलगाड़ी से नीचे उतरे तो आर्य बन्धुओं ने वैदिक धर्म की जय महर्षि दयानन्द की जय, स्वामी श्रद्धानन्द की जय के जयघोषों से आकाश गुंजायमान कर दिया।

सोनीपत से भैंसवाल तक का मार्ग १२ कोस का है। स्वामी श्रद्धानन्द जी के लिए रथ की व्यवस्था आर्य जनों ने की परन्तु स्वामी जी रथ में एक बार बैठकर पैदल हीअपने प्रेमियों के साथ चल पड़े। गैरिक वस्त्रधारी विशालकाय स्वामी श्रद्धानन्द जनसमूह के साथचलते हुए देदीप्यमान दिखाई दे रहे थे। गुरुकुल भैंसवाल की भूमि पर पहुँचकर आधार शिला रखने के उपरान्त आर्यजनों को सम्बोधित करते हुए कहा हरियाणा की भूमि आर्य भूमि कहलाने की अधिकारिणी है। यहाँ के मनुष्य माँस-मदिरा आदि दुर्गुणों से सर्वथा दूर हैं। यहाँ का भोजन दूध, दही और घी पर आश्रित है। मैंने जो उत्साह यहाँ की आर्य जनता में देखा है, वैसा उत्साह दूसरे स्थानों में कम मिलता है। मैं आशा करता हूँ कि यह कुल-भूमि हरयाणा के आर्यों का नेतृत्व करेगी।

गुरुकुल का प्रथम महोत्सव:- सन् १९२० में ज्येष्ठ मास के गुरुकुल भैंसवाल का प्रथम वार्षिक उत्सव धूम-धाम से सम्पन्न हुआ। इस उत्सव में उत्तम विद्वान्, सन्यासी, भजनोपदेशक सम्मिलित हुए थे। उत्सव में कई हजार नर-नारियों की उपस्थिति रही। जनता में अपार हर्ष था। इस अवसर पर भक्त फूल सिंह के महान् कार्य की प्रशंसा करते हुए स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती ने जनता से धन की अपील की। इस अपील से प्रभावित होकर आर्य जनता ने बीस हजार रूपये की विशाल धन राशि प्रदान की। इससे गुरुकुल के भवनों का निर्माण हुआ। इसी अवसर पर गुरुकुल में पचास छोटे-छोटे बालकों को प्रवेश दिया गया, जिनका वेदारम्भ स्वामी श्रद्धानन्द जी ने कराया। उनकी

ओर से सब विधि स्वामी ब्रह्मानन्द जी कर रहे थे।

गुरुकुल भूमि के इन्तकाल के लिए घोर तपस्या:- गुरुकुल तो चालू हो गया था। परन्तु उसकी भूमि का इन्तकाल अभी तक नहीं चढ़ पाया था। इससे आप बहुत बेचैन रहते थे। जिन लोगों की वह भूमि थी उन में से कुछ व्यक्ति इन्तकाल चढ़ाने में बाधा उपस्थित कर रहे थे। आपने घोषणा की या तो मेरे भाई गुरुकुल के नाम भूमि का इन्तकाल करा देंगे नहीं तो ज्येष्ठ मास की इस कड़कडाती धूप में अन्न जल का सर्वथा त्याग कर अपने प्राणों को त्याग दूंगा। यह कहकर उस भंयकर धूप में गाँव के बाहर बैठ गये। उस भीषण गर्मी में अन्न तथा जल के स्वीकार न करने से आप मूर्च्छित होकर गिर पड़े। लम्बे-लम्बे श्वास चलने लगे, शरीर पसीने से तर-बतर हो गया, नाड़ी की गति मन्द पड़ गई। ऐसा प्रतीत होने लगा कि आप कुछ काल के ही मेहमान हैं।

जब गाँव के अग्रणी लोगों ने भक्त जी की यह अवस्था देखी तो विरोध करने वाले व्यक्तियों को समझाया और वे भी भक्त जी को मूर्च्छित अवस्था में देखकर अश्रु बहाते हुए आपसे बोले भक्त जी हमसे बड़ा पाप हुआ, आप हमें माफ करें, छाया में बैठिये। भोजन तथा जल पीकर स्वस्थ होकर हमें पाप से बचाइये। आप जो कहोगे हम वहीं करेंगे। आप ने उन्हें छाती से लगाया इस प्रकार भूमिका इन्तकाल भी चढ़ गया और साथ में भाईयों का प्रेम भी प्राप्त कर लिया।

पटवार काल में ली हुई रिश्वत का लौटाना:- प्रजा की सेवा करते-करते आपका मन निर्मल हो गया। पटवार काल में आपने जो रिश्वत ली थी वो सारी की सारी अक्षरों में अंकित थी। जब कभी आप इन रिश्वत के लिए हुए रूपयों को देखते तो आपको बहुत मानसिक कष्ट होता। अन्त में आपने निश्चय किया कि चाहे कुछ भी हो यह ली हुई रिश्वत वापिस करनी है। यह संख्या में पाँच हजार थी। आपने बहुत सोच विचार कर निर्णय किया कि अपने हिस्से की जो जमीन पैतृक गाँव माहरा में है, उसको बेचकर रिश्वत वापिस की जावे। आपने अपने मन की यह इच्छा अपने छोटे भाई चौधरी रिच्छुराम व अन्य हितैषियों को बताई। आपके भाई ने कहा, ''मैं आपके धार्मिक विचारों को बदलना नहीं चाहता हूँ। आप रिश्वत में लिया हुआ रूपया अवश्य वापिस करें परन्तु मेरा आपसे निवेदन है कि भूमि को बेचे नहीं, गिरवी रख दें और रूपये प्राप्त कर लें। जब कभी मेरे पास रूपयों का प्रबन्ध होगा तब मैं उस भूमि को छुड़ा लूंगा। आपकी इच्छा भी पूरी हो जायेगी और पैतृक जायदाद भी रह जायेगी। अपने भाई की बात मानकर आपने ग्राम माहरा की पंचायत बुलाई और उनसे कहा, ''भाईयों कोई गांव वाला मेरे नाम की भूमि पांच हजार रूपये में गिरवी रख ले जिस रूपये को लेकर मैं ली हुई रिश्वत को वापिस करना चाहता हूँ। गाँव का कोई भी व्यक्ति उक्त राशि देने को तैयार नहीं हुआ। तब सबको चुप देखकर खानपुर गाँव के प्रसिद्ध पंचायती श्री जयराम जी ने हाथ उठा कर ''कहा माहरा गाँव के भाईयों, सुनो अगर कोई बाहर का व्यक्ति जमीन लेगा तो गांव की निन्दा होगी और कहेंगे सारा गाँव कंगाल है।'' जयराम जी की बात सुनकर गाँव के धनी-मानी प्रतिष्ठित चौ. सुण्डूराम जी ने पाँच हजार रूपये देकर वह भूमि ले ली। उसे रूपये से आपने जिस-जिस से रिश्वत ली थी वह सब वापिस कर दी। संसार के इतिहास में यह एक अद्‌भूत घटना है। वाह रे, भक्त जी आपने वो काम किया जो संसार में कोई नहीं कर सका।

वृद्ध चमार को अपने सिर पर जूता मारने को कहना:- मानव जीवन में समय-समय पर सतोगुणी, रजोगुणी व तमोगुणी वृत्तियों का उदय होता है। सतोगुणी वृत्ति से कल्याण होता है रजोगुणी, तमोगुणी वृत्तियाँ पाप का कारण बन जाती हैं। जिन दिनों आप पटवारी थे और युवा थे तथा नशे में आकर एक चमार के सिर पर आपने जूते मारे थे, जिसकी याद आपको सदा बनी रहती थी।

वानप्रस्थाश्रम में दीक्षित होकर गुरुकुल के काम से उसी गाँव में आपको आना हुआ। आप तेजी से चमार के घर की ओर बढ़े। अचानक आपकी नजर उस वृद्ध चमार पर पड़ी तो आप आगे बढ़कर उसके पांवों में लिपट कर पिता जी, पिताजी, आप मेरे पाप केअपराध को क्षमा करो। मैं बड़ा पापी हूँ। अपना जूता निकालकर उनके हाथ में देते हुए कहा आप मेरे सिर पर मारकर मेरे सिर पर टिके हुए पाप के भार को उतार दो। वह चमार इस प्रकार रोते हुए देख कर घबराते हुए अपने पैर छुड़ाते हुए बोला, आप इतने बड़े साधु मुझ नाचीज के पाँव पकड़े हुए हो, मुझे इससे पाप चढ़ता है। तब आपने अपने पटवार काल की सारी घटना कह सुनाई। उस चमार ने यह सुनने के बाद कहा ''उस समय आपने नहीं पटवार काल ने जूते मरवाये थे। अब आप महात्मा हैं। वह चमार आपसे लिपट कर बहुत समय तक रोता हुआ आपको भी रुलाता रहा। मन ही मन आपकी प्रशंसा करने के उपरान्त बोला आप तो

ऋषि हैं देवता हैं जो अपने किये हुए पाप से दु:खी हैं। मैं प्रभु से बार-बार यही प्रार्थना करता हूँ कि वह आपको सफल करे। जिससे आप मुझ जैसे अनेक दु:खियों का दु:ख दूर कर सकें।''

एक लाख रूपये का संग्रह करने का व्रत:- आचार्य युधिष्ठिर जी के गुरुकुल में आ जाने से गुरुकुल की पठन-पाठन की व्यवस्था सुचारु रूप से चलने लगी। आप गुरुकुल की आर्थिक स्थिति को सुधारने की सोचने लगे। उन्हीं दिनों आपके परम हितैषी गुमाना निवासी श्री थानसिंह जी आपसे मिलने गुरुकुल में पधारे। बातों-बातों में आपने उनसे कहा भाई- लोगों के संस्कार बिगड़ गये हैं जब तक संस्कार ठीक नहीं होंगे देश का कल्याण नहीं होगा। श्री थान सिंह जी ने अपने पोते का **''मुण्डन संस्कार''** गुरुकुल के अध्यापकों से करवाने की इच्छा व्यक्त की। आपने प्रसन्नता से इसकी स्वीकृति दी। गुरुकुल केआचार्य युधिष्ठिर जी के साथ आप गुमाना गाँव पहुँचे। वहाँ पर विधि पूर्वक मुण्डन संस्कार सम्पन्न हुआ। उत्तम प्रवचन तथा भजनोपदेश से प्रभावित होकर श्री थान सिंह जी ने एक हजार रूपये का विपुल दान गुरुकुल को दिया। अपने इस अवसर पर श्री थानसिंह जी को धन्यवाद एवं पोते को अपना शुभाशीर्वाद प्रदान किया।

श्री थानसिंह जी द्वारा एक सहस्त्र रूपये प्राप्त करने के उपरान्त आपने गुरुकुल के भली प्रकार संचालन हेतु एक लाख रूपये एकत्रित करने का दृढ़ संकल्प किया। साथ में यह भी प्रतिज्ञा की कि जब तक उक्त रूपया इकट्ठा नहीं करुंगा । तब तक दिन भर खड़ा रहूंगा, सायंकाल पाव भर जौ के आटे की ही रोटियाँ खाऊँगा तथा गुरुकुल भूमि में भी प्रवेश नहीं करुंगा। उस समय हरियाणा में भयंकर अकाल पड़ा हुआ था। पशु चारे-पानी के अभाव में मर रहे थे, लोगों के पास खाने को कुछ भी नहीं था फिर भी गांव वालों ने आपके इस प्रण को सामर्थ्यानुसार पूरा करने का प्रयास करके ५५००० रूपये एकत्रित किये। शेष राशि ४५००० रु. की रिवाड़े गाँव के व्यक्तियों ने मन्त्रणा करके १०० बीघा जमीन गुरुकुल को दान कर दी। इस प्रकार आपका यह कठोर व्रत लगभग ४ वर्ष में पूर्ण हुआ।

उपकार से विरोधी को अपनाना:- आवली गाँव के एक प्रतिष्ठित पुरुष नम्बरदार रतीराम जी किन्हीं लोगों के बहकावे में आकर आपको अपना शत्रु मान बैठे परन्तु भक्त जी की तो शत्रु हो या मित्र सब पर समदृष्टि रहती थी। रात्रि में चोरों ने रतीराम जी का सहस्त्रों रूपये का धन निकाल लिया। आप इस घटना से अत्यन्त खिन्न हुए। आपने अपने सूत्रों के द्वारा चोरों का पता लगा लिया कि इस समय चोर जंगल में बैठकर धन का बंटवारा कर रहे हैं। आपने तुरन्त पुलिस को इसकी सूचना दी। पुलिस ने घटना स्थल पर पहुँचकर रंगे हाथों उन चोरों को पकड़ा और नम्बरदार को उसका सारा धन वापिस मिल गया। नम्बरदार को जब इस बात का पता चला तो वह आपके पास आया और आपके चरणों में गिरकर क्षमा याचना की। भक्त जी ने भी उनको उठाकर अपनी छाती से लगा लिया

गान्धरा में विशाल पंचायत:- गाँव वालों को अनेक निकृष्ट रिवाजों ने घेर लिया, उनसे छुडवाने के लिए आपने सन् १९२५ में सब खापों की एक विशाल पंचायत बुलाई। जिसमें पंचायत का सारा व्यय का भार भी आपने आपने आप ही वहन किया। उसमें विवाह, मृत्युभोज आदि पर अनर्गल खर्च पर प्रतिबन्ध लगाया और पंचायत द्वारा निर्मित उत्तम रिवाजों का प्रचलन हुआ।

बीधल गाँव की परस्पर कलह के कारण रुकी हुई चौपाल का बनवाना:- बीधल गाँव की पार्टी बाजी के कारण चौपाल नहीं बनने दे रहे थे। चौपाल बनानेके इच्छुक व्यक्ति लड़ाई से बचना चाहते थे। कुछ व्यक्तियों ने गुरुकुल में जाकर अपनी कष्ट कथा सुनाई। उसको सुनकर आप उनसे बोले - ''मैं कल समय पर आऊँगा, आप सब वहाँ उपस्थित रहना।'' आपने ठीक समय पर जाकर उन भाईयों को बार-बार समझाने का प्रयास किया। परन्तु वे माने नहीं। अन्त में आपने कहा ''अच्छा लो मैं नींव में घुसता हूँ और खोदना प्रारम्भ करता हूँ। तुम मुझे मार डालो या चौपाल बनने दो। यह कहकर वहाँ गर्दन झुका कर खड़े हो गये। विरोधी उस समय पिघल गये। सबने आपसे क्षमा मांगी और चौपाल बनाने की सहमति दी।''

डबरपुर गाँव के नेकीराम और भरतसिंह का जमीन सम्बन्धी विवाद समाप्त कराना।

शेष भाग अगले अंक में......

सभा और सेनापति आदि मनुष्यों को चाहिये कि उत्तम से उत्तम पदार्थों के भोजन से शरीर और आत्मा को पुष्ट और शत्रुओं की जीत कर न्याय की व्यवस्था से सब प्रजा का पालन किया करें।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ७.३८

वैदिक पुस्तकालय के प्रकाशन

महर्षि दयानन्द सरस्वती कृत

वेदभाष्य, वेदभाषाभाष्य, मूलवेद, वेदांगप्रकाश और वैदिक साहित्य

पिछले अंक का शेष भाग.......

क्रमांक	नाम पुस्तक	मूल्य
८८.	सौवर	५.००
८९.	पारिभाषिक	२०.००
९०.	धातुपाठ	
९१.	गणपाठ	२०.००
९२.	उणादिकोष	
९३.	निघण्टु	१५.००
९४.	संस्कृतवाक्यप्रबोध	
९५.	व्यवहारभानुः	२०.००
९६.	निरुक्त (मूल)	८०.००
९७.	अष्टाध्यायी (मूल)	२०.००
९८.	अष्टाध्यायीभाष्य प्रथम भाग सजिल्द	१२०.००
९९.	अष्टाध्यायी भाष्य द्वितीय भाग सजिल्द	१००.००
१००.	अष्टाध्यायी भाष्य तृतीय भाग सजिल्द	१३०.००

डॉ. भवानीलाल भारतीय

क्रमांक	नाम पुस्तक	मूल्य
१०१.	महर्षि दयानन्द– आत्मकथा	
१०२.	उपदेश मंजरी (पूना प्रवचन)	
१०३.	परोपकारिणी सभा का इतिहास	
१०४.	आर्यसमाज के पत्र और पत्रकार	१०.००
१०५.	आर्य नरेश राजाधिराज सर नाहरसिंह वर्मा	८.००
१०६.	दयानन्द–सूक्ति–मुक्तावली	१५.००
१०७.	देशभक्त कुँ.चाँदकरण शारदा	५.००
१०८.	दयानन्द वचनामृत	३.००
१०९.	आर्यसमाज के शास्त्रार्थ महारथी	१०.००

वेदगोष्ठी– सम्पादक डॉ. धर्मवीर

क्रमांक	नाम पुस्तक	मूल्य
११०.	ऋषि दयानन्द की वेदभाष्य शैली	२०.००
१११.	वेद और कर्मकाण्डीय विनियोग	३१.००
११२.	अथर्ववेदः समस्याएं और समाधान	३५.००
११३.	वेद और विदेशी विद्वान् – कृतित्व और दृष्टिभेद	३५.००
११४.	वेदों के आख्यान (प्रथम भाग)	३५.००
११५.	वेदों के दार्शनिक विचार	४०.००
११६.	सोम का वैदिक स्वरुप	५०.००
११७.	पर्यावरण का वैदिक स्वरुप	
११८.	वेद और समाज	
११९.	वेद और राष्ट्र	
१२०.	वेद और विज्ञान	
१२१.	वेद और ज्योतिष	८०.००
१२२.	वेदों में पदार्थ विद्या (विशेषांक–१)	५०.००
१२३.	वेदों में पदार्थ विद्या (विशेषांक–२)	५०.००
१२४.	वेद और निरुक्त	१००.००
१२५.	वेद और इतिहास	१००.००
१२६.	वेद में कृषि व वनस्पति विज्ञान	१००.००
१२७.	वेद और शिल्प	
१२८.	वेदों में अध्यात्म	
१२९.	वेदों में राजनैतिक विचार	१००.००
१३०.	वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है	
१३१.	वैदिक समाज विज्ञान	
१३२.	सत्यार्थ प्रकाश ७वाँ समुल्लास और वेद	
१३३.	सत्यार्थ प्रकाश ८वाँ समुल्लास और वेद	

प्रो. धर्मवीर

क्रमांक	नाम पुस्तक	मूल्य
१३४.	आर्यसमाज और शोध	१५.००
१३५.	महर्षि दयानन्द सरस्वती के पत्र	

क्रमांक नाम पुस्तक	मूल्य
स्वामी विष्वङ् परिव्राजक	
१३६. ध्यान योग एवं रोग निवारण	१५०.००
१३७. योग	५०.००
१३८. अष्टाङ्ग योग	२०.००
१३९. समाधि	१००.००
स्वामी अभयानन्द सरस्वती	
१४०. प्राणायाम चिकित्सा	
डॉ. सत्यदेव आर्य	
१४१. वैदिक सन्ध्या मीमांसा	२५.००
१४२. ईश्वरस्तुतिप्रार्थनोपासना मन्त्रों का विवेचन	२५.००
१४३. तन्मेमनःशिवसंकल्पमस्तु का वैज्ञानिक विवेचन	२५.००
विरजानन्द दैवकरणि	
१४४. प्राचीन भारतीय इतिहास के स्रोत	८.००
१४५. महाभारत युद्ध कब हुआ एवं अन्य रचनाएँ	५.००
वैद्य पंडित ब्रह्मानन्द त्रिपाठी	
१४६. बूंदी शास्त्रार्थ	५.००
१४७. वैदिक सूक्ति–सुमन	२५.००
वैदिक साहित्य – विविध ग्रन्थ	
१४८. दयानन्द ग्रन्थमाला तीन खंड का १ सेट	५५०.००
१४९. आर्य समाज की मान्यताएं	२०.००
१५०. मानव निर्माण के स्वर्ण सूत्र	१५.००
१५१. अथर्ववेदीय पञ्चपटलिका (सजिल्द)	२५.००
१५२. अथर्ववेदीय पञ्चपटलिका अजिल्द	१५.००
१५३. ऋग्वेद का नमूना भाष्य (१मंत्र)	४.००
१५४. ईशादिदशोपनिषद् (मूल)	१०.००
१५५. वैदिक कोषः (निघण्टु मणिमाला)	२५.००
१५६. सरस्वती की खोज एवं महाभारत युद्धकाल	१०.००
१५७. दयानन्द दिव्य दर्शन	१२.००
१५८. वृक्षों में जीवात्मा	१०.००

क्रमांक नाम पुस्तक	मूल्य
१५९. महर्षि दयानन्द जीवन और सन्देश	३.००
१६०. महर्षि महिमा	२.००
१६१. स्वामी दयानन्द चरितम्	१०.००
१६२. ब्रह्माकुमारी मत खण्डन	८.००
१६३. निरुक्तकार का ऐतिहासिक पक्ष	५.००
१६४. मांसाहार– वैदिक धर्म एवं विज्ञान	१२.००
१६५. नेपाली सत्यार्थ प्रकाश	२००.००
१६६. परोपकारी विशेषांक	२५.००
१६७. महर्षि दयानन्द के चित्र (एक प्रति)	५०.००
१६८. संगठन सूक्त	२.००
१६९. ३१ दिवसीय टेबल कलेण्डर	१००.००
१७०. प्यारा ऋषि	२५.००
१७१. नककटा चोर	३०.००
१७२. महर्षि दयानन्द और उनके अनुयायी	३५.००
१७३. स्वामी दयानन्द सरस्वती और उनके क्रान्तिकारी शिष्य	३५.००
१७४. भगवान् को क्यों मानें ?	२५.००
१७५. महर्षि दयानन्द ग्रन्थ परिचय	३०.००
१७६. आर्यसमाज के संस्थापक, महान समाज सुधारक–महर्षि दयानन्द सरस्वती	२५.००
१७७. शेख चिल्ली और लाल बुझक्कड़	२५.००
१७८. नैति मंजूषा	९५०.००
१७९. ऋग्वेदादि संदेश	३०.००
१८०. त्याग की धरोहर	१००.००
ध्यान योग एवं रोग निवारण (सी.डी.)	
(स्वामी विष्वङ् परिव्राजक)	
१८१. अष्टांग योग–१ (सी.डी.)	४०.००
१८२. अष्टांग योग–२ (सी.डी.)	४०.००
१८३. आसन (सी.डी.)	४०.००
१८४. सूक्ष्म व्यायाम (सी.डी.)	४०.००

शेष भाग अगले अंक में.......

पुस्तक परिचय

१. **पुस्तक** - सत्यार्थप्रकाश का संक्षिप्त परिचय
लेखक - महात्मा चैतन्य मुनि
प्रकाशक - सरस्वती साहित्य संस्थान, २९५ जागृति एन्क्लेव, विकास मार्ग, दिल्ली-९२
पृष्ठ - १४४ **मूल्य** - ३०/-

महर्षि दयानन्द ने अपने जीवनकाल में प्रचार, शास्त्रार्थ, शंका-समाधान, पत्रोत्तर, वेदभाष्य, अनेक पुस्तकों का लेखन आदि कार्य किये। इन सभी कार्यों की अपनी-अपनी महत्ता रही है। इन कार्यों में महर्षि ने जो पुस्तक लेखन का कार्य किया, वह हमारे लिए वर्तमान व भविष्य में मार्ग दर्शन करने वाला रहेगा। वैसे तो महर्षि के सभी ग्रन्थों में वैशिष्ट्य है, किन्तु सत्यार्थप्रकाश में एक अलग ही अनुठापन है। महर्षि के इस ग्रन्थ को पढ़कर कितने लोग महापुरुष बन गए, उनकी गिनती कौन करे। जिस किसी ने भी इस अमर ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश को पढ़ा, उस-उस के जीवन में परिवर्तन न आया हो, ऐसा हुआ नहीं। इस ग्रन्थ को जिसने भी शुद्ध चित्त होकर पढ़ा, उसके ही जीवन में, विचारों में पवित्रता आयी है।

सत्यार्थ प्रकाश के विषय में मताग्रहियों ने भ्रान्ति पूर्ण प्रचार किया, जिसका परिणाम बहुत से जिज्ञासुजन इस ग्रन्थ रत्न से वंचित रहे। मतवादियों को लगा कि यह ग्रन्थ उनकी विचारधारा से विपरीत है जिससे उनकी हानि होगी, उनका यह मानना मिथ्या है, क्योंकि सत्यार्थ प्रकाश रूपी ग्रन्थ असत्य का विरोधी और सत्य का पोषक है। इसी बात को ये मतवादी सहन न कर सके।

किसी व्यक्ति, वस्तु वा ग्रन्थ का परिचय यथार्थ रूप में रखा जाता है तो जन समुदाय उस व्यक्ति, वस्तु वा ग्रन्थ का ठीक प्रयोग कर अपना प्रयोजन सिद्ध कर सुख लाभ को प्राप्त हो जाता है। विपरीत में विपरीत परिणाम होगा। सत्यार्थ प्रकाश से ठीक प्रयोजन सिद्ध हो इसके लिए आर्य जगत् के लेखक, साधक, विचारक कवि हृदय वाले महात्मा चैतन्यमुनि जी ने ''सत्यार्थप्रकाश का संक्षिप्त परिचय'' नाम से पुस्तक लिखी है। पुस्तक को पढ़ने से सत्यार्थप्रकाश के विषय में भटके हुए जनों को यथार्थता का ज्ञान होगा। भ्रान्ति के विषय में लेखक ने अपनी इस पुस्तक में लिखा-''अज्ञानता के कारण इस ग्रन्थ के बारे में जनसाधारण में कई प्रकार की भ्रान्तियाँ भी फैली हुई है तथा इसे खण्डन का पिटारा तक कहकर भी सम्बोधित किया गया है। इस प्रकार की भावनाओं का मुख्य कारण है- सुनी-सुनाई बातें या फिर पूर्वाग्रह और सत्य की खोज के प्रति जिज्ञासा का न होना। सत्य कडुवा भी हो, तो भी उसे ग्रहण करना चाहिए, क्योंकि वही व्यक्ति को देवत्व की ओर ले जाने वाला है।''

लेखक ने महर्षि के मन्तव्य स्पष्ट करते हुए लिखा- ''वास्तविकता यह है कि अनेकता में एकता की स्थापना करना मात्र दिवास्वप्न ही है। स्थायी एकता केवल सत्य के आधार पर ही स्थापित हो सकती है, जिसका उल्लेख महर्षि जी ने अपने ग्रन्थ में किया है। मुख्य बात महर्षि जी की मूलभावना को समझने की है न कि भ्रमित होने की। इस दिशा में उनकी भूमिका का गहन अध्ययन करके उस पर मनन और चिन्तन करना चाहिए। उन्होंने जो भी विचार व्यक्त किये हैं, उसके पीछे किसी प्रकार का पूर्वाग्रह या द्वेषभावना देखना उनके प्रति सबसे बड़ा अन्याय होगा।'' इस पुस्तक में लेखक ने महर्षि के मन्तव्यों को रखकर सत्यार्थ प्रकाश का परिचय दिया है। पाठक इसको पढ़ सत्यार्थ प्रकाश का यथावत् परिचय प्राप्त करेंगे इसी आशा के साथ। - **सोमदेव, ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर।**

२. **पुस्तक का नाम**- वैदिक तीर्थाटन
लेखक - महात्मा चैतन्यमुनि
प्रकाशक - उत्कर्ष कला केन्द्र दयानन्द धाम महादेव, सुन्दर नगर जिला -मण्डी (हि.प्र.)
मूल्य - १०० रू. **पृष्ठ** - १८०

आर्य परिवार के अतिरिक्त अन्य भारतीय नागरिकों की मान्यता के अनुकूल तीर्थाटन का रूप भिन्न है। गंगा-यमुना आदि नदियों, तालाबों, पोखरों, झील आदि में डूबकी लगाने मात्र से सब पाप दूर हो जाते हैं, अथवा ऐसे स्थानों पर जाने मात्र से सब पाप दूर हो जाते हैं। ऐसी मान्यता बना रखी है। मानव के मृतक शरीर का नदियों में बहाना,

अस्थियों को प्रवाहित करना आदि से उनको मोक्ष मिल जाता है। ऐसी अनेक मनगढन्त कथायें जोड़ रखी है। अन्ध-विश्वास का बाजार गर्म है। इसके पीछे पण्डों का भरण पोषण हो रहा है। श्राद्ध से पितरों को तृप्ति होती है, अन्धानुकरण चल रहा है। महात्मा चैतन्यमुनि द्वारा लिखित 'वैदिक तीर्थाटन' एक अमोघ औषधि है, जिसके अध्ययन एवं स्वाध्याय से हमारी आँखें खुल जाती है। आज के परिप्रेक्ष्य में हमारा क्या कर्तव्य हैं हम इसे कहाँ तक पूरा कर रहे हैं, यह विचार करना नितान्त आवश्यक है। इस दृष्टि से अत्यन्त उपयोगी पुस्तक है। सभी मतावलम्बियों के लिए दर्पण का कार्य करेगी। वेदों द्वारा प्रदत्त ज्ञान सर्वोपरि व अनुकरणीय है। वैदिक तीर्थाटन का रूप भी यही है। दर्शनों का मर्म भी स्पष्ट है।

- देवमुनि, ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर।

पाठकों की प्रतिक्रिया

१. आदरणीय श्रीमान्

सादर नमस्ते।

परोपकारी पत्रिका में प्रकाशित सभी लेख अति ज्ञानवर्धक होते हैं। डॉ. धर्मवीर जी का सम्पादकीय लेख सामयिक, बौद्धिक एवं ज्ञान से परिपूर्ण होता है। आपने स्वामी विवेकानन्द के विषय में दो चरणों में जो तथ्य दिये हैं, वे उन व्यक्तियों तथा स्वामी जी के अन्धे अनुयाइयों के लिये सोचने के लिये काफी है। स्वामी विवेकानन्द जी के चरित्र से यह अनुमान सहज ही लगाया जा सकता है कि उनमें न तो राष्ट्रीयत्ता की भावना थी और न ही एक आदर्श सन्त की मानसिकता। जो यम व नियम का पालन नहीं कर सकता, वह साधु, सन्त, महात्मा और फकीर या सूफी नहीं हो सकता। दिसम्बर (द्वितीय) २०१४ में भस्मासुर बनते सन्त सम्पादकीय लेख में प्रो. धर्मवीर जी ने जो लिखा है वह शत प्रतिशत सही है। ऐसे सन्तों को बनाने वाले अन्धे भक्त, शासन और नेता गण पूर्णत: उत्तरदायी है।

आज के समय में जो अन्ध विश्वास, पाखण्ड व अज्ञान फैला है इसमें मात्र महर्षि दयानन्द सरस्वती की शिक्षा ही पूर्णत: प्रासंगिक है। अगर कोई व्यक्ति मात्र एक बार ही ऋषि की कालजयी पुस्तक सत्यार्थप्रकाश पढ़ ले तो उसका उद्धार हो जायेगा तथा उसके ज्ञानचक्षु पूरी तरह से खुल जायेंगे।

- डॉ. लक्ष्मणसिंह, ५१, देवपुरम्,
मुजफ्फरनगर, उ.प्र.

२. धर्मवीर जी, नमस्ते।

मैं पिछले दो वर्षों से परोपकारी पत्रिका पढ़ रहा हूँ। आप और आपकी टीम के सदस्य वैदिक ज्ञान के प्रसार का काम आश्चर्यजनक ढंग से कर रहे हैं। वेद ज्ञान सृष्टि के आरम्भ में ईश्वर द्वारा दिया गया है। महर्षि दयानन्द सरस्वती के मिशन को जीवित बनाए रखने के लिए परोपकारिणी सभा प्रशंसा की पात्र है।

विवेकानन्द के सम्बन्ध में आपका लेख उनकी महानता विषयक बहुत सी भ्रान्तियों का निराकरण करेगा। ऋग्वेद ९/९३/१ में कहा गया है कि जो योगी योगाभ्यास के द्वारा ५ ज्ञानेन्द्रियों एवं ५ कर्मेन्द्रियों पर नियन्त्रण कर लेता है, वह अपने अन्दर ईश्वर की अनुभूति कर सकता है। विवेकानन्द जी योगी तो नहीं ही थे, ऐसा लगता है कि उन्होंने वेद पढ़े या समझे नहीं थे। अबसे एक वर्ष पूर्व तक मुझे उनके मांस भक्षण की आदत का पता नहीं था, यद्यपि तब भी मैंने उनके वेदान्त विषयक विचारों का खण्डन किया था।

- ललित के. यादव
सहायक प्राध्यापक एवं शोध छात्र

३. आदरणीय डॉ. धर्मवीर जी, नमस्ते

आपका फरवरी (प्रथम) २०१५ के अंक में सम्पादकीय 'घर से जाने व घर वापसी की कथा' पढ़ने के बाद मुझे ऐसा लगा कि अग्रलेख व उसमें किया गया विश्लेषण राष्ट्रिय स्वयं सेवक संघ के लिये चिन्तन व मंथन करने के लिये बहुत सिद्ध होगा। क्योंकि आजकल उनके कारण ज्यादा बवाल खड़ा किया जा रहा है।

मुझे क्षमा कीजियेगा मैंने बगैर आपकी अनुमति के इस सम्पादकीय की ढ़ेर सारी छायाप्रतियाँ बनवाई और आज ही छिंदवाड़ा राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ का पथ संचलन के कार्यक्रम की सूचना मिली, उसमें पहुँचकर राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के प्रान्तीय अध्यक्ष, विभाग प्रचारक, जिला अध्यक्ष, भाजपा के विधायक, नगर निगम अध्यक्ष, जिला भाजपा अध्यक्ष और उपस्थित गणमान्य व्यक्तियों को स्वयं उस सम्पादकीय की छाया प्रतियाँ दी। साथ ही वहाँ पधारे सभी स्वयं सेवकों में प्रतियाँ वितरीत करवाई।

ऐसे सुन्दर, विश्लेष्णात्मक लेख के लिये आपको बहुत-बहुत धन्यवाद।

- **डॉ. गणेश बोरले, बरारीपुरा, छिन्दवाड़ा, म.प्र.**

४. सम्मानीय श्री आचार्य धर्मवीर जी, सम्पादक (परोपकारी)

नमस्ते।

परोपकारी का अप्रैल (द्वितीय) अंक प्राप्त हुआ। सम्पादकीय में आपने ईसाई ओर मुसलमानों के द्वारा जो षड्यन्त्रपूर्वक कुप्रयास चल रहा है उसका पटाक्षेप किया है और साथ ही मैकाले के मानसपुत्रों के प्रमत्त प्रलाप का स्पष्टीकरण भी। वर्त्तमान के मानसिंहों से भारतीय धर्म एवं राष्ट्र की किस प्रकार रक्षा हो, यह गम्भीर चिन्ता का विषय है। आर्य जनता को सावधान करने के लिए लिखा हुआ यह सम्पादकीय राष्ट्रहित में जनता को जगाने वाले एक घोषणापत्र के रूप में है। इसकी लाखों ही नहीं, अपितु करोड़ों प्रतियाँ विभिन्न भाषाओं में अनूदित कर वितरित की जानी चाहिए। राष्ट्र जागरण का यह शंखनाद भारत के लिए संजीवनी सिद्ध हो यही प्रभु से प्रार्थना है।

ज्ञानार्थ यह लेख सभा में सभी विद्यार्थियों के सम्मुख पढ़ा गया।

।। शेष दयामय प्रभु की अपार दया।।

- **स्वामी विवेकानन्द सरस्वती, गुरुकुल प्रभात आश्रम, टीकरी, भोलाझाल, मेरठ।**

५. जुलाई (द्वितीय) के अंक में डॉ. धर्मवीर जी का सम्पादकीय तथा श्री सत्येन्द्रसिंह जी का लेख धर्मान्तरण का यथार्थ दोनों पठनीय तथा विचारोत्तेजक थे। चिन्तन मनन करके पत्रों में लिखने वाले विद्वान् लेखकों की कमी आर्यसमाज में बहुत खलती है। परोपकारी पूर्वजों के पग चिह्नों पर दृढ़ता से पग आगे धर रहा है। यह आनन्ददायक है।

बहुत लम्बे समय के पश्चात् हमारे माननीय विद्वान् विचारक और कवि डॉ. रामवीर जी की सुन्दर मौलिक कविता 'उम्र की लड़ती आधुनिकायें' कई बार पढ़ गया। कविवर रामवीर जी मेरी विनती तो नहीं सुनेंगे। डॉ. धर्मवीर जी तथा मान्य डॉ. वेदपाल जी अपना दबाव बनाकर रामवीर जी से ऐसी १५०-२०० कवितायें लिखवाकर प्रकाशित करवा दें तो इससे साहित्यिक जगत् में श्रीमान् रामवीर जी का गौरव तो होगा ही आर्यसमाज की प्रतिष्ठा को चार चाँद लगेंगे।

यह मैं जानता हूँ कि हमारे मान्य बन्धु डॉ. रामवीर जी से हमारे उपरोक्त दोनों विद्वान् ही काम ले सकते हैं। समय रहते यह कार्य न हो सका तो फिर पछताना पड़ेगा। इतिहास हमें क्षमा नहीं करेगा।

- **राजेन्द्र जिज्ञासु, वेद सदन, अबोहर, पंजाब**

६. जून द्वितीय-२०१५ के अंक में आर्य विद्वान् श्री सत्येन्द्रसिंह जी आर्य का लेख 'परोपकारिणी सभा द्वारा किया जा रहा अनुसन्धान कार्य' बहुत बढ़िया प्रकाशित हुआ। आदरणीय सत्येन्द्रसिंह जी को साधुवाद एवं बधाई।

- **जयदेव अवस्थी, जोधपुर**

लेखकों से निवेदन

परोपकारी में उन लेखों, कविताओं, रचनाओं को दिया जाता है, जो **मौलिक व अप्रकाशित** हों। अत: सभी लेखकों से निवेदन है कि वे अपनी उन्हीं रचनाओं को भेजें जो मौलिक व अप्रकाशित हों।

अनेक लेखक मौलिक व अप्रकाशित रचना तो भेजते हैं, किन्तु उसे एक साथ **अनेक पत्रिकाओं को भेजते हैं।** अत: लेखकों से यह भी निवेदन है कि वे कृपया परोपकारी को वे ही रचना भेजें, जो अन्य पत्रिकाओं के लिए न भेजी हो। परोपकारी में छपने के बाद यदि अन्यत्र भेजना चाहें तो यह उनकी इच्छा पर निर्भर करता है।

कृपया लेख के अन्त में अपना **पूरा पता व चल-दूरभाष संख्या अवश्य लिखें।** लेख के स्वीकृत-अस्वीकृत होने की सूचना चल-दूरभाष पर संक्षिप्त संदेश द्वारा प्रेषित कर दी जायेगी। **परोपकारिणी सभा द्वारा रचनाओं के लिए किसी प्रकार का भुगतान नहीं किया जाता है।**

रचयिता अपनी रचना की एक प्रति कृपया अपने पास रखकर भेजें, क्योंकि **अस्वीकृत रचनायें डाक द्वारा लौटाई नहीं जाती हैं।** स्वीकृत रचना परोपकारी के किसी आगामी अङ्क में देखी जा सकती है। रचना के प्रकाशन में छ: माह या अधिक समय भी लग सकता है, अत: कृपया तब तक रचना को अन्यत्र न भेजें। **-संपादक**

दयानन्द धर्मार्थ चिकित्सालय

परोपकारिणी सभा द्वारा संचालित ऋषि उद्यान में पिछले लगभग तीन वर्ष से आयुर्वेदिक चिकित्सालय चल रहा है। चिकित्सालय में उपलब्ध सभी औषधियाँ निःशुल्क दी जाती हैं। ऋषि उद्यान में रह रहे डॉ. रमेश मुनि जी चिकित्सक के रूप में इस चिकित्सालय का कुशलतापूर्वक कार्यभार सम्भाल रहे हैं।

दानी महानुभावों से सहयोग की भी अपेक्षा है।

१. बैंक का नाम- **भारतीय स्टेट बैंक, डिग्गी बाजार, अजमेर।**
बैंक बचत खाता **(Savings)** संख्या- **10158172715**
IFSC-SBIN0007959

२. बैंक का नाम- **आई.डी.बी.आइ**, पावर हाऊस के सामने,
जयपुर रोड़, अजमेर।
बैंक बचत खाता **(Savings)** संख्या- **091104000057530**
IFSC-IBKL0000091

email : psabhaa@gmail.com

मन्त्री, परोपकारिणी सभा, अजमेर

आस्था भजन (चैनल) पर आर्य विद्वानों के प्रवचन

स्वामी रामदेव जी जन-जन के कल्याण को ध्यान में रखते हुए वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार के लिए 'आस्था-भजन' चैनल पर प्रतिदिन सायं ७ से ९ बजे तक दो घण्टे के बीच वैदिक विद्वानों के प्रवचनों को प्रसारित करवा रहे हैं।

इस कार्य में परोपकारिणी सभा द्वारा भी महत्त्वपूर्ण योगदान दिया जा रहा है। परोपकारिणी सभा द्वारा प्रवचनों की आपूर्ति के लिए ऋषि उद्यान में रिकॉर्डिंग-यूनिट चल रही है और लगातार नित नये प्रवचनों की रिकॉर्डिंग की जा रही है। परोपकारिणी सभा ये प्रवचन आस्था-भजन (चैनल) को प्रदान कर रही है।

इन दिनों 'आस्था-भजन' (चैनल) पर प्रतिदिन सायं ७ से ७.२० बजे तक **आचार्य धर्मवीर** के वेद-प्रवचन, ७.३० से ७.५० तक **स्वामी विष्वङ्** के योगदर्शन प्रवचन, ८.३० से ८.५० तक **आचार्य सत्यजित्** के प्रवचन प्रसारित हो रहे हैं। इसी प्रकार आगे भी 'आस्था-भजन' पर प्रतिदिन सायं ७ से ९ बजे के बीच अन्य विद्वानों के व अन्य विषयों पर प्रवचन प्रसारित होते रहेंगे।

धर्मप्रेमी जन इन प्रवचनों का अधिकाधिक लाभ उठाएँ और अन्यों को भी अधिकाधिक सूचित करें।

'आस्था-भजन' (चैनल) डिश-टी.वी. और डी.टी.एच. पर उपलब्ध है, किन्तु टाटा-स्काई, वीडियोकोन, बिग-टी.वी. आदि पर नहीं आ रहा है। जिनके पास ये नहीं आ रहा है, वे अपने प्रसारक (सर्विस प्रोवाइडर) को बार-बार कह कर प्रेरित करते रहें, जिससे कि ये भी आस्था भजन को प्रसारित करने लगें। ऐसा करके वैदिक-धर्म के प्रचार-प्रसार में आप भी सहयोग प्रदान कर सकते हैं। जो केबल से देखते हैं, वे भी अपने केबल ऑपरेटर को कह कर आस्था भजन आरम्भ करवा सकते हैं।

वैदिक देवता पृथ्वी : मूर्तिपूजा की परिणति

– देवर्षि कलानाथ शास्त्री

श्री कलानाथ शास्त्री एक भाषा शास्त्री, संस्कृत, हिन्दी भाषा के अधिकारी विद्वान्, इतिहास एवं संस्कृति के मर्मज्ञ विद्वान् आप परोपकारी के पुराने पाठक हैं। शास्त्री जी कहते हैं- आर्यसमाजी मुझे पौराणिक समझते हैं तथा संगी-साथी पौराणिक समझते हैं कि परोपकारी पढ़ते शास्त्री जी आर्यसमाजी बन गये हैं। – सम्पादकीय

यह एक सुविदित तथ्य है कि भक्ति आन्दोलन के प्रभाव से पूर्व जिन वेदकालीन देवताओं की आराधना देश में की जाती थी, वे यथापि आज भी प्रत्येक धार्मिक कृत्य के अवसर पर पूजे जाते हैं जैसे- इन्द्र, वरुण, प्रजापति, अग्नि, सूर्य आदि, किन्तु भक्ति आन्दोलन ने जिन कृष्ण, राधा, राम, सीता आदि को जन-जन के हृदय में आसीन कर दिया, वे वेदकाल के देवता नहीं थे। अन्य कुछ ऐसे देवताओं की आराधना भी अत्यन्त लोकप्रिय हो गई जो वेदकाल में ज्ञात नहीं थे, जैसे हनुमान, भैरव आदि। कुछ ऐसे देवता भी हैं, जिनकी पूजा आज घर-घर में बड़ी अभिलाषाओं के साथ प्रत्येक व्यक्ति द्वारा की जाती है, विशेषकर दीवाली के अवसर पर, जो हैं तो वेदकालीन देवता, किन्तु उनकी वेदकालीन पहचान ने इतना रूप परिवर्तन कर लिया कि आज वह स्वरूप पूरी तरह अनजाना और अनचाहा हो गया। ये देवी हैं धन की अधिष्ठात्री लक्ष्मी, जिनकी पूजा का प्रमुख उत्सव दीपावली को माना जाता है। लक्ष्मी हैं तो वेदकालीन देवी, वे विष्णु की अर्धांगिनी हैं, नारायण की पत्नी हैं। लक्ष्मीनारायण की पूजा और लक्ष्मीनारायण के मन्दिर देशभर में सुविदित हैं, किन्तु वेदकालीन ऋषि जिसका अभिगम वैज्ञानिक था, उन्हें धन की देवी मात्र नहीं मानता था।

विष्णु विश्व के प्रतिपालक हैं। वे त्रिविक्रम हैं, विश्वरूप हैं। वेद उन्हें सूर्यमण्डल में देखकर प्रणत होता है। वे आकाश का रंग धारण किए हुए हैं, गगन-सदृश हैं, मेघवर्ण हैं। उनके तीन चरण हमारी समस्त काल यात्रा को, काल गणना को नाप लेते हैं। एक चरण से वे चौबीस घण्टे के रात-दिन बनाते हैं, दूसरे विक्रम से बारह महीनों का सम्वत्सर बनाते हैं, तीसरे विक्रम से युग मन्वन्तर और कल्प बनाते हैं। इस त्रैलोक्य पालक देवता (सूर्य, जो वेद के प्रमुख देव हैं) की सेविका है हमारी पृथ्वी, जो वेद काल की सबसे उपकारिणी देवी है। यही हमें जीवन दान देती है, लाखों वर्षों से हम इससे निकला जल पीकर जी रहे हैं, जो वर्ष में अनेक बार धान्यों की फसल देकर करोड़ों वर्षों से हमें जीवन दान दे रही है। यह ब्रह्माण्ड का सुन्दरतम ग्रह है। इससे बड़ी कौन-सी देवी हो सकती है? सबसे पहले और सबसे बढ़कर तो इसकी पूजा की जानी चाहिए। क्या हम इसे भूल गए हैं?

नहीं, वेद का ऋषि इसके लिए दीवाना था। अथर्ववेद के पृथ्वीसूक्त के वे ६३ मन्त्र, जो पृथ्वी की गरिमा का गान करते हैं, आज भी रोमांच पैदा कर देते हैं। इसकी पूजा तो हम आज भी करते हैं, पर किसी दूसरे रूप में। किस रूप में, इस प्रश्न का उत्तर सगुण भक्ति और मूर्तिपूजा की परम्परा ही दे सकती है। हम देवनदी गंगा के ऋण से कभी मुक्त नहीं हो सकते, उसे देवी मानते हैं, पर मूर्तिपूजा की परम्परा में हमारे हृदय तब तक सन्तुष्ट नहीं होते, जब हम उस जीती-जागती, बहती-खिलखिलाती नदी की मूर्ति मगर पर बैठी कलश लिए मानवाकृति के रूप में बनाकर उसकी आरती नहीं उतारते। यही हुआ है पृथ्वी के साथ। हम उसकी पूजा तो आज भी करते हैं, पर मूर्ति बनाकर। लक्ष्मी यही पृथ्वी है, मूर्ति के रूप में। इसके हाथ में कमल है, अभय है, चारों दिशाओं के गहरे बादल हाथी बनकर जलधारा के कलशों से इसे नहला रहे हैं। विष्णु सूर्य हैं, नारायण आकाश का रंग धारण किए लक्ष्मी के पति हैं, लक्ष्मी उनके चरण दबाती है। आज भी प्रातःकाल उठते समय हम विष्णु की पत्नी पृथ्वी से हाथ जोड़कर कहते हैं- **'विष्णुपत्नि नमस्तुभ्यं पादस्पर्शं क्षमस्व मे।'** यह पृथ्वी सूर्य के सुनहले प्रकाश में चमकती हुई हिरण्यवर्ण है, उसका रंग चमकदार पीला है, इसीलिए लक्ष्मी **'कान्त्या कांचन संनिभा'** है। उसकी खानों में से सोना निकलता है- **'यस्यां हिरण्यं विन्देयम्।'** वेद का ऋषि इसी सूर्य

और भूदेवी के जोड़े का आराधक था। मूर्तिपूजा की परिकल्पना में वह हो गया लक्ष्मी और नारायण का जोड़ा। विज्ञान और तार्किक चिन्तन आराधना का लिबास पहनकर किस प्रकार ब्रह्माण्डीय तत्त्वों को देवता बना देता है, यह तथ्य क्या रोमांचकारी नहीं है?

बहुतों को शायद इस तथ्य को मानने में असुविधा हो कि लक्ष्मी अथवा श्री पूरी तरह हमारी माता पृथ्वी का मानवीकृत रूप है। उनके लिए केवल यह निवेदन ही पर्याप्त है कि वे वेद के उस सूक्त को देख लें, जिसका नाम श्रीसूक्त है, जिसे लक्ष्मी की आराधना का सर्वाधिक प्रभावी साधन माना जाता है और जिसके मन्त्र बोल-बोल कर पुरोहित लोग धन की कामना वाले यजमानों से खीर की सोलह आहुतियाँ दिलवाते हैं। इसके अर्थ की ओर सम्भवत: हम अधिक ध्यान नहीं दे पाते, किन्तु यदि इसका अर्थ समझना चाहें तो पृथ्वी की स्तुति माने बिना इसका अर्थ ही नहीं लगेगा। सारे मन्त्र पृथ्वी को स्पष्टत: अभिहित करते हैं। श्री और लक्ष्मी उसी के दो स्वरूप या दो अवस्थाएँ हैं, एक सूर्योन्मुख प्रकाशमान, दूसरी प्रकाशरहित। श्री सूक्त का सर्वाधिक प्रचलित मन्त्र बतलाता है कि वह शुद्ध गोबर से लिपी हुई है, गन्ध उसका गुण है, वह हर बार नई-नई फसलें पैदा कर सकती है, नित्य पुष्ट होकर समस्त प्राणियों का पोषण करती है-

'गन्धशरां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्। ईश्वरीं सर्वभूतानां तानिहोपह्वये श्रियम्।' श्रीसूक्त 'श्री' को चन्द्रां, सूर्यां आदि तो कहता ही है, **''आर्द्रां ज्वलन्तीं''** आदि भी कहता है। वह गीली भी हो जाती है, गर्म भी। उसके दो पुत्र बताए गए हैं- कर्दम, चिक्लीत। आनन्द, कर्दम चिक्लीत श्री सूक्त के ऋषि भी कहे जाते हैं। कर्दम है दलदल और चिक्लीत 'नमी' (मॉइस्चर)। ये ही पृथ्वी के उपजाऊ तत्त्व हैं। आनन्द है प्राणवायु। सूक्त में स्पष्ट कहा गया है कि आपकी वनस्पतियाँ और वृक्ष हमारे हितकारी हैं (तव **वृक्षोऽथ बिल्व:** छठा मन्त्र)। ये सब पृथ्वी से सम्बन्धित हैं। लक्ष्मी की जो मूर्ति हमने परिकल्पित की है, उस पर इनकी संगति कैसे बैठेगी? प्रतीक अर्थ लेकर ही तो हम विष्णु (विश्व के स्वामी) और लक्ष्मी (हमारी मालकिन) की आराधना करते रहे हैं।

शास्त्रों ने विष्णु के आयुधों, वाहनों, अङ्गों आदि के जो विवरण दिये हैं, उनमें विज्ञान और आस्था दोनों का अद्भुत समन्वय स्पष्ट दिखलाई देता है। हम सदा बोलते हैं- **'श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्यौ'**, ये ही हैं **'अहोरात्रे पार्श्वे'** जो विष्णु के आदित्य रूप के दो आयाम हैं, दोनों ओर हैं। हमारी साधना पद्धति इसी दृष्टि से बुद्धि, तर्क, विज्ञान और ज्ञान तथा आस्था, विश्वास, अध्यात्म और भावना को भी आदर देती है। तभी तो यह सनातन परम्परा सहस्राब्दियों से चली आ रही है, उसमें आचार का परिवर्तन होता रहता है, आधार का नहीं। युगानुरूप परिवर्तन को हमने कभी नकारा नहीं, वह परिवर्तन ही तो हमारी सनातनता का रहस्य है। तभी तो अनेक वेदकालीन परम्पराएँ आज भी किसी-न-किसी रूप में हमारे जनजीवन में घुली मिली लगती हैं। अथर्ववेद के पृथिवी सूक्त की पृथ्वी या भूदेवी श्री सूक्त की श्री देवी बन गई, फिर यक्ष संस्कृति की कुबेर लक्ष्मी बनी, आज धनलक्ष्मी बनी हुई है, किन्तु आज भी गाँव-गाँव में दीपोत्सव के दिन लक्ष्मी पूजन में पृथ्वी से जुड़े हुए मिट्टी के बर्तनों (हटडी, कुल्हड़ आदि) में फसलों से उपजे धान्य (खील, लाई आदि) ही रखे जाते हैं। लक्ष्मी के ये सारे रूप हमारे पूज्य हैं। वह धनलक्ष्मी, धान्यलक्ष्मी, गजलक्ष्मी, सौभाग्यलक्ष्मी, सौन्दर्यलक्ष्मी आदि न जाने कितने रूपों में देश में पूजी जाती है। आज भी तिरुपति के वेंकेटेश्वर मन्दिर में श्रीपति के साथ भूदेवी देखी जा सकती है। यह क्रम न जाने कितनी सदियों से चल रहा है कि नये प्रयोग उभरते हैं, कुछ रूढ़ियाँ जन्म लेती हैं, कुछ युग के तकाजे में दबकर समाप्त हो जाती हैं, किन्तु परम्परा सनातन रहती है, वह रूपान्तरित भले हो जाए, समाप्त नहीं होती। यही भारत की भारतीयता है।

- सी/८, पृथ्वीराज रोड, सी स्कीम, जयपुर-३०२००१ (राज)

जो खोटे काम करने वाला पुरुष अनेक प्रकार से अपने बल को उन्नति देकर सबको दु:ख देना चाहे, उसको राजा सब प्रकार से दण्ड दे। तो भी वह अपनी अत्यन्त खोटाइयों को न छोड़े तो उसको मार डाले अथवा नगर से इसको दूर निकाल बन्द रखे।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.४४

अतिथि यज्ञ के होता बनें

महर्षि दयानन्द सरस्वती की उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा आर्य जगत् की एक मात्र ऐसी संस्था है जो सामूहिक सहयोग से ऋषि द्वारा निर्धारित लक्ष्यों की पूर्ति हेतु कृत संकल्प है।

सभा निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर है। निरंतर अबाध गति से ऋषि उद्यान को आकर्षक एवं जन उपयोगी बनाने हेतु नव निर्माण करा रही है, वेद प्रचार पूरे देश में संचालित कर रही है, वेदों का एवं ऋषि ग्रंथों का प्रकाशन निरंतर जारी है।

प्रात: एवं सायं दैनिक यज्ञ- प्रवचन, वेद-पाठ, उपनिषद्, दर्शनादि शास्त्रों की कथा द्वारा वैदिक धर्म का कार्य नियमित रूप से आश्रम में चलता है। ***गुरुकुल***- आर्ष पद्धति से संचालित गुरुकुल में पढ़ रहे ब्रह्मचारी जो साधना एवं समाज सुधार का लक्ष्य लेकर अध्ययनरत हैं उनकी सभी आवश्यकताओं की पूर्ति नि:शुल्क की जाती है। ***अतिथि सेवा***- अतिथियों को यथोचित सुविधा प्रदान करने हेतु सभा पूर्ण रूपेण प्रयासरत है एवं सभी सुविधाएँ आवास, प्रातराश, भोजन की व्यवस्था नि:शुल्क की जाती है। ***गोशाला***- गोशाला में चालीस के लगभग पशु हैं। इससे अधिक का स्थान नहीं है। आश्रमवासियों को गोशाला में उत्पादित दुग्ध का नि:शुल्क वितरण किया जाता है। ***वानप्रस्थ एवं संन्यास आश्रम***- वानप्रस्थ एवं संन्यास आश्रम में रहकर साधनारत वानप्रस्थियों एवं संन्यासियों की सभी प्राथमिक आवश्यकताओं की पूर्ति सभा द्वारा नि:शुल्क की जाती है। स्वाध्याय एवं साधना की व्यवस्था है। ***विशाल पुस्तकालय***- इसमें दुर्लभ ग्रंथों का संग्रह है, सभा द्वारा शोध कर्ता छात्रों को शोध कार्य हेतु ग्रंथ नि:शुल्क प्रदान किए जाते हैं जिनका लाभ स्वाध्यायशील व्यक्ति भी उठा सकते हैं। ***व्यायामशाला***- योग्य शिक्षक द्वारा नगर के युवाओं को ऋषि उद्यान में नि:शुल्क व्यायाम प्रशिक्षण दिया जाता है। सभा द्वारा नियुक्त व्यायाम शिक्षक आसपास के गांवों से भी आर्यवीर दल का प्रशिक्षण शिविरों में प्रदान करते हैं।

ये सभी क्रियाकलाप आपके पावन उदार सहयोग से ही संभव हैं। जैसा कि सर्वविदित है कि सभा का आधार ही आकाशीय दानवृत्ति है। आपको प्रतिदिन अतिथि मिलना संभव नहीं फिर अतिथि यज्ञ कैसे किया जाय इसका उपाय है, कुछ राशि प्रतिदिन अतिथि यज्ञ के नाम से निकाल ली जाये और उसको एकत्र कर अतिथि सत्कार में गुरुकुल में भोजन आदि के सहयोग में दे दी जाय।

सभा के धार्मिक क्रियाकलापों एवं आवासीय स्थल ऋषि उद्यान में उपर्युत पावन क्रियाकलाप लम्बे समय तक अबाध चलते रहें इसके लिए सभा की योजना है कि प्रतिदिन १० रुपये अथवा प्रतिवर्ष ५ हजार की राशि प्रदान करने वाले उदार यशस्वी दानदाताओं का नाम अतिथि यज्ञ के स्थायी सदस्यों में अंकित किया जाता है ऐसे सज्जनों के नाम का परोपकारी में प्रकाशन भी किया जाता है।

अनेक 'अतिथि यज्ञ के होता' सदस्यों का आग्रह है, निश्चित तिथि जन्मदिन, विवाह वर्ष गांठ या विशेष अवसर पर वे अपनी ओर से संस्था में भोजन कराना चाहते हैं। ऐसे महानुभावों से निवेदन है कि वे अतिथि यज्ञ के होता के रूप में एक दिन के भोजन व्यय की राशि पाँच हजार एक सौ रुपये भेजते हुए इच्छित दिन का विवरण सूचित करेंगे तो उसका उल्लेख आश्रम के सूचना पट्ट पर किया जा सकेगा।

यह अल्प राशि आप दैनिक संचय घट में जमा भी कर सकते हैं, वर्ष में लोग अरबों रुपए आग में पटाके फोड़कर जलाते हैं असावधानी से बिजली जलती छोड़ इसे गंवा देते हैं आदि ऐसी छोटी-छोटी असावधानियों को रोक कर हम उसकी बचत राशि इस पावन कृत्य हेतु सभा को वर्ष में आसानी से दे सकते हैं।

सभा शिविरों के आयोजन द्वारा जन सामान्य को ऋषियों की जीवन प्रणाली सिखा रही है। आप इस योजना में स्थायी सदस्य बनकर ऋषि का संकल्प *संसार का उपकार* की पूर्ति में एक स्तम्भ बनकर सभा को सम्बल प्रदान कर सकते हैं।

यदि अपने सामर्थ्य के अनुसार राशि को न्यूनाधिक करना चाहें तो आपकी स्वतन्त्रता है अधिक से अधिक लोग परोपकारिणी सभा से जुड़ सकें, आप ऐसा करके ऋषि दयानन्द के कार्यों को आगे बढ़ाने में सहायक होंगे इसलिए ऐसी राशि निश्चित की है। आप से प्रार्थना है अपना नाम पता और संकल्प लिखकर अवगत करायें और अतिथि यज्ञ के होता बनें। अपनी राशि प्रतिमाह अथवा सुविधानुसार मनीआर्डर/डीडी/चैक द्वारा अथवा स्वयं उपस्थिति होकर कार्यालय में जमा करा सकते हैं। आपका दान ८०जी (आयकर की धारा) के अंतर्गत कर मुक्त होगा।

अत: आपसे निवेदन है कि आप भी अतिथि यज्ञ के होता बनिये। जिन महानुभावों ने हमारा निवेदन स्वीकार कर यज्ञ में अपनी आहुति दी है, उनके नाम यहाँ प्रकाशित किये जा रहे हैं।

अतिथि यज्ञ के होता

(१ से १५ सितम्बर २०१५ तक)

१. श्री एम.एल. गोयल, अजमेर २. श्री आर. एम. सोंधी, जालन्धर, पंजाब ३. श्री नन्द किशोर काबरा, अजमेर ४. श्री वरदीचन्द गुप्त, जयपुर , राज. ५. जैनिथ एन्टरप्राइजेज, नई दिल्ली ६.श्रीमती मेहता माताजी, अजमेर ७. श्री स्वामी देवेन्द्रानन्द, अजमेर ८. श्री विनीत चावला, कनाड़ा ९. श्री राजेश कुमार देह्ली १०. श्री आदित्य बत्रा, नई दिल्ली ११. श्री प्रभु लाल कुमावत, किशनगढ़, अजमेर १२. श्री कृष्णसिंह राठी, झज्जर, हरियाणा १३. श्रीमती शान्ति देवी बालोट, हरियाणा १४. श्री विशाल बालोट, रोहतक, हरियाणा १५. श्री नन्दकिशोर सोनी, अजमेर १६. श्रीमती सरला मेहता, अजमेर १७. श्रीमती शान्ति देवी व श्री राम दत्त गुप्ता, जयपुर, राज.

- परोपकारिणी सभा, अजमेर।

गौभक्तों से निवेदन

ऋषि उद्यान में परमार्थ हेतु गौशाला संचालित है। गौशाला में उत्पादित गौवों के दूध का वितरण सभी गुरुकुलवासियों, संन्यासियों एवं आगन्तुक अतिथियों में निःशुल्क किया जाता है। आप सभी गौ-भक्तों एवं उदारमना दानदाताओं से सभा का निवेदन है कि गौवों को उत्तम चारा मिले इसके लिए जो भी सज्जन चारा दान देना चाहें, उनका स्वागत है। यदि आप दूरस्थ प्रदेश के हैं तो कृपया चारे हेतु अनुमानित राशि सभा को ड्राफ्ट/चेक/नगद भेज सकते हैं। यशस्वी दानदाताओं के नाम परोपकारी पत्रिका में प्रकाशित किए जाएँगे। आपका दान गौवों के संवर्धन में सहायक होगा।

ऋषि उद्यान में संचालित गौशाला के दानदाता

(१ से १५ सितम्बर २०१५ तक)

१. श्री देवमुनि, अजमेर २. श्रीमती उर्मिला उपाध्याय, अजमेर ३. श्री राधेश्याम शर्मा, अजमेर ४. श्री शान्तिस्वरूप टिक्कीवाल, जयपुर, राज. ५. बी.बी. गुप्ता, पंचकुला, हरियाणा ६.श्रीमती स्वास्ति श्रीवास्तव, लखनऊ, उत्तर प्रदेश ७. अरुष, गुडगांव, हरियाणा ८. श्रीमती श्रुति, गुडगांव, हरियाणा ९. श्री वंश गुडगांव, हरियाणा १०. श्री श्याम लाल, अजमेर ११. श्री बलबीर सिंह बत्रा, अजमेर १२. श्रीमती प्रेमलता शर्मा, अजमेर १३. श्री पूरनमल शर्मा, भरतपुर, राज. १४. श्री निर्मल कुमार, अजमेर १५. श्री रमेश मिश्रा, नई दिल्ली १६. श्री बसन्त कुमार विजयवर्गीय, अजमेर १७. श्री कृष्णसिंह राठी, झज्जर, हरियाणा १८. श्री राजेश कुमार, अजमेर १९. श्रीमती कमला देवी व श्री रामजीलाल, अजमेर २०. श्री पुनीत साहनी, अजमेर २१. श्रीमती उषा आर्य व श्री रमेशमुनि, अजमेर २२. श्री स्वामी देवेन्द्रानन्द, अजमेर २३. श्री टी.के.घोष, गुडगांव, हरियाणा २४. श्रीमती विद्या अजमेर २५. श्री लाला भाई, टंकारा २६. श्रीमती प्रेमलता शर्मा, अजमेर २७. श्रीमती सुनीता, जीन्द २८. श्री चन्द्रसेन हरि गिलानी, अजमेर २९. श्री भैरुसिंह कच्छावा, अजमेर।

- परोपकारिणी सभा, अजमेर।

विवाह करके स्त्री-पुरुषों को चाहिये कि जिस-जिस काम से विद्या, अच्छी शिक्षा, बुद्धि, धन, सुहृद्भाव और परोपकार बढ़े उस कर्म का सेवन अवश्य किया करें।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.४

जिसके माता और पिता विद्वान् न हों, उनके सन्तान भी उत्तम नहीं हो सकते।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.९

मनुष्यों को चाहिये कि पुरुषार्थ से विद्या का सम्पादन, विधिपूर्वक अन्न और जल का सेवन, शरीरों को नीरोग और मन को धर्म में निवेश करके सदा सुख की उन्नति करें। **-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.१४**

जिज्ञासा समाधान - ९६

- आचार्य सोमदेव

जिज्ञासा- कृपया निम्न बिन्दुओं पर शंका समाधान करने का कष्ट करें:-

१. काफी समय से यह पढ़ते और सुनते आए हैं कि पौराणिक लोग कहते थे कि वेदों को शंखासुर पाताल में लेकर घुस गए हैं, इसलिए अब शेष बचे १८ पुराणों से ही काम चलाओ। ऐसी स्थिति में स्वामी दयानन्द जी ने जर्मनी से चारों वेदों को मंगवा कर पण्डितों को दिखाया और सब को बताया। इससे पता चलता है कि स्वामी जी के आने, से पहले चारों वेद भारत में उपलब्ध ही नहीं रह गए थे। इसीलिए तो विदेश से मंगवाने पड़े। अर्थात् आर्ष ग्रन्थों और इतिहास आदि में वेदों के नाम चर्चा ही थी और वे संहिताओं के रूप में उपलब्ध नहीं थे। यह हमारी हालत हो चुकी थी। क्या यह बात ठीक है।

२. यदि चारों वेद संहिताएं विदेश से मंगवाए गए तो फिर यह क्यों कहा जाता है कि स्वामी दयानन्द ने २ वर्ष १० महीने में अपने गुरु विरजानन्द जी से चारों वेदों का अध्ययन किया और शंकाओं का समाधान किया। जब वेद मंगवाए ही बाद में हैं तो अपने गुरु जी से कैसे पढ़े? और यदि वेद पहले ही उपलब्ध थे तो मंगवाने की क्या जरूरत थी। इससे यह भी प्रतीत होता है कि स्वामी दयानन्द जी ने भी अपने गुरु जी के पास से शिक्षा पूरी करने के बाद ही चारों वेद पढ़े। गुरु जी के पास तो जो आधे अधूरे उपलब्ध थे वे ही पढ़ पाए। फिर पूरे वेद बाद में पढ़े हैं तो स्वामी जी को पढ़ाने वाले अन्य कौन गुरु मिले जो स्वामी विरजानन्द जी से भी भली प्रकार पढ़ा सकते थे।

३. क्या वर्तमान में अपने देश भारत या अन्यत्र कहीं भी पृथ्वी पर अध्ययन-अध्यापन की ऐसी व्यवस्था है, जहाँ पर चारों वेदों का ज्ञान कराया जाता हो। यदि हाँ तो कहाँ-कहाँ पर ऐसी व्यवस्था है।

४. आर्य समाज के धुंआधार प्रचार से और वेदों का डंका पीटने या वजाने से पौराणिक भी जाग्रत हो गए, तो अब आर्य सामाज के कितने केन्द्र चारों वेद पढ़ा रहे हैं और पौराणिकों के कितने केन्द्र हैं।

५. सन् १८७५ के बाद अर्थात् १४० साल व्यतीत हो जाने के बाद भी विवाहदि संस्कार ९०/९५ प्रतिशत पौराणिक रीति से हो रहे हैं। यदि लग्न पत्रिका आदि की जरूरत पड़े तो वही हाथी की सूण्ड वाले गणेश की छपी मिलती है। क्या आर्य समाज कोई ऐसी योजना बना रहा है कि कम से कम जिला स्तर पर ऐसी पत्रिका या वैदिक कलेण्डर या पुरोहित उपलब्ध हो जाए।

- इन्द्रसिंह, २९ अनाज मण्डी, भिवानी।

समाधान-(क) वेदों के विषय में स्वार्थी लोगों ने जन सामान्य में भ्रान्ति फैला रखी थी। जैसे वेदों को शूद्र और स्त्री पढ़-सुन नहीं सकते । वेदों में केवल कर्मकाण्ड है, वेदों में मानवीय इतिहास है आदि-आदि के साथ यह भी भ्रान्ति फैलाई कि वेदों को शंखासुर राक्षस पाताल में ले गया। यह भ्रान्तियाँ स्वार्थी लोगों के द्वारा फैलाई गई थीं। महर्षि दयानन्द ने इन सभी भ्रान्तियों को दूर किया। महर्षि ने वेद के प्रमाण से ही सिद्ध किया कि वेद के पढ़ने का अधिकार सभी को है, वेद का मुख्य निहितार्थ परमेश्वर है, वेद में किसी भी प्रकार का मानवीय इतिहास नहीं है। और वेद को हम भारतीयों के आलस्य प्रमाद रूपी शंखासुर ने पाताल में पहुँचा दिया। वेद के विषय में यह विशुद्ध स्पष्टीकरण महर्षि दयानन्द का ही था।

अब आपकी बात पर आते हैं, महर्षि दयानन्द ने जर्मन से चारों वेदों को मंगवाया.........। उससे पहले हमारे यहाँ मूल वेद नहीं थे। यह बात अनेक वक्ता, विद्वान् बोलते व लिखते हैं। जब इस बात के वास्तविक तथ्य को देखते हैं तो कुछ और ज्ञात होता है। महर्षि ने जर्मन से वेद मंगवाया वह भी केवल ऋग्वेद, यह बात तो सत्य है किन्तु यह कहना की इससे पहले हमारे यहाँ वेद नहीं थे सर्वथा मिथ्या है। महर्षि के द्वारा जर्मन से मंगवाया हुआ वेद अपने यहाँ उपलब्ध सहिंताओं से मिलान करने के लिए था। अन्यथा वेद तो अपने यहाँ विद्यमान थे ही। आज भी महर्षि दयानन्द के समय वा उनसे पूर्व की पाण्डुलिपियाँ

उपलब्ध होती हैं। महर्षि स्वयं अपने जन्मचरित्र में लिखते हैं- ''और मुझको यजुर्वेद की संहिता का आरम्भ करा के उसमें प्रथम रुद्राध्याय पढ़ाया गया......। इस प्रकार १४ चौदहवें वर्ष की अवस्था के आरम्भ तक यजुर्वेद की संहिता सम्पूर्ण और कुछ अन्य वेदों का भी पाठ पूरा हो गया था।'' दयानन्द ग्रन्थ माला भाग २. पृष्ठ ७६८ महर्षि के इन वचनों से ज्ञात होता है कि वेद अपने यहां पहले से विद्यमान रहे हैं।

दक्षिण के ब्राह्मणों में जो वेद कण्ठस्थ करने की परम्परा आज भी है और महर्षि के समय में वा उनसे पूर्व भी थी। कण्ठ किये हुए वेद तो थे ही। जो वेद कण्ठस्थ करते थे निश्चित रूप से ये उनके पास वेद संहिताएँ रही होंगी। इसलिए यह कहना कि वेद महर्षि ने जर्मन से मंगवाये उससे पहले यहाँ वेद नहीं थे सर्वथा अनुचित है।

(ख) ऊपर हमने देखा कि वेद हमारे पास पहले ही उपलब्ध रहे हैं, यह भ्रान्ति फैलाई गई कि वेद जर्मन में थे भारत में नहीं। महर्षि दयानन्द ने गुरु विरजानन्द से चारों वेद को पढ़ा यह वर्णन कहीं देखने को नहीं मिलता हाँ कुछ वक्ता लोग इस प्रकार की अप्रमाणिक बातें बोलते हैं। महर्षि ने गुरु विरजानन्द से २ वर्ष १० महीने में मुख्य रूप से व्याकरण महाभाष्य पढ़ा था। हाँ जहाँ कहीं व्याकरण में वेद का विषय आया है वहाँ गुरुवर ने वेद मन्त्रों के उद्धरण अवश्य दिये होंगे। इस विषय में डॉ. रामप्रकाश जी द्वारा लिखित 'गुरु विरजानन्द दण्डी जीवन एवं दर्शन' पुस्तक की पंक्तियाँ लिखता हूँ:- ''कुछ लेखक मानते हैं कि दयानन्द ने दण्डी जी से केवल व्याकरण पढ़ा और कुछ नहीं परन्तु यह कैसे सम्भव है कि जिस आर्ष अनार्ष ग्रन्थ निर्णय के लिए पूरा एक दशक (१८५९-१८६८) लगा दिया तथा किसी भी पण्डित से एतद् विषयक चर्चा अथवा शास्त्रार्थ का अवसर हाथ से न जाने दिया, वह चिन्तन वे अढ़ाई साल की लम्बी अवधि में अपनी आशा के केन्द्र बिन्दु दयानन्द से सांझा न करते। वे तो व्याकरण मात्र को मानते ही वेदादि के अध्ययन के लिए थे। अतः संहिता विशेष भले ही न पढ़ाई हो पर यत्र तत्र वेद से उदाहरण देकर व्याकरण समझाना तो स्वभाविक था। स्वामी दयानन्द ने भी गुरु से जितना पढ़ा, उससे कहीं अधिक सीखा। यद्यपि अभी वैदिक साहित्य का सम्पूर्ण ज्ञान करना शेष था परन्तु उन्हें आर्ष - अनार्ष ग्रन्थों के विवेक की सूझ अवश्य प्राप्त हुई।''

इस समस्त कथन से ज्ञात हो रहा है कि महर्षि ने गुरु विरजानन्द जी से चारों वेद संहिताओं का अध्ययन नहीं किया अपितु आंशिक रूपसे कुछ अध्ययन किया और मुख्य रूप से व्याकरण का अध्ययन किया। चारों वेदों का अध्ययन महर्षि ने व्यक्तिगत रूप से अपनी योग्यता के आधार पर स्वयं किया। इस आधार पर हम यह नहीं कह सकते कि गुरु विरजानन्द के समय वेद आधे अधूरे थे, ऊपर इस विषय में लिखा जा चुका है।

(ग) वर्तमान में अपने देश व अन्यत्र चारों वेद पढ़ाने की व्यवस्था है या नहीं इस विषय में मैं नहीं जानता हाँ वर्तमान में आर्य समाज के वरिष्ठ विद्वान् आचार्य श्री सत्यानन्द वेदवागीश चारों वेदों को पढ़ाने का सामर्थ्य रखते हैं। उनसे एक युवा विद्वान् आचार्य सनतकुमार जी ने चारों वेद पढ़े हैं और वे अन्य को पढ़ाने का प्रयास करते हैं। किसी गुरुकुल संस्था आदि की जानकारी मुझे नहीं है। वेद कण्ठस्थ कराने वाली संस्थाएँ तो हैं जो कि प्रायः पौराणिकों की हैं। आपके बिन्दु ४ (घ) का उत्तर भी इसी में आ गया है।

(ङ) इस विषय में आर्य समाज का कुछ प्रयत्न तो रहा है, कहीं-कहीं आर्य समाजों में बिना गणेश की लग्न पत्रिका मन्त्रों से युक्त भी मिलती है। इसके लिए योजना हो सकती है जो कि शीर्षस्थ सभाओं की धर्मार्य सभा का कार्य है।

लग्न पत्रिका को तो आप व्यक्तिगत रूप से भी क्रियान्वित कर सकते हैं। कुछ काम हम अपने स्तर पर भी कर सकते हैं, हमारे द्वारा किये जा सकते हैं। कुछ कार्य सभाएँ ही कर सकती हैं किन्तु सभाओं की आज कथा ही क्या कहें, इनको जो करना था १४० वर्षों में वह न कर कुछ और ही कर रही हैं जो कि आपको व अन्य संवेदनशील आर्यों को पीड़ित करती हैं।

- ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर

संस्था - समाचार

१ से १५ सितम्बर २०१५

१. यज्ञ एवं प्रवचन- महर्षि दयानन्द की उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा द्वारा संचालित ऋषि उद्यान आर्यजगत् के उन स्थलों में से है- जहाँ पूरे वर्ष प्रतिदिन दोनों समय यहाँ का अनुष्ठान अपरिहार्य रूप से किया जाता है, प्रात:काल यज्ञोपरान्त वेद के कुछ मन्त्रों का पाठ तथा महर्षि दयानन्दकृत भाष्य का स्वाध्याय किया जाता है और सायंकाल यज्ञ के बाद महर्षि दयानन्द जी द्वारा रचित ग्रन्थों का स्वाध्याय किया जाता है।

प्रात: कालीन दैनिक यज्ञ, वेदपाठ और वेदस्वाध्याय के बाद प्रवचन में वेद प्रचार यात्रा का अनुभव सुनाते हुए आचार्य **डॉ. धर्मवीर जी** ने बताया कि आज से १०० वर्ष पूर्व आर्य सामाज का सुदूर ग्रामीण क्षेत्रों में बहुत प्रचार होता था, जबकि उस समय आवागमन के अधिक साधन, बिजली, ध्वनि विस्तारक यन्त्र, दूरभाष, चलभाष आदि नहीं थे, किन्तु लोगों में बड़ी श्रद्धा और निष्ठा थी। प्राय: सभी लोग स्वाध्यायशील होते थे, अत: वक्ता को सावधानीपूर्वक अपना व्याख्यान देना पड़ता था। सभी जगह आर्य समाज के बड़े-बड़े भवन बनाये गये। उस जमाने में भवन बनाने के लिये आधुनिक मशीनें नहीं थीं और धन की भी कमी रहती थी तब भी लोगों ने तन, मन, धन लगाकर आज की तुलना में अधिक निर्माण कार्य किया था।

कहीं निराशा होती है तो कहीं उत्साहवर्धक वातावरण भी होता है। जहाँ बालसभा, आर्यकुमार सभा, महिला आर्यसमाजें हैं, वहाँ लोगों में काम करने में उत्साह दिखाई देता है। उन समाजों के कार्यक्रम निराशा से बचाते हैं, अन्य समाजों को प्रेरणा देते हैं। लोग अपने परिवार और मित्रों सहित कार्यक्रमों में आते हैं। बच्चों, युवाओं और महिलाओं को मंच पर बोलने, मंत्रपाठ करने का अवसर देकर उन्हें उत्साहित करते हैं। युवा वर्ग कार्यक्रमों में पत्रक आदि छपवाना, बाँटना, प्रचार करना, यज्ञशाला की सजावट, भोजन व्यवस्था आदि कार्य रुचिपूर्वक करते हैं। नई पीढ़ी को काम करते देखकर प्रसन्नता होती है। वक्ताओं को केवल प्रवचन ही नहीं देना चाहिये बल्कि संवाद की शैली में ही व्याख्यान करना चाहिये जिससे श्रोताओं में स्वाध्याय करने की इच्छा जागृत हो।

प्रात:कालीन सत्संग में **आचार्य श्री सत्यजित् जी** ने बताया कि वेद में राजा के विषय में अनेक मन्त्रों में उपदेश है। मनुष्यों को उसी को अपना राजा चुनना चाहिये जो चारों वेदों का पूर्ण विद्वान् हो। शूरवीर, सहनशील और पूर्ण जितेन्द्रिय हो। पक्षपातरहित, न्यायआचारण करने वाला हो। अपने स्वास्थ्य के अनुकूल ऋतु अनुसार उचित समय पर श्रेष्ठ औषध युक्त मधुर और पुष्टिकारक भोजन करे, जिससे स्वस्थ तथा बलवान हो के राज्य का पालन और शत्रुओं का नाश कर सके। युद्ध में विजयी होने के लिये धनुर्विद्या आदि का निरन्तर अभ्यास करना और जितेन्द्रिय रहना रहना आवश्यक है। अधिक आयु तक स्वस्थ रहने के लिये ब्रह्मचर्य का पालन करे। अन्य मनुष्यों को भी इसी प्रकार युक्त आहार विहार से स्वयं को स्वस्थ रखना और दीर्घायु होना चाहिये। राजा श्रेष्ठ धन वाला हो, धार्मिक सज्जनों का रक्षक और दुष्टों का नाशक हो। राजा अपने प्रजा की शिक्षा, सुरक्षा, रोजगार और सब ओर से उन्नति का ठीक प्रकार प्रबन्ध करे। प्रजा की सुख, शान्ति और समृद्धि से राजा प्रसन्न होवे प्रजा को सब ऐश्वर्य (सुख के साधन) देने के कारण ही राजा को ईश्वर भी कहा जाता है। साधारण मनुष्य विद्वानों से प्रार्थना करें कि वे (विद्वान् लोग) श्रेष्ठ राजा की प्रशंसा करें, जो रक्षा के नये-नये साधनों से राज्य की सब ओर से रक्षा करे, जिससे हम लोग भी उनकी प्रशंसा करें।

दर्शनयोग महाविद्यालय के स्नातक **आचार्य सत्यप्रकाश जी** ने कहा कि संसार में बहुत से बहुमूल्य पदार्थ हैं ये संसार विविध रंगों से रंगा गया है। परन्तु परमेश्वर की सर्वोत्कृष्ट रचना यह हमारा मानव शरीर है। प्रभु दर्शन का अधिकार केवल मनुष्य को प्राप्त होता है, यह मानव शरीर मोक्ष का द्वार है। अविद्या की गांठ इस शरीर में ही खुलती है, अन्य पशु आदि शरीरों में नहीं। महर्षि याज्ञवल्क्य गार्गी से कहते हैं जो इस मनुष्य शरीर को पाकर उस अक्षर ब्रह्म को बिना जाने संसार से चला जाता है वह कृपण है अर्थात् दया का पात्र है। जो इस योनि को पाकर परमेश्वर को जान लेता है, वही ब्राह्मण है उसी का

जीवन सफल है। वेदों के अध्ययन का मुख्य तात्पर्य ईश्वर को जानना है। स्वामी दयानन्द जी के अनुसार जो परमेश्वर को न जानते, न मानते, न ध्यान करते हैं, वे नास्तिक, मन्दमति, दुखसागर में डूबे ही रहते हैं। परमात्मा पूर्ण सुख का आधार है। सांसारिक साधनों में जो सुख है वह क्षणिक है। स्थायी सुख-आनन्द ईश्वर भक्ति से ही मिलता है। शुद्ध ज्ञान, शुद्ध कर्म और शुद्ध उपासना ही मुक्ति अर्थात् आजीवन सुख और शरीर छूटने के बाद भी आनन्द प्राप्ति का साधन है। उपनिषद् में कहा गया है कि ईश्वर बिना कानों के सुनता है, बिना आँखों के देखता है, बिना मुख के बोलता है, बिना पैरों के चलता है, बिना हाथों के कर्म करता है। वेद में बताया है वह ईश्वर हजारों सिर वाला है, हजारों आँखों वाला है, हजारों पैरों वाला है, हजारों हाथों वाला है। ये जो संसार है परमात्मा के एक पाद में है अर्थात् वह इतना बड़ा है कि यह दृश्यमान जगत् उसके बनाये अनंत सृष्टि में बहुत थोड़ा है। ईश्वर की महिमा का सम्पूर्ण वर्णन करने में कोई भी मनुष्य समर्थ नहीं है।

प्रातःकालीन सत्संग में **आचार्य सोमदेव जी** ने बताया कि शास्त्र में कहा है- **अज्ञो वै बालः पिता भवति मन्त्रदः।** जो अज्ञानी है वही बालक है और जो विद्वान् है वही बड़ा है! समाज में प्रायः पांच प्रकार के व्यक्ति होते है--धनवान, बन्धु बान्धव वाले, अधिक आयु वाले, श्रेष्ठ कर्म करने वाले और विद्वान्। महर्षि मनु जी महाराज कहतेहैं कि इनमें सबसे पहले विद्वान् का सम्मान होना चाहिये। उसके बाद क्रमशः श्रेष्ठ कर्म करने वाले, अधिक आयु वाले, बन्धु बान्धव वाले और अन्त में धनवान का सम्मान होना चाहिये। मनुष्य को कभी निराश नहीं होना चाहिये, क्योंकि अज्ञानी मनुष्य के आत्मा में भी सत्य, असत्य को जानने का सामर्थ्य होता है। किन्तु स्वार्थ, हठ, दुराग्रह के कारण उचित, अनुचित, धर्म, अधर्म को समझ नहीं पाता है।

रविवारीय सत्संग में सभा के मन्त्री **श्री ओममुनि जी** ने बताया कि कुसंस्कार हमारे मन में बिना प्रयास किये ही आते हैं लेकिन सुसंस्कार के लिये हमें श्रम करना पड़ता है। जैसे कंटीली झाडियाँ बिना उगाये ही उग जाते हैं और फलों के पौधे, बगीचे लगाने पड़ते हैं। खाद, पानी, निराई, गुडाई माता पिता को प्रयास करके बच्चों को छोटी आयु में ही अच्छी बातें सिखाना चाहिये और बुरी आदतों को बचाना चाहिये। कार्यक्रम में उपस्थित युवाओं को उपदेश दिया कि वे वृद्धों से उनके अनुभव और मार्ग दर्शन का लाभ लेवें जिससे अपने शारीरिक और बौद्धिक बल को धर्म के अनुकूल उचित कार्यों में ही लगायें। स्त्रियों से कहा कि वे घर में परिवार के सदस्यों से मिलजुल कर रहें और दूसरों के बहकावे में न आवें, कुसंग छोड़कर हमेशा सत्संग ही करें।

गुरुकुल माउन्ट आबू के **आचार्य ओमप्रकाश जी** ने वर्तमान में मुसलमानों की बढ़ती हुई जनसंख्या, लव-जिहाद, आतंकवाद पर चिन्ता व्यक्त करते हुए कहा कि हम हिन्दुओं को इसके प्रति जाग्रत होते हुए जहाँ कहीं भी हमें अवसर मिले, जनता को इस विषय की सच्चाई को बताते रहकर आर्यों को भविष्य में आने वाले संकट से बचाना चाहिए।

२. विशेष कार्यक्रम- जन्माष्टमी सम्पन्न - प्रातःकाल के दैनिक यज्ञ में वेदमन्त्रों से विशेष आहुतियाँ दी गई। इस अवसर पर **उपाचार्य सत्येन्द्र जी** बने श्री कृष्ण जी के चरित्र के विषय में बताया कि वे संसार के लिये एक आदर्श महापुरुष थे। महाभारत में उनका इतिहास बहुत अच्छा है। वे महान विद्वान् और ईश्वर भक्त थे। गीता के उपदेश के रूप में पारिवारिक मोह से ग्रस्त अर्जुन को श्रेष्ठ शिक्षा दी। उन्होंने महाभारत युद्ध से पहले दुर्योधन को समझा कर और पाँडवो के लिये पाँच गाँव माँगकर भारी विनाश को रोकने का पूरा प्रयास किया। किन्तु दुर्योधन के हठ और दुराग्रह के काराण युद्ध को रोका नहीं जा सका। युद्ध में अर्जुन के सारथी बनकर धार्मिक मनुष्यों का पक्ष लिया और अधर्मियों का नाश करवाया। यम-नियम का पालन करते हुए गृहस्थ जीवन में विवाह के बारह वर्ष पश्चात् सन्तान उत्पन्न की। यात्रा करते समय संध्योपासना का समय होने पर रथ रोककर ईश्वर का ध्यान करने के पश्चात् ही आगे बढ़ते थे। अपने जन्म से लेकर मृत्यु पर्यन्त उन्होंने कोई अनुचित कार्य नहीं किया। हमारे देश के बहुसंख्यक वर्ग (हिन्दुओं) में श्री कृष्ण जी के विषय में बहुत अधिक अज्ञानता है, जिसके कारण कृष्ण लीला और भागवतपुराण का पाठ आदि होता है, जिसे देख-सुन कर विरोधी मत वाले उनके वास्तविक गुण, कर्म, स्वभाव, चरित्र को नहीं जान पाते और उनका उपहास करते हैं। अतः हमें उनके अच्छे स्वरूप को लोगों के सामने लाने

का यत्न करना चाहिये।

सायंकालीन दैनिक यज्ञ के पश्चात् व्याख्यान में **उपाचार्य सत्येन्द्र जी** आर्योद्देश्यरत्नमाला पुस्तक पर चर्चा करते हुए वर्ण व्यवस्था के विषय में बताया कि ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्रादि जन्म से मानना शास्त्र संगत नहीं है, किन्तु कर्म से ही जानना और मानना चाहिये। जन्म से जाति व्यवस्था मानने के कारण आज हमारे देश में सामाजिक व्यवस्था बहुत बिगड़ गयी है। आरक्षण आदि की समस्यायें जन्मना जाति प्रथा के कारण हैं। ब्रह्म अर्थात् ईश्वर को जानने वाले, अनेक प्रकार के यज्ञ करने-कराने वाले, विद्या धर्म आदि परोपकार का प्रचार करने वाले, तपस्या पूर्वक जीवन जीने वाले को ब्राह्मण कहते हैं। न्यायपूर्वक सब धार्मिक सज्जनों की रक्षा और दुष्टों का तिरस्कार करने वाले शूरवीर पुरुष क्षत्रिय कहलाते हैं। कृषि, पशुपालन, व्यवसाय, व्यापार और उद्योग आदि से समाज का पालन पोषण करने वाले वैश्य हैं। इन तीनों वर्णों की अपने शारीरिक श्रम से यथावत् सेवा करने वाले शुद्र अर्थात् सेवक हैं। इसी प्रकार वर्णाश्रम व्यवस्था श्रम अर्थात् मेहनत पर आधारित व्यवस्था है, चाहे वह शारीरिक श्रम हो या बौद्धिक श्रम।

रविवार को सायंकालीन यज्ञ का पश्चात् गुरुकुल के ब्रह्मचारियों को प्रवचन उपदेश करने का अभ्यास कराया जाता है, जिसमें ब्र. काव्यप्रकाश जी, ब्र. पुरुषोत्तम, ब्र. प्रांजल, ब्र. देवेन्द्र, ब्र. शिवनाथ जी ने अपने अपने वक्तव्य दिये।

३. डॉ. धर्मवीर जी का प्रचार कार्यक्रम- सम्पन्न कार्यक्रम - (क) १ से ६ सितम्बर- आर्यसमाज शामली, उ.प्र. में वेद पर उद्‌बोधन दिए।

(ख) ११ से १३ सितम्बर- भिण्ड, मध्य प्रदेश में यज्ञ व सत्संग किया।

(ग) २५ से २७ सितम्बर- आर्यसमाज पीपाड़, जोधपुर में उद्‌बोधन प्रदान किया।

(घ) २८ से ३० सितम्बर- गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार में छात्रों के साथ संवाद किया।

४. आचार्य सोमदेव जी का प्रचार कार्यक्रम- सम्पन्न कार्यक्रम (क) १५ अगस्त- मलारता चौक, सवाई माधोपुर में स्वतन्त्रता दिवस समारोह पर व्याख्यान दिया।

(ख) १६ अगस्त- भगत फूलसिंह जी के गाँव माहरा, सोनीपत में आर्यसमाल के वार्षिकोत्सव पर मुख्य वक्ता के रूप में सम्बोधन किया।

(ग) २१ से २३ अगस्त- आर्यसमाज गोरेगाँव, मुम्बई में श्रावणी पर्व पर व्याख्यान दिया।

(घ) २३ अगस्त- काकवाड़ी आर्यसमाज मुम्बई में साप्ताहिक सत्संग किया।

(च) २४ अगस्त- सुरेश भाई- ठाणे, महाराष्ट्र में पारिवारिक सत्संग किया।

(छ) २५ से २६ अगस्त- श्री रामकुमार जी मानधना, मुम्बई में पारिवारिक सत्संग किया।

(झ) २७ अगस्त से २ सितम्बर- आर्यसमाज लार, देवरिया, उ.प्र. में उद्‌बोधन दिया।

(ङ) ३ से ६ सितम्बर- आर्यसमाज आदर्शनगर, लखनऊ, उ.प्र. में श्रावणी पर्व पर मुख्य वक्ता के रूप में प्रवचन किया।

(त) २७ सितम्बर- आर्यसमाज बीकानेर, रेवाड़ी में वार्षिकोत्सव पर मुख्य वक्ता के रूप में व्याख्यान।

५. आचार्य कर्मवीर का प्रचार कार्यक्रम- सम्पन्न कार्यक्रम- (क) २२ अगस्त- अहमदनगर में पुंसवन संस्कार कराया।

(ख) २३ अगस्त- पॉलेटेक्निक कॉलेज, अहमदनगर में बच्चों को उद्‌बोधन दिया।

(ग) २४ अगस्त- १९ सिन्धी बच्चों को सामूहिक यज्ञोपवीत ग्रहण करवाया।

(घ) १७ सितम्बर- आर्यसमाज मॉडल टाउन, जालन्धर में उद्‌बोधन प्रदान किया।

आगामी कार्यक्रम- (क) २ से ४ अक्टूबर- जमानी आश्रम, इटारसी में यज्ञ करेंगे।

(ख) ७ से ११ अक्टूबर- आर्यसमाज मॉडल टाउन, हिसार, हरियाणा में उपदेश प्रदान करेंगे।

(ग) १० से ११ अक्टूबर- आर्यसमाज कूकावी, सहारनपुर, उ.प्र. के वार्षिकोत्सव में प्रवचन करेंगे।

(घ) १२ से १८ अक्टूबर- आर्यसमाज सैक्टर-१५, सोनीपत में प्रवचन प्रदान करेंगे।

(ङ) २४ अक्टूबर- आर्यसमाज कानोदा, बहादुरगढ़ में सवामन घी से यज्ञ करायेंगे।

स्तुता मया वरदा वेदमाता-१९

समानी प्रपा सहवोऽन्नभाग:

घर में भोजन सब को आवश्यकता और स्वास्थ्य के अनुकूल मिलना चाहिए। घर में सौमनस्य का उपाय है भोजन में समानता। वास्तव में सुविधा व असुविधाओं को सम्यक् विभाजन तथा सम्यक् वितरण सुख-शान्ति का आधार है। साथ-साथ भोजन करने का बड़ा महत्त्व है, साथ-साथ भोजन करने से प्रसन्नता बढ़ती है, स्वास्थ्य का लाभ होता है। साथ भोजन करने से सबको समान भोजन मिलता है। जहाँ पर अकेले-अकेले भोजन किया जाता है, वहाँ शंका रहती है, स्वार्थ रहता है। परिवार में ही नहीं, समाज में भी सहभोज का आयोजन किया जाता है, इन आयोजनों को प्रीतिभोज भी कहते हैं। ये समाज में सहयोग और प्रेम बढ़ाने के साधन होते हैं।

घर में जो भी बनाया जाये, उसका कम है तो समान वितरण हो और पर्याप्त है तो यथेच्छ वितरण करना उचित होता है। भोजन में मनु महाराज ने खाने के क्रम में अतिथि, रोगी, बच्चे, गर्भिणी को प्रथम खिलाने का विधान किया गया है। भोजन का विधान करते हुए मनु ने गृहस्थ के लिये दो प्रकार से भोजन करने के लिये कहा है। गृहस्थ भुक्त शेष खा सकता है या हुत शेष खा सकता है। भुक्त शेष का अर्थ है- अतिथि को भोजन कराके भोजन करना तथा हुत शेष का अर्थ है यज्ञ में आहुती देने के पश्चात् गृहस्थ भोजन का अधिकारी होता है। भोजन की यह व्यवस्था बड़ी मनोवैज्ञानिक है। मनुष्य अकेला होता है तो भोजन व्यवस्थित नहीं कर पाता है। विशेष रूप से हम घरों में देखते हैं गृहणियाँ जब पति-बच्चे घर में होते हैं तो भोजन यथावत् बनाती हैं और यदि वे अकेली रह जाती हैं, तो वे भोजन बनाने में आलस्य करके जैसे-तैसे बनाकर खा लेती हैं। इसी कारण शास्त्र ने मनुष्य को उचित भोजन करने के लिये एक व्यवस्था बना दी, गृहस्थ हुत शेष खाये या भुक्त शेष खाये।

हुत शेष या भुक्त शेष खाने में जो रहस्य है, यदि वह समझ में आ जावे तो मनुष्य की कभी अतिथि को खिलाने में संकोच नहीं करेगा। किसी गृहस्थ के घर पर जब अतिथि आता है तो मनुष्य चाहे कितना भी निर्धन या गरीब क्यों न हो, वह यथाशक्ति यथा सम्भव अतिथि को अच्छा भोजन कराना चाहता है, अत: अतिथि घर में आता है तो विशेष भोजन बनाया ही जाता है। इसी प्रकार मनुष्य मन्दिर के लिये कुछ बनाकर ले जाता है तब अच्छा बना कर ले जाना चाहता है। यज्ञ के लिए बनाना चाहता है तो अच्छा ही बनाया जाता है। इसी कारण हमारे ऋषियों ने हमारे लिये अपने लिये पकाने और अकेले अपने आप खाने का निषेध किया है। गीता में श्री कृष्ण ने कहा है जो केवल अपने लिये पकाता है और आप अकेले ही खाता है, वह पाप ही पकाता है और पाप ही खाता है। इसके विपरीत यज्ञ के लिये पकाता है और यज्ञ शेष खाता है, वह पुण्य ही पकाता है और पुण्य ही खाता है। हम हवन के लिये बनाते हैं, बनाते तो बहुत हैं, थोड़ा-सा देर यज्ञ में डालते हैं, शेष सबको वितरित करते हैं, प्रसाद के रूप में बांटते हैं। बनाया यज्ञ के निमित्त है, इसलिये इसे यज्ञ शेष कहते हैं। भगवान के निमित्त बनाते हैं, अत: बांटते समय उसे प्रसाद कहते हैं। मूल रूप से प्रसाद संस्कृत का शब्द है, इसका अर्थ प्रसन्नता है। प्रसन्नता से किया गया कार्य प्रसाद है।

हम समझते हैं अतिथि को भोजन कराने से हमारी हानि होती है। यज्ञ करने से व्यय होता है परन्तु व्यवहार यह बताता है कि इस नियम का पालन करने वाले सदा सुखी और प्रसन्न रहते हैं। जो इसको अन्यथा समझते हैं, उनको तो दु:ख भोगना ही पड़ता है। मनुष्य विवशता में बाँटता नहीं है, उस समय उसकी वृत्ति समेटने की रहती है। जब मनुष्य प्रसन्न होता है तभी उदार भी होता है। इसीलिये आम भाषा में कहते हैं- खुले हाथों से बाँटना, अर्थात् खुले हाथों से वही बाँट सकता है जिसका दिल खुला हो, हृदय उदार हो। खिलाने के सुख का अनुभव करना दुनिया से भूख के दु:ख को दूर करने का एक मात्र उपाय है और परिवार में साथ बैठकर खाना प्रसन्नता और सुख का आधार है।

क्रमश: ....

आर्यजगत् के समाचार

१. स्वामी श्रद्धानन्द जी का आगमन- आर्य जनता को यह जानकर हर्ष होगा कि आर्यसमाज के ९७ वर्षीय श्रमणशील संन्यासी स्वामी श्रद्धानन्द जी हरिशचन्द्र गुरुजी महाराष्ट्र वाले ऋषि मेला पर पधार रहे हैं। आपने अपने आने की सूचना सभा को दे दी है।

सदूर दक्षिण से आंध्र, कर्नाटक से नेपाल की सीमा से सटे उ.प्र. के कई उत्साही आर्य युवक अच्छी संख्या में ऋषि मेला में भाग लेंगे। इस अवसर पर सभा द्वारा प्रकाशित कई महत्त्वपूर्ण ग्रन्थों का भी विमोचन होगा।

२. शिविर सम्पन्न- परोपकारिणी सभा द्वारा संचालित महर्षि दयानन्द उद्यान (गुरुकुल आश्रम) जमानी, इटारसी, जिला होशंगाबाद (म.प्र.) में ५ अगस्त से १६ अगस्त २०१५ तक पतञ्जलि योग साधना शिविर स्वामी अमृतानन्द जी के सान्निध्य में सम्पन्न हुआ, शिविर का संयोजन सत्यप्रिय जी द्वारा किया गया, जिसमें (म.प्र., बिहार, उडिशा, महा., उ.प्र.) से आये शिविरार्थियों ने भाग लिया। स्वामी अमृतानन्द जी द्वारा योग साधना करते हुए ईश्वर की अनुभूति जीवन में प्रत्येक क्षण कैसे बनाये रखें, इन सब विषयों पर विशेष रूप से प्रकाश डाला गया एवं ईश्वर जीव व प्रकृति को पृथक्-पृथक् समझते हुए आत्म तत्व द्वारा परम तत्त्व को कैसे प्राप्त करके सब दु:खों से छुटकारा पावें बताया गया।

३. भजन सन्ध्या- दिव्य वैदिक सत्संग मण्डल मानसरोवर के पाँचवें वार्षिक उत्सव के उपलक्ष्य में रविवार दिनांक ३०.८.२०१५ को ५६ सेक्टर के चित्रकूट पार्क में भजन सन्ध्या का आयोजन हुआ।

४. प्रवचन व शंका समाधान- आर्य सामाज अडाजण सूरत गजरात ने दनिांक ०९-०८-२०१५ रविवार को, सूरत में, स्वामी विवेकानन्द परिव्राजकजी का ''कर्मफल सिद्धांत'' विषय पर प्रवचन और शंका समाधान कार्यक्रम का आयोजन किया था। कार्यक्रम में अनेक प्रबुद्ध लोगों ने उपस्थित रहकर लाभ लिया और अपने जीवन के उत्थान के लिए संकल्प लिए।

५. कन्या उपनयन संस्कार सम्पन्न- वैदिक वीरांगना दल द्वारा १०८ कन्याओं का उपनयन संसकर आयोजित किया गया। कन्याओं ने वेदमंत्रों के साथयज्ञ करते हुए जनेऊ धारण किए। दल की राष्ट्रीय अध्यक्ष अनामिका शर्मा नेबताया कि राजस्थान के विभिन्न जिला की बालिकांए व महिलाएँ उक्त समारोह में शामिल हुई। इस अवसर पर वैदिक वीरांगना दल की संरक्षक श्रीमती दुर्गा शर्मा ने अपने संबोधन में कहा कि दुनिया उन लोगों कासाथ देती है, जो अहसान मानना जानते हैं। किसी ने हमारे लिए कुछ किया और हमने उसके प्रति कृतज्ञता दिखाई तो करनेवाले का उत्साह बढ़ता है। एहसान मानना जिनकी आदत बन जाती है, उनके दोस्तों की संख्या लगातार बढ़ती है।

६. यज्ञ का आयोजन- यज्ञ समिति झज्जर के तत्वावधान में मौ. भट्टी गेट में यज्ञ-भजन-प्रवचन का कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसमें यज्ञ ब्रह्मा आचार्य बालेश्वर, यजमान राव रतिराम एवं श्रीमती मामकौर देवी रहे। कार्यक्रम की अध्यक्षता वैदिक सत्संग मण्डल समिति के प्रधान पं. रमेशचन्द्र कौशिक ने की और मंच संचालन कार्यक्रम के संयोजक श्री सुभाष आर्य ने की।

७. डायरी-२०१६- आर्य प्रकाशन हर वर्ष आर्य दैनन्दिनी का प्रकाशन करता है तथा उसमें संन्यासी, विद्वान्, विदुषी, भजनोपदेशक तथा गुरुकुलों के नाम दूरभाष नम्बर सहित प्रकाशित करता है। अत: आपसे निवेदन है कि आप अपने नाम के साथ दूरभाष व पता भेजे। सम्पर्क- आर्यप्रकाशन, ८१४, कुण्डेवालान, अजमेरी गेट, दिल्ली दूर.- ०९८६८२४४९५८, ई-मेल- aryaprakashan@gmail.com

वैवाहिक

८. वर चाहिये- आर्यसमाजी परिवार, संस्कारित जन्म १३ अक्टूबर १९८८, कद- ५ फूट ३ इंच, गौर वर्ण, शिक्षा-एम.ए., बी.एड., प्राईवेट स्कूल में अध्यापक युवती हेतु आर्यसमाजी परिवार का संस्कारित युवक चाहिए। **सम्पर्क-०७७३७६६१७३०**

चुनाव समाचार

९. आर्यसमाज डी-ब्लॉक, शास्त्री नगर, मेरठ के चुनाव में **प्रधान**- श्री सत्यपालसिंह आर्य, **मन्त्री**- श्री मनवीरसिंह, **कोषाध्यक्ष**- श्री बी. बाबू को चुना गया।

१०. आर्यसमाज मन्दिर सैक्टर-६, करनाल, हरि. के चुनाव में **प्रधान**- आर्य श्री ओ.पी. सचदेवा, **मन्त्री**- आर्य श्री श्यामलाल रोहिला, **कोषाध्यक्ष**- आर्य श्री महेश कुमार भाटिया को चुना गया।

शोक समाचार

११. माता सुमित्रा देवी देवी आर्य दिवंगत- प्रिय परिवार की स्नेहमयी माता श्रीमती सुमित्रा देवी आर्या (८४ वर्ष) धर्मपत्नी स्व. श्री देवप्रिय आर्य सिद्धान्तशास्त्री, सोनीपत का निधन दिनांक ३० अगस्त २०१५ को हो गया। उनकी अन्त्येष्टि गुड़गाँव में की गई तथा प्रार्थना सभा ०२ सितम्बर २०१५ को आर्यसमाज सेक्टर १४ में लगभग ४०० लोगों की उपस्थिति में सम्पन्न हुई। पं. फूलचन्द शर्मा भिवानी के प्रतिष्ठि आर्य परिवार से सम्बन्धित माता जी अत्यन्त सरल, स्वाधायशील, पूर्णरूप से वैदिक धर्म को समर्पित आर्य महिला थी। वह अपने पीछे ९ पुत्र-पुत्रियों का विशाल प्रिय परिवार छोड़ गयी हैं। जो भारत एवं विश्व के कई स्थानों पर वैदिक धर्म की परम्परा को आगे बढ़ा रहा है। मृत्यु से एक सप्ताह पूर्व माता जी का ८५वाँ जन्मदिन परिवार के सदस्यों ने मिलजुल कर मनाया था। इस अवसर पर प्रिय परिवार की ओर से एक ट्रस्ट 'प्रिय परिवार फाउंडेशन' की स्थापना की गई। यह ट्रस्ट वैदिक धर्म के प्रचारार्थ कई माध्यमों से काम करेगा। इसी अवसर पर माता जी द्वारा संग्रहीत भजनों की पुस्तिका 'मेरे प्रिय गीत' का विमोचन भी माताजी के हाथों किया गया। यह पुस्तिका प्रार्थना सभा के दिन सभी उपस्थित व्यक्तियों को प्रेरणा रूप में वितरित की गई। मेरे प्रिय गीत पुस्तिका परिवार के सदस्यों से प्राप्त की जा सकती है।

महर्षि दयानन्द आर्ष गुरुकुल के
आचार्य श्री सत्यजित् जी के साथ अध्यापक एवं ब्रह्मचारी गण

आचार्य श्री सत्यजित् जी योगदर्शन की कक्षा लेते हुए

आर जे/ए जे/80/2015-2017 तक प्रेषण : ३० सितम्बर, २०१५ ३९५१/५९

स्वतन्त्रता के पक्षधरों से निवदेन

प्रेषक:
परोपकारिणी सभा
दयानन्द आश्रम, केसरगंज, अजमेर
(राजस्थान) - ३०५००१

सेवा में,